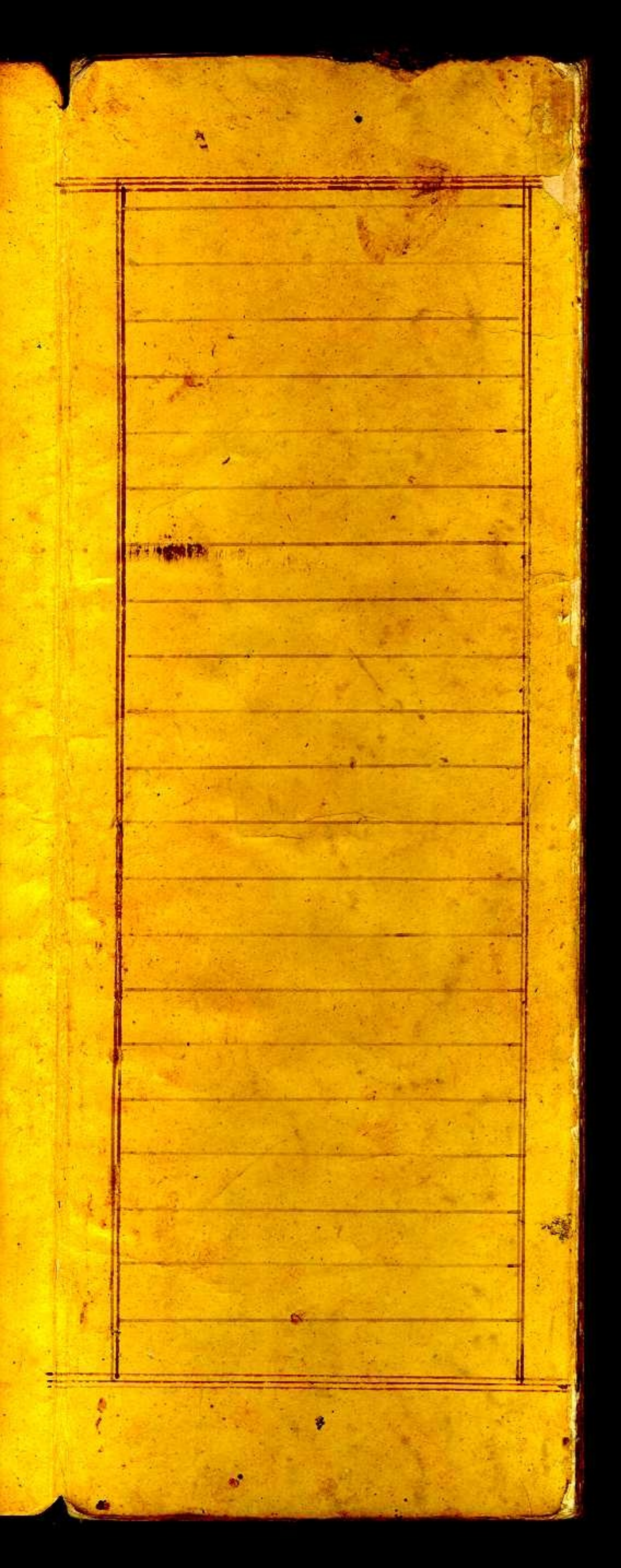


425 →
astomätr. kō
nūtele villi

425 →
aslamätrkä
hätäli vidi

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
श्रीलला १.२८



ॐ नमः श्री महागणेशाय न
 मः ॥ श्रीगुरुवाङ्मया नमः ॥
 श्रीग्रीष्मकृत्तिकासिद्धिलक्ष्मी
 हिनृत्तयन्त्रमहादेववसिष्ठ
 यन्त्रा नमः ॥ १ ॥ अथ हस्त
 नायकमसिद्धिविधानमिति
 कर्मविधिलिख्यते ॥ २ ॥
 लखनहाय ॥ दुकारं वायुवी
 जंयादि ॥ यत ॥ श्रीगुरुवन्द
 नयादि ॥ सिद्धय ॥ वीरग्वी
 मयादि ॥ अदत्त ॥ अदत्त
 यायादि ॥ अजमका ॥ यज्ञाय
 वीयादि ॥ स्नान ॥ नानादृश
 वयादि ॥ ३ ॥ यतवायन
 वाय ॥ वलियात ॥ तय ॥ वलि
 दकास्तंताजातय ॥ अर्घ्यपा
 र्ग्यतात ॥ धनजीयक ॥ ४ ॥

अथ दवावर्तनकावयत ॥ शि
 तहनायम ॥ अथादि ॥ सुथा
 र्ग्य ॥ वाक् ॥ कलिकलसकृता

कथादि ॥ ॐ नमः श्री महामा
 र्गलुके ववायन ॥ ५ ॥
 युवनमस्काव ॥ ॐ नमः श्री
 लायादि ॥ युववकायादि ॥ य
 वमयुव्या नमः ॥ यवमयीयु
 व्या नमः ॥ यवमावायुव्या
 नमः ॥ ६ ॥ वलिय ॥ यवमायना
 यनमः ॥ यवक ॥ कर्मायनाय
 नमः ॥ अतवत ॥ ॐ नमः श्री
 यरुट ॥ ॐ नमः श्री रुटवजय
 अत्रस्वाहा ॥ ॐ नमः श्री वलमका
 लकलमवलकी रुटस्वाहा
 ॥ ७ ॥ न्यामः ॥ ॐ नमः श्री सकलग
 कयमथनिशुभायरुट ॥ ८ ॥
 कवणाधन ॥ ॐ नमः श्री यवमह
 सिनीशुभायनमः ॥ ॐ नमः श्री
 निर्वाणमार्गदवीरुकायन
 मः ॥ ॐ नमः श्री विषमायवयम
 मनिमध्रमायवायट ॥ ॐ नमः श्री
 सकलद्विताविष्काणदल
 निशुनामिकायनमः ॥ ॐ नमः श्री

सर्वोपदाभूषितत्रलिकनिष्ठा
यनमशांजुं सकलगुरुय
मथनीदवीअमुायरुट्॥ ॐ
तिकर्तव्यामश॥ ६७८॥ अंजुं न
मः सर्वसिद्धियागिनीयाडुर्ध्व
वकुनाथपादुकां॥ अंजुं न
मः सर्वसिद्धिमाहृथापूर्वव
कुनाथपादुकां॥ अंजुं नमा
निष्ठादितामन्दनान्द्रितायेद
क्षिणवकुनाथपादुकां॥ अंजुं
अं सकलकूलवकुनाथिका
येठरुववकुनाथपादुकां॥
अंजुं रुगतव्येवउकायालि
नोयश्चिमवकुनाथपादुकां॥
अंजुं नमः सर्वसिद्धियागि
नीयाडुर्ध्ववकुनाथपादुकां॥
ॐ तिवक्तुं न्यामश॥ ६७९॥ अंजुं
यवमहंसिनीसर्वरुगाद्दद
यायनमशांजुं निर्वीणमा
र्मदवीणिब्रह्मस्वाहा॥ अंजुं
विषमाप्रवयसमनीअनादि

वाधनिस्वार्थो बोधः ॥ नं गच्छं स
 कलद्वि ताविष्टु केंगदलः
 स्वतनु कवचायकं ॥ नं गच्छं स
 द्वायदाभूधित वलि अलक
 गकथ नरुदयाय बोधः ॥ नं
 असकल गच्छ मथनी अस्त्राय
 रुट् ॥ ॐ ति अ न न्या स ॥ ॐ ॥
 अथ वती नि न्या स या य ॥ ॐ ॥

अथ जलपाठयूजा ॥ जलपाठ
सनायनमः ॥ ॐ जं शुं दौं पीं
लपाठरुद्राविकायपालं रुद्रा
॥ नवाक्षत्रीमनुनयूजा
॥ शुं द दयायद्यादि ॥ आवाह
नादि ॥ रक्षन्मूर्त्ति ॥ गायत्री ॥
याकली ॥ ॐ जं शुं दौं पीं सिद्धि
क्षीविद्वत् नवव्यधिकधीमः
हन्नालक्षी ॥ यवादयात ॥
॥ अथ पाठयूजा ॥ अथ पा
सनायनमः ॥ ॐ जं शुं दौं पीं
जिह्वा आनन्दरुद्रवायवा

अकंशायादुकां॥अविष्णुहादि
 साकिन्नादिगतिमदकंशाया
 दुकां॥अकट्टिकादियुगत्रय
 कंशायादुकां॥अशुकलादिय
 अकंशायादुकां॥अञ्जुदित
 दुकंशायादुकां॥अरुक्कय
 कंषदं अरुक्कय अरुक्कय
 दयकात्रमयाश्चार्त्तं अष्टाविंश
 यदकर्म॥मूलनगियाअलि
 शांशांशां॥॥अमालिन्यादि
 बालुमुदणदलस्मितश्याया
 दुकां॥अमनानुगादि
 बादणदलस्मितश्यायादुकां॥
 असूर्यसामानिचिह्नस्मित
 श्यायादुकां॥अवकात्यादिअनि
 तोससहितअरुक्कयस्मितश्या
 यादुकां॥अगगलानन्दादिअ
 रुक्कयस्मितश्यायादुकां॥असु
 रानन्दादिबाणयस्मित
 श्यायादुकां॥अशुकलादिवाक्
 बाणयस्मितश्यायादुकां॥अ

वृथिद्यादिअरुक्कय अरुक्कय
 स्मितश्यायादुकां॥अशुगदिय
 रुक्काणस्मितश्यायादुकां॥अञ्जु
 दितलाकयालश्यायादुकां॥अ
 रुक्कादिअरुक्कय अरुक्कयः
 यादुकां॥अवनमनानश्यायादु
 कां॥असमूहश्यायादुकां॥अक
 वलश्यायादुकां॥अकालाथेया
 दुकां॥अमरश्यायादुकां॥अचिदि
 श्याथेयादुकां॥अमरश्यायाअलि
 मूलन॥शांशांशां॥आवाहनादि
 ॥थानि मूर्द्धादणथत्
 ॥इति कर्मवक्यवृत्ता


 अथ द्वापरायनमः॥अशांशां
 वृद्धखण्डमार्त्तखण्डम
 खण्डपीठिखण्डारुहादि
 थेयादुकां॥वलि॥आवाहना
 दि॥खिखण्डामूर्द्धादणथत्
 यं वयं तापनायनमः॥अशांशां
 आनन्दगाकिरेववानन्दवी

वाधिय तथ मुं पी पधि ममूल
 स्तन रुदा विनु काय पाद कां
 जमुं आन न गकि रे ववान
 न मुं पी महा विद्या वा ऊं श्रीः
 मुं पी पधि ममूल स्तन रुदा
 वि काये पाद कां राज मुं मुं
 आन न गकि रे ववान
 न न वी वाधिय तथ मुं
 मुं पी पधि ममूल स्तन
 रुदा व क पी पा द कां
 वृज या मि ॥ ध्व तं नं वलि ॥
 हां रु द या य न म ॥ आ दि ॥ आ
 वा रु ना दि ॥ या नि मु डां ॥
 ॥ ति य धि म थ उ लि ॥

जम हि वा स ना य न म ॥ ज उं जी
 पी डां मुं पी जी उं पी ज य रु मु
 व मुं मुं श्री द वा ये पाद कां
 ॥ ३ ॥ वलि ॥ ध्व तं नं वलि ॥
 ज थ ता स ना य न म ॥ ज मुं मुं

कुं पी नि खा स न न म हा रे व वा
 य पा द कां ॥ जं जं कुं व न न
 म हा रे व वा य पी पा द कां ॥ ज उं
 कुं मं म हा का ला य स र्व ग रु य म
 र्द ना य म हा रे व वा य पी पा द
 कां ॥ ध्व तं नं वलि ॥ ध्व तं नं वलि ॥

ज वृ वा स ना य न म ॥ ज उं जी वा
 ज य द मुं ड य व (उ वि य म र्द
 नी कुं कुं स दा व द २ त्वां मीं जं स
 मृ ख रु व न म ॥ पी पा द कां ॥ व
 लि ॥ वलि ध्व तं नं वलि ॥

ज गुं रु नि गु म् स ना य न म ॥ ज
 उं जी वा ज य द मुं ड य व पी
 वि य म र्द नी कुं कुं स दा व द
 २ त्वां मीं जं स ॥ मृ ख रु व न म ॥ पा
 द कां ॥ वलि ॥ ध्व तं नं वलि ॥
 आ वा रु ना दि ॥ या नि मु डां
 द न थ त् ॥ वि नु रि य ॥ ३ ॥

मृधुल वयं तुलिका वयं त॥
 न क वलि सं द्या या वलि सं तयो॥
 शुं आक्ष वग कथं न म४ त्या दिरु
 ॥ शुं वं वृद्ध य ता स ता य न म४ ॥
 मृधु ध्यान ॥ शुं महा तं आ मयी
 लक्ष्मी वस्मि कश्च य त प रार य
 ३ व कुा द ग रु जा वि य ३ न य
 ने र्य ता ॥ १ ॥ (ध त व र्णु म हा द
 वी म हा य ता य वि सि ता र मा वृ
 का र्क क म (ध रु सि द्वि या गि नि
 यु जि ता ॥ २ ॥ दा वि ता स्या न ल लि
 हा ना शाला सु र्क क तं ज ग त र द
 क्क मा क्क य था (ग न वा ल थ क्क ल
 य र्व ता न ॥ ३ ॥ क वि द्वि ध क वि
 क्क य क्क वि र्क व त व ला त र क
 वि र्क उ क्क वि र्क य र्क त र्वे क्क
 य र्क र्क त ॥ ४ ॥ (ग ना या रु व र्क
 र्क का ड व (ग रु वि र्क वि ता र या
 र्क क र्क ध वा द वी व र्क दारु य
 या लि नी ॥ ५ ॥ म र्क र्क र्क र्क र्क र्क
 र्क र्क ला क्क र्क र्क का र्क र्क र्क र्क

[illegible]

कायाव॥७॥ सर्वयीणययीण
 निद्रावायदावमवत्ररक्षणा
 यक्षसंदाहाः सर्वदिशाग
 संस्तुताः॥१॥ यागिनीयागवी
 रंदाः सर्वतुल्यमागताः॥२॥
 यक्षमहावक्त्रं पीता धाववदा
 मम॥३॥ यक्षकाः सासनद्वी
 पुत्र्यादाश्च नवताः सर्वसिः
 द्वियसादामद्वीतर्वावत्
 सदा॥४॥ वीराणां यागिनीनां
 अद्विद्वतिमहीतलं तदा
 तलवर्लिद्वी समयाद्याल
 मलक॥५॥ प्रतिस्मृतिमनः
 दृष्टिमां समदास्ति जीवितं
 निद्रकयनुदृष्टानां यागिनी
 गणसंकलं॥६॥ कृदुकादि
 कृद्व्यातिदुर्निर्मितं दुराः
 यितानं निद्रकयनुदृष्टानां
 यागिनीगणसंकलं॥७॥ ॐ
 कावादिमृथरुताः मृथमात्रा
 यकीर्तिगारडावधीक्षदुसैः

धृय॥दिश्रगन्धसमाख्यादि॥दी
या॥सूयकाणमहात्यादि॥नेव
या॥अन्नमहात्रयंख्यादि॥रुल
यश्चतान्मूलधृयदीयनेवशा

[illegible]

॥ उद्धृता ॥ आणापुत्रिणि ॥ याणा
 निका ॥ उद्धृता ॥ ॥ इयिनिः
 मामश्यामालका ॥ तवश्यामाल
 का ॥ कमुया ॥ अखण्डकलणान्नाथ
 सादि ॥ उक्तावामनमावृता अष्ट
 यणमसंस्मृतारसर्वथापेयवस्तु
 र्भूवन्दुर्वकलध्वरी ॥ हंसीयु
 र्वा ॥ त्वमसि ॥ यथावानस्यादि ॥
 अरुगन्धादि ॥ ॥ पार्थना ॥ न
 मस्तु ॥ दक्षिणा ॥ दवतर्था ॥
 यीतश्रुतायादि ॥ ॥



अथवयंयुजा ॥ लखनं वृषयल
 ॥ यतसिधवअरुतस्वानन्दया
 न्यासः ॥ कर्लिकाय अम्नायरु
 द् ॥ कर्लिकाय ददयायत्यादि
 उर्वददयायत्यादि षष्ठसंन्या
 सः ॥ कनासं ॥ युजनं ॥ उंजं उं
 कालीवदेध्वरी लारुनन्दायन
 मः ॥ ३ ॥ ऊं ददयायत्यादि षष्ठ
 संनयुजनं ॥ सुगु ॥ खयायख

लनागाय नकि कार्याय तत्तत्र
 यणुक्तदत्तयाणी खं खन्नाथन
 मासुत ॥ अरुगन्धादि ॥ इतिवृष
 युजा ॥ ॥ अथयणुजाग ॥ ददु
 नदततय ॥ ॥ वायक ॥ ६४ अम्ना
 यरुद ॥ वलिः ॥ ३ ॥ रूता
 यविविधकाया रूविदीयाकनी
 दकः ॥ वातालतलवासिन्धा सं
 स्मितायनिवाक्या ॥ मताविय ॥
 सूयकागत्यादि ॥ वलिः ॥ ६ ॥
 लखनहाय ॥ उकारवायुत्यादि
 ॥ यत ॥ यीखण्ड ॥ सिधव ॥ वीवध
 वी ॥ स्नान ॥ नानापूषायादि ॥ यत
 खल ॥ ॥ ॥ स्थाककायातयतसि
 धवस्नानविय ॥ मूलषष्ठसंन्या
 सः ॥ ॥ युजनं यणु ॥ ऊंजा न्या
 तितकलायनमः ॥ मादस ॥ ऊं
 नातिकलायनमः ॥ ललाठस
 ॥ ऊंविद्याकलायनमः ॥ खरुम ॥
 ऊंयतिष्ठाकलायनमः ॥ लिंग
 य ॥ ऊंतिवृत्तिकलायनमः ॥ क

गायत्री॥  ॥ लाम विलास नष्ट
जा॥ मर्त्यगनष्टा॥  ॥ जव
क्रमया तजा काव॥ गायत्री॥ ॐ
यष्टुयागाय विद्मह विश्वकर्मा
यधीमह तन्वाजीवयथा दया
त॥ समये अर्धया रुमथू काव
रूपिनका॥  ॥ क॥ गायत्री लंखजा द
तय॥  ॥ ॐ यष्टुष्ट क्रामिदव
निदयया डयया त्रितं अस्था
पिस्वर्ग मंथाकि वक्तुलायाय
यद्धम॥ मूढालकावस्थायीव॥
उंकागाननहादि॥  ॥ अमु
नमूर्धया रुतहाय॥ निवक्तुद
नयावक्त॥ थमजा कावहीनत
वक्त॥ निवक्तुय॥ ॐ तियष्टुजा
ग॥ ॐ तुलिवा विनियाता॥  ॥
थतधूदावयिहावय॥  ॥


अथ नृत्त्यं वदयुजा॥ लंखन
य॥ दुकारं वायुयादि॥ यना॥
पीखुवद्वनहादि॥ सिधवा॥

वीरध्वरीत्यादि॥ अद्वत॥ अद्व
तं अद्वत्यादि॥ अजमका॥ यक्षा
यवीतत्यादि॥ स्वान॥ नानायुष
त्यादि॥ थतश्चायलय॥  ॥
यतवायनत्राय॥ वलिघात॥
तय॥ अर्धया रुतान॥  ॥
अथदवावर्तनी॥  ॥ ॐ तत्सनाः
वम्या॥ ॐ कं आत्मतत्वाय स्वाहा॥
ॐ कं विद्यातत्वाय स्वाहा॥ ॐ कं
निततत्वाय स्वाहा॥ ॐ कं कं कं
सर्वतत्वाय स्वाहा॥  ॥ सूर्याय
॥ ॐ अथादि॥ वाक्का॥ वक्तुनवी
जमृद्व्यादि॥ वृं पीमरामाह ॐ
रुं ववायन की मश॥  ॥
गुनमस्तव॥ ॐ अखलुसगु
लाद्यादि॥ यत्रमगुनस्थानमश॥
यत्रमखीगुनस्थानमश॥ यत्रमा
वायुगुनस्थानमश॥ वलिसा॥ य
द्यासनायनमश॥ थतक्त॥ क्रमा
सनायनमश॥ अवखव॥ ॐ अ
क॥ अथाय रुद॥ ॐ कं रुद॥ व

॥ कौलि (ग) ॥ कौं आ धन ॥ इति
 ह न धु द्वि ॥  अथ आत्म य
 जा ॥ मूल न व न ना क त सिं दू
 व मा ह नी य र्थ न म ॥ अ र्थ या
 का क न मूल म नु न हा या ॥ ३ ॥
 इति आत्म य जा ॥  ॥
 आ वा रु न ॥ पी स म्ब र्त्ता दि ॥
 य र्थ व लि खा दा व वि य ॥  ॥
 आ वा रु न ॥ या सा य रा य रा म्ब
 दि ॥ छि द व खा दा व वि य मा ल ॥
 या मि ॥ क ल ग ॥ क म्ब ॥  ॥
 द यि नि मा म श या मा ल का ॥ त
 व र्थ या मा ल का ॥  ॥

 ॥
 ऊ व स य जा ॥ कौ न न न न न न
 म ॥ कौ ली ग ल य त य न म ॥
 व लि श ॥  ॥ ख व स य जा ॥ कौ म
 म हा का ला य न म ॥ कौ पी कौ
 व दू क ना था य न म ॥ व लि श ॥  ॥
 म (ध) य जा ॥ कौ (धु) अ मृ त दी य
 स व नी य वी व सि क पि या क र्ण

या ला य पा दू का ॥ कौ न्दी कू कू र
 या ला य पा दू का ॥ व लि श ॥ (धु)
 य स व दी य द म्ब की द वी म हा
 धी क क र या ला य पा दू का ॥ व
 लि श ॥  ॥ रु न्मा न ॥ डं डू कू र
 अ २ वू कू र दू खा हा ॥ व लि
 श ॥  ॥ म म्ब र्त्ता ॥ डं ड वि द
 वा पु लि नी म्ब र्त्ता द वी म हा
 पि ना वि नी कौ ०४०४०४ खा हा
 ॥ व लि श ॥  ॥ व दू ला ॥ अं ग
 आ न दू ग कि र व न न दू
 वी वा पि य त य म्ब ॥ पी अ र्थ
 वि ल ति क र्म र्त्ता ॥ द वि का य
 पा दू का ॥ डं डी ॥ कू हं कू हं कू
 कौ न म ॥ व लि श ॥ वा ऊ क ल या
 मा ल का ॥  ॥ आ स न य जा
 ॥ आ ध न ग क य खा दि ॥ ८ ॥ वृ
 या स ना य न म ॥ सिं हा स ना य
 न म ॥ य ता स ना य न म ॥ ॥
 अं ग डं डू म हा नृ य व र्त्ता
 व व र्त्ता ॥ कि स हि ता य र्त्ता

हागच्छ २००० ति ४२ अ० म० सीदि
 हिता रुव अ० ग० धिस्म नं क० व० ध
 न० मु० डा० या० अ० मृ० ती० क० ल० ॥ ॐ ति
 आ० वा० ह० न० ॥  ॥ अ० थ० ध्या० न० ॥
 ॐ न० क० व० कु० नि० न० ग० ३ ना० ग० क०
 ल० म० लु० तं १ अ० टा० ह० टा० नि० व०
 म० व० द० ध० त० स० श० क० ल० ॥ १ ॥
 अ० जा० रि० श० अ० ग० र्ग० क० ता० पु० व०
 य० व० म० ध० वी० र० दु० र्ध० वा० क० नृ० ल० वृ०
 यं ३ म० वृ० नि० ल० म० व० व० ॥ २ ॥ रि०
 द० शी० ग० व० व० क० क० र्क० का० वा० द०
 मालिका० र० तथा० वा० र्णं नृ० ल० वृ० यं ३
 ख० द्वा० र्णं य० द० म० व० व० ॥ ३ ॥ ना० गी० ध
 न० रु० धा० द० य० क० याल० ३ क० म० लु
 लं १ स० रु० स० सूर्य० र्णं का० र्णं क० ला
 रि० न० ३ नृ० ल० यं ॥ ४ ॥ वृ० ष० पृ० ष० स
 मा० स्था० य० नृ० ल० गी० तं न० र्णं य० तं न
 र्णं ध्या० य० न० म० हा० द० र्णं ना० ट० का० र्थं वृ
 सि० द्ध० य० ॥ ५ ॥ मा० न० वा० नां हि० ता० र्थं
 य० ल० क० वा० ग० वि० ना० य० नं ॥ ६ ॥ ति० ध्या
 ना०  ॥ रि० या० अ० लि० शा० वं ३ ॐ ॐ

ॐ नृ० ल० वृ० न० म० हा० र्णं व० वा० य० क०
 ॐ नृ० ल० वृ० ल० क० सी० दि० ता० य० नं
 ॐ म० हा० द० का० पू० ज० या० मि० ॥ ७ ॥
 वलि ॥ अ० ग० र्ग० ल० य० ज्ञा० ॥ गाय
 ती ॥ ॐ ॐ न० म० स० रु० स० वा० ह० वं वि
 द० ह० ता० पु० वा० य० म० धी० म० रु० त० ना
 नृ० ल० वृ० य० द० या० त० ॥ वलि ॥ 


 अ० थ० पू० ज० न० ॥ जां वि० कृ० द० र्णं याला
 दि० य० अ० ग० ल० क० र्णं याल० ल० ध्या० न० म० ॥
 जां ग० की० वा० य० वा० र्च० द्या० दि० द्वा० द० ग
 नि० व० ल० कि० र्णं न० म० ॥ जां य० व० नि
 व० ना० था० दि० पु० नृ० र्णं कि० र्णं न० म० ॥
 जां का० या० ली० ना० दि० र्णं व० वा० ह० क
 र्णं न० म० ॥ जां ज० या० व० हा० दि० न० व
 ल० म० ना० न० ध्या० न० म० ॥ जां ष्ठी० ना० न० व
 का० दि० र्णं व० व० क० र्णं न० म० ॥ जां रु
 द० का० दि० द० ग० र्णं व० वा० य० न० म० ॥ जां
 अ० सि० ता० क्षा० दि० अ० रु० र्णं व० वा० य० न
 म० ॥ जां व० द० म० लु० ला० दि० रि० म० लु
 ल० र्णं न० म० ॥ जां व० रु० र्णं द० व० रु० र्णं

गत्या नमः॥ ज्ञां ब्रूयादिदगला
 कया लस्या नमः॥ ज्ञां यति यदा
 दिति थि स्या नमः॥ ज्ञां अग्नि स्या
 दिन द्वा स्या नमः॥ ज्ञां ममादि
 राणि स्या नमः॥ ज्ञां आदि स्यादि
 नवय रु स्या नमः॥ ज्ञां ववादि
 कत्रा स्या नमः॥ ज्ञां निवादि म
 कृत् स्या नमः॥ ज्ञां मार्ग निवाः
 दि मा स्या नमः॥ ज्ञां वस नादि
 म रु स्या नमः॥ ज्ञां कला कोषादि
 वृथ स्या नमः॥ ज्ञां अस्व सु मादि
 वि रं जी ति स्या नमः॥ ज्ञां अ न ना
 दि ना स्या नमः॥ ज्ञां य या गादि
 अष्ट रु याल स्या नमः॥ ज्ञां कू
 ज पत्र रु व वा य नमः॥ ज्ञां सिद्ध
 पत्र म रु रु व वा य नमः॥ ध्व त
 नं वलि ॥ ॐ ति गि व पू ज ॥ ❀

अथ ग कि पू ज नं ॥ ज्ञां वा मा दि
 न व ग कि स्या नमः॥ ज्ञां ब्रू द्वा दि
 ति ग कि स्या नमः॥ ज्ञां व क्का स्या

दि अष्ट मा वृ क स्या नमः॥ ज्ञां ज या
 दि अष्ट क स्या नमः॥ ज्ञां व गि स्या
 दि अष्ट क स्या नमः॥ ज्ञां ठा कि स्या
 दि अष्ट क स्या नमः॥ ज्ञां ठा कि
 नी स्या नमः॥ ज्ञां वृ रु गि स्या दि व
 रु स्या ॥ ० स्या नमः॥ ध्व त नं वलि ॥
 ॥ ॐ ति ग कि पू ज नं ॥ ❀

अथ रु य पू ज नं ॥ खुं न वा स
 ध्व वा य नमः॥ खुं न वा स ध्व य
 नमः॥ अ धा व ॥ व रु ॥ व ति गी रु
 य ॥ ३ ॥ वं ज द्वां आ न नृ ग कि रु व
 वा न नृ वी लु वा धि य त थं द्वां
 अष्टा विं ग ति रु क र्म रु द्वा वि लु
 का थे या दू की ॥ वं ज द्वां आ न
 नृ ग कि रु व वा न नृ लु पी म रु
 वि श्या वा अ ध्व वी द्वां पी अष्टा
 विं ग ति क र्म रु द्वा वि का थे
 या दू की ॥ वं ज द्वां पी मूल रु
 न रु द्वा वि का लु ये या दू की ॥ वं
 ज द्वां क रु द्वा वि का रु द्वा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ दाय वज्रपालय नमः २ दूं रु
दृ स्वाहा ॥ क नृणां ॥ ॐ दूं कं क नृणां
नृप महा रं व वाय नृणां कि स
हिताय पादुकां ॥ ॐ दूं ॐ ३ नृ
त्या भिय तथ सकल रु व न व दि
ताय ता पु व धिया य सर्व सिद्धि य
दाय महा द वाय दूं दूं दूं रु दृ स्वा
हा ॥ अ रु त ॥ ॐ दूं अं अ रु त नृप
महा रं व वाय आ दि न कि स हि
ताय पादुकां ॥ ॐ दूं व द्वा (ग वा
मु य नृ वाय सर्व ला क पिता महा
य ना द्या भिय तथ पादुकां ॥ हा स्य
॥ ॐ दूं हं हा स्य नृप महा रं व वा
य नृ वाय न कि स हिताय पादु
कां ॥ ॐ दूं हं ३ य मथा भिय तथ
मां व द्वा २ पादुकां ॥ रु या न क वा
ॐ दूं रं रु या न क नृप महा रं व
वाय आ नृणां कि स हिताय पादु
कां ॥ ॐ दूं ॐ रु त य तथ य त य
वि नृ ता य रु त द द या य काल
नृ पि (ग स्वाहा ॥ वी रु त्स ॥ ॐ दूं वं

वीरसूयमहाशैववायभवे
 वाहूगकिमहितायपादका॥
 ॐ हूं हूं सर्वविघ्नविनाशाय
 नमः वायसर्वकामयदाय हूं
 अधावायमूर्खयमहाकालाय
 पादका॥ व्रीह॥ ॐ हूं व्रीहवृ
 यमहाशैववायभूनेष्यगिः
 किमहितायपादका॥ ॐ हूं ॐ
 नमः शैववतवृदायकाधेश्व
 वायनमः शैवतक्षयसिः
 द्विवृदायाह्वयसिद्धिं दहि
 स्वाहा॥ नाक॥ ॐ हूं सौम्यवृय
 महाशैववायभूधर्मगकिमहि
 तायपादका॥ ॐ हूं ॐ यमाय
 दण्डकायसर्वसमाय हूं हूं
 हूं यं यं यं पादका॥ कोष॥ ॐ हूं
 कंकाठवृयमहाशैववायभू
 वेवाहूगकिमहितायपाद
 का॥ श्वतर्नवल्लि॥ ॐ हूं ति
 नववसात्मकरुववयूजन॥
 ज्ञासर्वसांयदायशानमः शैवल्लि॥

जियाभलिशा॥ नंज ॐ हूं हूं नृख
 धनमहाशैववायकी नृख
 नृखलक्ष्मीगकिमहिता
 यनमः पादका॥ ३॥ वलि॥



अथवल्लिविय॥ दासकलाकाय
 व॥ ॐ हूं नृखधनमहाशैववाय
 व्रीहव्रीदातिवादायदीकाय
 युगानावकस्ययरायतशथा
 हन२ दम२ यव२ मथ२ कनू२
 चिद्व२ रिद्व२ यनकृतं यनका
 ययितं यनयुवितं दूरं दूर्निवि
 तं सर्वतत्त्वमं २ खादि२ यव
 मनुनालय२ अग्निरुक्तायय
 यववगकस्यसुय२ गककन
 नियतयनुस्वयुवसवाधव
 नालय२ हूं रुट् रुट् रुट् स्वाहा
 ॥ ॐ ति नाटधनवल्लि॥
 पूर्वदिनिमविय॥ ॐ हूं हूं हूं
 रुवालायवल्लिष्टका२ स्वाहा॥ ॐ
 हूं वां वदकायवल्लिष्टका२ स्वाहा

[illegible]



अथस्तोत्रं ॥ मण्डलदयकं ॥ वाज
 कवायं वयं वनतय ॥ १ ॥
 अथस्तोत्रं ॥ श्रीसम्वत् ॥ व
 दसदा ॥ श्रीसामन ॥ सिद्ध ॥
 ॥ ॥ ॥ नमो भूत ॥
 दायकल्यवीनं वयं वरुण
 वायसरीमाय वक्रवर्धनमा
 भुत ॥ ॥ ॥ उद्धिष्टवृत्तिकाद्वी
 मातङ्गीसर्वसिद्धिदं सर्वपाप
 हर्ताद्वीसर्वदायविवर्जितं
 ॥ यथाविष्णुतयादशाक्षर्यं ग
 न्धर्वायदं स्रवणं जलमक्षि
 वृद्धिर्मन्त्रांगजं तथा ॥ विष्णु
 जयतिदं वलिस्वयं वाक्षसमा
 प्रितं ॥ ॥ ॥ उंकावासनसमान
 दाभूययं यमसिद्धिदा सर्व
 द्यापीयमं सुखं वन्दुं वन्दु
 लक्ष्मी ॥ ॥ नन्दि ॥ अथ यथा
 मनसुः वक्रवर्धुमद्वयं व
 सर्वगान्धिकावनिर्णयनद्विमुखि

नमोभुतं ॥ ॥ महाकालाद्यादि ॥
 यामात्रका ॥ उद्धिष्टवृत्तिका ॥ ॥
 उं नमः श्रीनाथे वरमहादेवे व
 यनमः ॥ उद्धिष्टवृत्तिका ॥
 कमलिमयं वक्रवर्धुमद्वयं
 वाक्षेवाक्षिपुलं वक्रवर्धुमद्वयं
 हितं हतनाथं वृषभं निर्यन्त
 ययरावस्रविकलवलर्यका
 हिलिन्नाक्षरावर्णं नृत्त्याधिन
 थं नववस्रविकर्यं सर्वनृत्त्याध
 वर्णं ॥ १ ॥ उद्धिष्टवृत्तिका ॥
 कमलिमयं हितिकर्षुवकाकिं
 द्यालोयस्यकपालं वक्रवर्धुमद्वयं
 हितं वाहनधीककक्षातुराग
 यक्षापवीतं अहिकलरुवर्णम
 पुमालासिद्धिदं द्यालोयकसद्व
 क्षानानववस्रविकर्यं नोमिन्नृत्त्या
 धवर्णं ॥ २ ॥ उद्धिष्टवृत्तिका ॥
 हितयनकलितं नकवक्रवर्धुमद्वयं
 दं वृत्ताद्यादावहममहिकल
 रुवर्णं नागयक्षापवीतं निर्यन्त

नृत्त्यं वरुणं मन्त्रं कर्म संहितां दी
 र्घ्यं दास्यं गारुडं हस्तोद्योऽसन्नुष
 नं वृषव वगमनं नोमि नृत्त्यं
 वरुणं ॥ ३ ॥ गृण्यं वरुणं वरुणं सक
 लं गुणं निर्विकारं धराया अरुणं
 वीरुत्त्यं वीरुत्त्यं निववसति
 जयं नृत्त्यं साननं नृत्त्यं वरुणं
 वृत्त्यं दण्डं गणधं वरुणं कं तां
 वारुत नार्थं दर्वं विरुत्त्यं कर्वं
 विरुत्त्यं वरुणं नोमि नृत्त्यं
 वरुणं ॥ ४ ॥ सुजं कर्वुं वरुणं क
 न कर्वुं मन्त्रं मन्त्रं कर्वुं कर्वुं
 रं दुर्वं नृत्त्यं कलार्थं मन्त्रं क
 संहितां गूलं यालीं मन्त्रं रं
 मन्त्रं वाक्कमाला तदनु वरुणं
 वानवर्कं विदुं वामाक्षं वाक्
 धनं विरुत्त्यं वरुणं विदितं दर्वं
 वरुणं नोमि ॥ ५ ॥ बालं गणधं वरुणं
 जातं वरुणं लसं मन्त्रं वरुणं
 मन्त्रं कर्वुं नार्थं गायत्रीं
 हि कलं वरुणं वरुणं मालां

वरुणं साननं मन्त्रं दक्षं नृत्त्यं वरुणं
 वरुणं वरुणं वरुणं वरुणं
 कायुषं दण्डं कर्वुं कर्वुं
 तां वरुणं वरुणं ॥ ६ ॥ निर्विकारं
 नाटकाय नववसलं यता सर्व
 सिद्धांतं तत्वं सार्यं विरुत्त्यं क
 र्थं विरुत्त्यं वरुणं वरुणं
 वरुणं वरुणं वरुणं वरुणं
 लयं विरुत्त्यं नृत्त्यं कलं
 केलाया सार्यं मन्त्रं विरुत्त्यं
 यतां नोमि नृत्त्यं साननं ॥ ७ ॥
 धनं वरुणं मन्त्रं वरुणं वरुणं
 वरुणं मन्त्रं कर्वुं वरुणं
 निमीलितं यिनं यता गावि
 तं सिद्धिं दक्षं वरुणं निलयं
 वरुणं लयं विरुत्त्यं तां वरुणं
 लं कलं कलं नायका विरुत्त्यं
 वरुणं वरुणं वरुणं वरुणं
 नाटकाय मन्त्रं वरुणं कर्वुं
 मन्त्रं ॥ ८ ॥ मन्त्रं कलं विरुत्त्यं
 वरुणं जाकं वरुणं यतां गृण्यं

लखत्रयाऽयानमतसिर्वंशुः
 धिवनुदवतासर्वसन्नुडाऽस
 गलाधियाऽथागिन्नाऽक्षरया
 लाप्रतवदहंशुवस्मिता॥ न
 मऽपीनाथाय॥ नमऽपीसिद्धि
 नाथाय॥ नमऽपीकुञ्जनाथा
 यनमऽ॥ 


 वृथपूजा॥ प्रपूजाग॥ हवन
 साव॥ रुसिहिंसा॥ कुतुलि॥
 सिहिनीयाता॥ कालथानदि
 सा॥ श्री॥ १६ व्याखनमानयाया॥
 समयकुय॥ समयविय॥ व्या
 खनमादकसा॥ मालकासा॥
 समयआदाव॥ तथ्ये॥ छीत
 थतायादि॥ व्याखनमानस
 मयजथेसुशाथ॥ ॥ दवज
 नीर्वादा॥ चकामूर्तिवलेकका
 रिजगतिपुष्टुध्वनीवासव
 हतनीगगलायमारुगवती
 नेलध्वनीदक्षिणेस्नानागस्य

कुञ्जध्वनीकुलगलावावृथदि
 द्रायिकापीवामांशुलमामिवि
 ध्वजननीदलेध्वनीसिद्धिदा॥
 दक्षिणायाय॥ वाचनतया॥
 काटादस्नानकायाव॥ धर्मकुय
 ॥ मालकासां विय॥  ॥ स्वात्माः
 नीर्वादा॥ जंजमध्वपूर्वगतंय
 दंरुगवतीयेतन्यनृपात्मिका
 स्नानकावदलातथाहविहो
 वकामत्रीविशय॥ राखेवव
 यं॥ कटदध्वनीयागिनीय
 श्रीकं वद्धाकोविमत्रीविषक
 ममलंमांवाहुनिर्हंकजा॥  ॥
 यजमानआदिनमालकासा
 स्नानविय॥  ॥ वाचनलंखः
 कायावतय॥ अरिषक॥ लं
 खनहाय॥ दुकारंवायुयादि
 ॥ चन्दन॥ पीखलुयादि॥ सि
 धव॥ वीवध्वनीयादि॥ स्नाना
 विय॥ आनन्दनकित्यादि॥  ॥
 साक्षिथाय॥  ॥ ध्वतंशुदा

व॥ वक्षुलासवान॥ ॥

समयच्युय॥ कृतसमयविया॥
समयआकाव॥ तव्यला॥ याया॥
पीत॥ यताख्यादि॥ वाक्क॥ विद्व
गिया॥ ३॥ ॐ ॥ दवगुणीर्वाद॥
नकामूर्तिननकख्यादि॥ अम्ब॥
दक्षिणायाय॥ वाचनतय॥ का
नादस्वानकायावकाठालसतय
॥ वाचनलखकायाव॥ लखन
हाय॥ दुकार॥ यत॥ पीखगु
सिधवा॥ वीवध्वनी॥ स्वानतयरा
डहूनीवृजख्यादि॥ मालकास्म
विया॥ ७॥ साक्षिथाय॥ ८॥
ॐ तिपीपीपीजयवच्चलानृत्त
ध्ववसिद्धिसाधनयूजापीपीसु
मतिजयजितामिहमन्त्रदव
कृतनवमानुकादिनाटकस्य
वाहीकर्मविधि॥ समाप्त॥

सामायीमालकादूकाय॥वात

या॥ आगर्नंतय॥ तं क मालका
 वानं॥ तर्क्यण॥ सीत४ धं ताः
 त्यादि॥ अष्टाविंशति त्यादि
 ॥ अविनाशो त्यादि॥ अ० ४
 काश्च॥ अयन्निदं व्याख्यादि॥
 समुखीयूजा॥ कलंकसमुखी
 सतर्था॥  यागनयाया॥
 रुकाजययाय॥  ॥
 ॐ तिवाहिकिया॥ नवमाह
 कादिव्याख्यानविधिसमाप्तः॥

अथ सक्तिया विधिलिख्यता ॥
 धवनिख कर्म मालका मूनका
 जीश नाऊ कलि सदा रिम तापू
 जायाय ॥ अखाल सम तापू जा
 याय ॥ धवतं धुदाव ॥ गुनू जा
 दिन आखन मास कल्यं वादा
 वपू जा द्वा दवन ॥  ॥
 पुनू कुं सल खन हाय ॥ दुका
 वं वायू ॥ वंत ॥ पीख पुच नून
 ॥ सिधव ॥ वी वं ध्वरी महा ॥ आ

कत॥ अक्षरं अक्षया॥ अजम
का॥ अक्षयवीतयादि॥ स्वाना॥
नानापूषयादि॥ १०॥ वक्षला
मारुती॥ कलगा॥ कुमु॥ वासु
वादि वीरयठ॥ कोमात्री॥ श्व
तसंयदनादियाय॥ ताजाता
नवलिसकलसक॥ अर्धयाग
संताता॥ ११॥ थनामालसाय
थराजन॥ अथयवार्चनी॥

शितलनायमा॥ अथादि॥ वा
क्र॥ सूर्यय॥ वक्षुक्तीठयाः
दि॥ मनु॥ १२॥ अखलुमलुला
॥ वतीगिन्यामशा॥ मालामनुन्या
मशा॥ जलयागुपूजा॥ गायत्री॥
शुं सिद्धिलक्ष्मीयादि॥ अर्धया
गुपूजा॥ आनन्दरैवव॥ डरुव
या॥ वावली॥ मूलमनु॥ ददया
दि॥ यंत्रयुगवनरुतगुद्धिग
मूलनगात्मपूजा॥ अष्टगवि
द्वय॥ १३॥ १४॥ पीसम्वर्त्तन

आवाहन॥ यक्षवलिरवाकाव
विय॥ १५॥ आवाहनयासायवा
न॥ शिखर॥ १६॥ कलगा॥ कुमु
॥ १७॥ दयितिमामश्यामालका
॥ तत्रश्यामालका॥ १८॥ वक्षला
पूजा॥ नवात्मा॥ अक्षर्विंशति॥
मूलस्तन॥ डावधीमारुतीसा॥
सर्वसोराय्यध्वनी॥ १९॥ दुम
ध्वनी॥ लिखा३॥ डयत्रगु२॥

आधाराणकथयादि॥ २०॥ शुं न
दयंतासन॥ महाप्रतासन॥
ध्यान॥ महातजायादि॥ मूल
मनु॥ गायत्री॥ मालामनु॥ डं
नमः सर्वसिद्धियादि॥ रुकाव
सकाव॥ अधारा॥ वज॥ वती
गिदिय३॥ वृद्ध॥ काली॥ वि
युव॥ थतयधिवधववलिसा॥
वासुवादिपूजा॥ थवधवमू
लमनु॥ थवधववलिसंवालि॥

वीरकलगा॥नवाक्षत्रलपूजा
॥वल्लिथवर्म॥कामात्रीरुमा
मूलमनुनपूजा॥वल्लि॥



मूलमनुनरियाऊलिशावल्लि
शावल्लिविय॥निवादि॥माला
मनु॥खाकाववियमाला॥

मूलमनुनरियाऊलिशावल्लि
॥निवादि॥त्वाकमहावल्लिनधू
क॥आवाहनादि॥थानिमडा

॥चन्द्रनादि॥॥धूयादिद्युः
गम्भादीया॥सूयकाणा॥नेवः
य॥अर्नमहा॥॥जय॥

द्वव॥यष्टिम॥डाषधी॥मूल
या॥॥मुति॥द्वशादमन्वा
य॥अखलुमलुला॥लीसम्वरु

॥विद्वव॥यष्टिमया॥डाषधी
॥रुम्बप्वरी॥निखा॥महाकाल
॥द्वयत्रु॥द्वयत्रु॥मूल॥

काली॥विद्वव॥द्वयिनिमाम
श्या॥तत्रश्या॥वाहवादिक्

श्या॥कामात्रीया॥वक्त्रला॥न
कावासनत्यादि॥यथावानत्या
दि॥अङ्गगम्भादि॥द्ववमसावा

॥यार्थना॥दक्षिणा॥समय
द्युय॥तर्व्यला॥षीतधतात्यादि
॥ध्वतंभूदाव॥पिहावय॥



अथनृत्त्यप्वनपूजा॥लखनहा
य॥दुकारवायू॥यत॥षीखलु
वन्दन॥सिधव॥वीरप्वरीमहा

॥आक्षत॥अक्षतंअक्षया॥ज
जमका॥यक्षोपवीत॥स्वाना॥

नानापूष्यादि॥ध्वतंभूयल
धर्मयदायसदा॥
ताजातय॥अर्थयाहर्मताना॥



जितल्वनावम॥सूर्यार्थ॥अश्या
दि॥वाक्त्र॥वर्षुक्त्यादि॥म
नु॥॥अखलुमलुला॥माला

मानुव्यास॥जलयाह॥गायत

॥ सहस्रवाहव्यादि ॥ अर्धया
॥ आनन्दरुत्रव ॥ उरुत्रया ॥
वायुणी ॥ मूलमनु ॥ यरुद्रा ॥ का
कात्रलरुतगुद्धि ॥ मूलनआ
स्रयूजा ॥ ॥ आवाहन ॥ गीस
मरुतीन ॥ यरुद्रवल्लिखाकाववि
यमाल ॥ ॥ आवाहन ॥ यासा
यत्रायवान ॥ शिखव ॥ ॥

कलगा ॥ कृष्ण ॥ दयितिमाम
श्यामालका ॥ तत्रश्यामालका
॥ ॥ नन्दिजव ॥ महाकालख
व ॥ दथसङ्कण ॥ ॥ रुनूरुत्र
व ॥ समुखी ॥ वदुला ॥ ॥

मूल ॥ आक्षत्राक्रियादि ॥ ॥
सदागिवयतासन ॥ ध्यान ॥ न
कवकुल्यादि ॥ महातजात्यादि
॥ मूलमनु ॥ यरुद्रा ॥ गायत्री ॥
शुंनवत्रयात्मकरुत्रवणकि
सहितायनमहा ॥ मूलमनु ॥ व

लिश ॥ ॥ वलिविथ ॥ नृत्त
वमहारुत्रव्यादि ॥ सांघदा
ययूजा ॥ सर्वसांघदायथान
महा ॥ ॥ मूलमनु ॥ वलिसर्व
उथवथवस ॥ निर्वोणा ॥ वाक
महावलितधूनक ॥ आवाह
नादि ॥ विष्णुलथानिमडा ॥ ॥
धूप ॥ दिव्यगन्ध ॥ दीप ॥ सूपका
गा ॥ नेवश्या ॥ अन्नमहा ॥ ॥
जपा ॥ शिखव ॥ मूलया ॥ निर्वो
लया ॥ जयंरुद्रानेखाहा ॥ ॥

श्रुति ॥ अखलुमलुला ॥ गीसम
रुती ॥ शिखव ॥ दयितिमामश ॥
तत्रश्या ॥ ॥ रुनूरुत्रव ॥ स
मुखी ॥ वदुलाया ॥ नन्दि ॥ महा
कालया ॥ दंरुपालया ॥ नृत्त
धत्रया ॥ आनन्दगाकि ॥ उरु
द्रा ॥ यथावान ॥ अरुगंधादि ॥
॥ ॥ दक्षिणा ॥ नमस्कत्र ॥ सम
यदुय ॥ तर्कणा ॥ धीतयता ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

तनागायनादिमूर्तिपूजना ॥

स्वस्तिकवायावश्चास्व नमो ला

सालावहय ॥ सुगुणमुखन ॥

स्वस्तिकसमान ॥ नृवर्कनादि

दीपलाहलका ॥ आवायस्य

अर्घपागलस्वनहाय सुगुण

दिसकल्य ॥ अमुमनुन ॥ सुगु

याहवनेआवायवान ॥

वलिया ॥ अर्घपाग ॥ हवनेत

य ॥

अथमूर्तिपूजा ॥ गित

वनावम ॥ पुननमस्काव ॥ न्या

म ॥ मूलन ॥ जलार्घपागपूजा

॥ हतसुद्धिआत्मपूजा ॥ पीस

वर्कनआवाहन ॥ गितव ॥ व

लि ॥ मूजा ॥

तावधवपूजा

॥ वृषासनायनमः ॥ ॐ ह्रीं विष्णु

वतावधवमूर्त्तनमः ॥ धृतया

वलिहवनेवाहवलिम ॥

जवाखेथाक ॥ यद्वासनायनम

॥ ॐ ह्रीं नं नद्विमलमूर्त्तयन

मशावलि ॥

॥ खवखिंथाक ॥

यतासनायनमः ॥ ॐ ह्रीं वं वक्र

लमहावाद्यात्ममहाकालाय

मूर्त्तनमः ॥ वलि ॥

॥ दधम

वृजथाक ॥ यद्वासनायनमः ॥

ॐ ह्रीं की सः नायायगायमूर्त्त

नमः ॥ ॐ ह्रीं नं नद्विममहाका

लमलमूर्त्तयनमः ॥ वलि ॥

॥

जवकठखिंथाक ॥ यद्

यतासनायनमः ॥ ॐ ह्रीं गिखा

स्वद्वन्द्वमूर्त्तनमः ॥ वलि ॥

॥ खवसध्यावलखिंथाक ॥ यता

सनायनमः ॥ ॐ ह्रीं मं महाका

लमूर्त्तयनमः ॥ वलि ॥

॥ जववक्रलथाक ॥ यद्वासनाय

नमः ॥ ॐ ह्रीं नं नद्विकध्वमूर्त्त

यनमः ॥ वलि ॥

॥ खववक्र

लथाक ॥ यद्वासनायनमः ॥ ॐ

ह्रीं मर्मवमूर्त्तयनमः ॥ वलि ॥

॥

॥ जवकाकठकागायन ॥

यद्वासनाय नमः॥ ॐ हूं नं ना
 वदाय नमः॥ ॐ हूं रुधुन वन
 मः॥ वलिः॥ ॐ॥ खवगाय नद
 का॥ यद्वासनाय नमः॥ ॐ हूं रु
 रुतमः॥ ॐ हूं रुधुन मः॥
 ॥ वलिः॥ ॐ॥ जववाक्यालथाक
 ॥ यद्वासनाय नमः॥ ॐ हूं कां
 गधवात्मकमूर्त्य नमः॥ व
 लिः॥ ॐ॥ जवसकागथाक॥ य
 द्वासनाय नमः॥ ॐ हूं कां कां स
 धनमूर्त्य नमः॥ वलिः॥ ॐ॥
 खवसवाजनथाक॥ यद्वासना
 य नमः॥ ॐ हूं कां गदर्मा मूर्त्य
 नमः॥ वलिः॥ ॐ॥ खवसगिद्धा
 लथाक॥ यद्वासनाय नमः॥ ॐ
 हूं जर्जवमूर्त्य नमः॥ वलिः॥
 ॐ॥ दधुसखगायूव॥ यद्वा
 सनाय नमः॥ ॐ हूं तं तं वात्म
 नमिहनादमूर्त्य नमः॥ ॐ हूं
 कां कां सिहनादमूर्त्य नमः॥
 वलिः॥ ॐ॥ दधुकाहोलयूव॥

यद्वासनाय नमः॥ ॐ हूं कां कद
 ल्यायैत्मकमूर्त्य नमः॥ वलि
 ॥ ॐ॥ दधुसठमनू॥ यद्वासः
 नाय नमः॥ ॐ हूं दं दमनूधन
 मूर्त्य नमः॥ वलिः॥ ॐ॥ दधुस
 खरुलकजाद॥ यद्वासना
 य नमः॥ ॐ हूं खरुधवात्मकमू
 र्त्य नमः॥ ॐ हूं रुलकधवात्म
 कमूर्त्य नमः॥ वलिः॥ ॐ॥
 दधुससमसुवायथाक॥ वृषा
 सनाय नमः॥ ॐ हूं रुद्धादिना
 नादवादिवायधनमूर्त्य न
 मः॥ वलिः॥ ॐ॥ दधुसद्यष्टिमा
 रुलजाद॥ हंसाय नमः॥
 ॐ हूं नीलसप्रवृत्तिमूर्त्य
 नमः॥ वलिः॥ ॐ॥ दधुसयत
 कल॥ वृषासनाय नमः॥ ॐ हूं
 यं वरुधवात्मकमूर्त्य नमः
 ॥ वलिः॥ ॐ॥ जवखवगाकः
 कालयूजा॥ यद्वासनाय नमः
 ॥ जव॥ ॐ हूं कालात्मननिव

अरुनपदधवात्मकमूर्त्यनम
 शाखव॥ यन्मासनायनमशां
 द्रुं मृत्पुत्रा अरुनपदधवात्मकमू
 र्त्यनमशां वलिशा  मूल
 नाटध्वममनुनगिया अलिशा
 सकली ॥ ध्वतयां वलिहवन
 ॥ अरुन ॥ त्वाकमहावलिनधू
 नक ॥ आवाक ॥ धनूयानिमु
 दां दर्शयत ॥ धूपदीप ॥ जाय
 मूलन ॥ धाव ॥ साग ॥ वीवः
 वीवयादि ॥ हवन ॥ अरुगन्ध
 दि ॥ तर्पण ॥ अंतिमूर्ति पूजा ॥


 बहु संस्कार ॥ सुरुगुआदिनका
 यतिं भालसजयलय ॥ धाव ३
 अं द्रुं द्रुं महा नृत्त्यध्वमहा
 ववा लु य रु ववनामाययाय
 नागा धूप द्रुं रुद्र ३ ॥ अरुन ॥
 गायत्री ॥ सहस्रवाहवयादि
 धाव १ ॥ ध्वतजयलयकायति
 अर्घ्या नहाय ॥ 

लासस्त्रिकथाय ॥ पूजन ॥
 नृत्त्यध्वममूलमनुन ॥ अरुन
 पूजा ॥ समुदाय वायदका
 मुअमुदका तालयति ॥ धा
 यल आदिनदकोसकली ॥
 अमुमनुनविसर्जनयाय ॥
 ध्वतधूवाव ॥ ताल ॥ मन्त्र ॥
 खिं ॥ कलिं ॥ ध्यावल ॥ वदल
 आदिनकासदका ॥ धगाका
 हल आदिनदका वाय ॥ धा
 यल ॥ अमन् ॥ खन् ॥ रुलका
 ध्वत आदिनदका सकली लव
 काय ॥ दक्षिणा सरु ॥ 
 मूलमनुनतालयति नचयक
 ॥  धूलुदमाया लासस्त्रि
 कथाय ॥ माहनी विसर्जनया
 तवन ॥ धिता रुय ॥ हानीकान
 यवीखायाय ॥ ध्वज द्रुगसमा
 यकं कीर्तियोराय दायकं
 धनदं कलर्गवेव दीर्घायुधुः
 निवागकृत् ॥ अंजनं ककुलं

वधनहानिर्विचित्रं तथ तस्थानि
 वक्रं तथा विद्रुं सर्वसिद्धिस्तथे
 वत्र ॥ वेनायकस्तथा ॥ वृषं सर्व
 सिद्धिरुल्लसदं स्वर्गं विगुल
 कं विद्रुं गङ्गा नागं तथा रुवत
 ॥ मङ्गलाष्टकं विज्ञानि मातृका
 विज्ञया रुवत ॥ दत्तलं हितथा
 विद्रुं सर्वसम्पत्तिदायकं ॥ न
 तदकस्य विद्रुं वत ॥ क्रातुं वृष
 पुरा पुरं ॥ ॥ धर्मं पुरा पुर
 मायाव ॥ दक्षिणा साहित्यन ॥
 यलिङ्गमालवज्ञाय ॥ दवआः
 दिनमालकं तिचक ॥ गगण
 दिङ्माणीर्वाद ॥ संख्यतिष्ठा
 ॥ वलि ॥ विसर्जुन ॥ दवायस
 त ॥ द्वाद्यलनवचक ॥ ॥
 खाजसमयविय ॥ ययनधि
 य ॥ गायनवायनादिदक्ष
 न ॥ ॥ आचार्यनदुपयुजा
 याय ॥ दत्त ॥ महालदाव ॥
 ताठनयाचक ॥ द्वासाक ॥ ॥

यवगदकात्रालकं ॥ धर्मं भूद
 व ॥ यजमानपूलवृम ॥ ॥

स्वस्तिकसम्पन्नं ॥ दक्षिणा ॥ नृ
 वक्रं न ॥ अश्विन ॥ रुतवलि ॥
 रुतायत्यादि ॥ मर्तविय ॥ स
 यकागत्यादि ॥ मम्यालवलप
 तिसूमुखीसतयकलञ्चय ॥
 ॥ मताखानवाय ॥ तालवा
 नवाय ॥ मगाननवाय ॥ कल
 नादिवलिसर्ववियर्जुन ॥ ॥
 कलगाविभक्त ॥ क्रयकनता ॥
 वन्दनसिद्धवसगानस्वानपा
 धूलिकाविय ॥ संख्यतिष्ठा
 धुलितनवाय ॥ कमुक्तायवा
 वादिसकल्य ॥ आवति ॥ पूरु
 वन्दु ॥ साक्षिथाय ॥ ॥ धर्म
 पूलञ्चया ॥ ॥ ॥ धर्मभूद
 वपिदावय ॥ नृवक्रनादिद
 थ्य ॥ नकानजुम्भ ॥ कलगादि
 विसर्जुन ॥ सर्व ॥ पूर्ववतुञ्ज

वि। ल। आ। दि। पू। र्ण। व। नु। र्ण। 
 साक्षि। था। य। । द। व। न। म। स्का। व।
 या। दा। व। ला। या। ख। न। दू। य। कं। रु।
 य। कं॥ त। ल। मा। धि। स। दं। व। द्वा। य॥
 मूल। वृ। क। स्यं। दं। व। द्वा। य॥ (गाय। त्र।
 य॥ ध्व। तं। धू। दा। व॥ ॥ अ। ब्रा। ल।
 या। दा। व। स॥ ला। सा। या। व। दू। ला। य॥
 ॥ स। (गा। न। वि। य॥ दं। व। द्वा। य॥ रा।
 ऊ। न। य॥ क। व। र। का। य॥ यु। नू। ऊ।
 व। मि। खा॥ प। लि। ड। मा। ख। व। मि। खा॥
 ॥ खि। मू। जा। ख। व। द्वा। स॥ गाय। त्र। ऊ।
 व। द्वा। स॥ ताल। ड। मा। धू। ना॥ मू। र्ण॥
 म॥ ॥ इति। नृ। त्य। ध्व। न। वि। धा।
 न। स। मा। क॥ ॥ ध्व। तं। धू। दा। व॥
 पूल। वृ। व। नं॥ कृ। क्क। ल। रु। द्वा। व॥
 न। त। य॥ व। नु। ना। दि। या। य॥ ॥


 वि। त। त्वं। ना। व। म॥ सूर्या। द्य॥ यु॥
 वृ। न। म। स्का। व॥ मूल। न्या। सा। दि। नि॥
 दं। व। र्ण॥ न। न्दि॥ म। हा। का। ल॥ ॥
 आ। क्ष। व। र। कृ। य। त्या। दि॥ ८॥ मयू॥

वा। स। ना। य। न। म॥ अथ। ध्या। नं॥ ॥
 ॐ॥ म। हा। मयू। व। मा। वृ। दा। को। मा॥
 नी। वा। ल। वृ। पि। णी॥ व। कृ। व। मयू। व। नि॥
 क्ष। ना। व। कृ। मी। सा। व। सा। ग। नी॥ व॥
 कृ। पृ। थ। व। ता। दं। वी॥ सिं। दू। वा। वृ। ण॥
 वि। य। हा। न। क। व। का। व। क। न। नी॥ म॥
 पु। मा। ला। व। ल। मि। नी॥ ॥ ग। किं। मू। र्ण॥
 क। ना। दं। वी॥ वि। दू। का। पा। ल। क्ष। वि। ण॥
 ॥ का। ल। दं। रु। ग। ता। दं। वी॥ व। ट। वृ। द्वा॥
 नि। वा। सि। नी॥ ॥ या। मयू। पी॥ णि॥ मि। ता॥
 नि। र्ण॥ को। मा। नी॥ व। न। मा॥ ॥ यु। ते॥ रा॥
 इति। ध्या। न। पृ। थ्वं॥ न। म॥ ॥ रु। या॥ ऊ॥
 लि। न। द्वा। य॥ ॥ ॐ॥ जं॥ वं॥ वं॥ ॐ॥ मं॥ ॐ॥
 कां॥ कां॥ कूं॥ कूं॥ दूं॥ दूं॥ ॐ॥ ॐ॥ म॥ हा॥
 को। मा। नि॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ का। वि॥ च॥
 या। दू। कां॥ ॥ ३॥ ॐ॥ व। लि॥ ॥ दं॥
 दया। दि॥ वृ॥ रु॥ ॥ गाय॥ ॥ ॐ॥ जं॥
 कृ। ल॥ को। मा। नि॥ वि॥ दू॥ ॥ म॥ नु॥ का॥
 दू॥ स्य॥ धी॥ म॥ हा॥ त॥ न्ना॥ को॥ लि॥ ॥ य॥
 या॥ दया॥ त॥ ॥ व। लि॥ ॥ ॥ व॥ द्वा॥
 त्या॥ दि॥ ॥ ॐ॥ अ॥ ध्या॥ व॥ ॥ व॥ ॥ व॥

तिनीशिया॥३॥यधिम॥डरु
 व॥यं वमी॥रुनुमरुवव॥सु
 म्खी॥वकुला॥नृख्यव॥
 मूलमनु॥निर्वाण॥
 हावलिनधनकं॥आवाहना
 दि॥मूला॥धूय॥दीय॥ने
 वंश॥जय॥विद्वय॥को
 मारीया॥मूलया॥निर्वाणया॥
 मृति॥अखण्डमणुला॥मी
 सम्वर्त्ता॥विद्वय॥यधिम॥डरु
 व॥यं वमी॥रुनुमरुवव॥सु
 म्खी॥वकुला॥नृख्यव॥को
 मारीया॥यथावा नखादि॥अ
 नगन्मादि॥
 तर्कल॥वृथ
 पूजा॥रुं सतर्कल॥दक्षिणा॥
 कमुयाकायावयालवकाय
 यजमानादिन॥तर्कल॥पीत
 र्कल॥अष्टविंशति॥अविना
 सा॥समयराज॥राजनान्क॥
 जयनिकानधनकं॥कर्वकपू
 जा॥चकानक॥कामारीयाहा

नविद्य॥कोमावीविसर्जनया
 हावनाध्ववसंकाय॥साक्षीथाय
 ॥रूतिमूलसिद्धियाविधि॥

॥३॥३॥३॥३॥३॥३॥३॥३॥३॥३॥

अथधनयद्रुकुद्रुखठजाय॥
 माहनीझाय॥पीखणुकणवी
 कसुव॥कपूलसाधल॥धनस
 डयवसगधनय॥धनवसुत
 यावर्जवझाय॥वहुसंस्कव
 याहाव॥माहनीजयलयमनु
 ॥कोंकीकोमहाविद्वयवरी
 नंकी॥मीविद्वयसुन्दरीमाह
 नीदवीयादका॥धनज॥नं
 जमू॥पीडावधीक्रमरुहाविका
 यदु॥यादका॥धन१०८॥माह
 नीकावसथान॥यविद्वमा
 लवकाय॥
 वलकिनृख्य
 धनसपूजायाय॥मताआहा
 वखठजाय॥
 स्वसिकयाय
 ॥सुखस्वसिकसतय॥नृवृक्ष
 नादि॥खठजालय॥सगाना

आलीर्वादा॥धवधवसलानवि
 यःसहंआवतिप्रतिष्ठा॥धवः
 क्राय॥॥तिथीनवमाष्ट
 कादिनाटकस्यसिद्धिपूजा॥
 जीजीसुमतिजयजितामिह
 मन्त्रधवकृतपुण्याममृत्रुः
 र्थविधिःसमाकशः
 समस्त८१३मार्गणिबलुदिए
 जीजीसुमतिजयजितामिहम
 न्नधवसनदयका॥नवमाष्ट
 काप्राखनयासाकूल॥
 पूजुर्षिरुनवाया॥॥धना
 नायकसमायावपूजापद्धति
 ठरुवाम्नायकमसंरुठिमहा
 कसनदयकाअनरुलायाः
 यमतवयत्नपूर्वकननिदा
 नयायमाल॥लारानियाया
 निनकर्यगलथानमतवा

ततागायनादिमूर्तिपूजा॥सु
 फिकवाय॥प्राखनमालासा
 लहयावसूत्रयमुखनस्वसि
 कसमान॥नृवक्त्रनादिदीप
 लाहलका॥आचार्यस्यैश्वर्य
 पाहलखनहायप्राखनमाः
 मावातामकलद॥॥ततामू
 र्तिपूजा॥वंविहवताल
 धवमूर्त्यनमशातालधव॥
॥मंनद्विकधवमूर्त्य
 मकसुववादिननमशाजवव
 कलिथाक॥॥मर्मवमू
 र्त्यनमशाखववकलिथाक
 ॥॥नद्विनमपुलायन
 मशाजवशिं॥॥वंवक
 लामहावायासमूर्त्यनमशा
 खवशिं॥॥नंनावदा
 यनमशाकुंकुंमुववनम
 शाकुंकुंननमशाकुं
 कुंमूर्त्यनमशायाकुगायनः
 अविधविगायन॥॥कुंका

लात्मननिवञ्जनपदधवात्म
 ननमः॥ अवगाञ्चकावरा॥
 ॐ ह्रीं मृदुवाञ्जनपदधवात्म
 ननमः॥ खवगाञ्चकावरा॥
 सकलदन्ताष्टवयामूलमनु
 लक्ष्मणनैवृजायाय॥ आवाह
 नादिवलिनेवञ्ज॥ ध्वतसमूदा
 यवृजा॥
 व्याखनमाणाध
 वय॥ मूलननिवीकणी॥ अश्व
 लअर्धादिकनथाकणी॥ गुरुनैः
 व॥ कवचनावगुणनञ्ज॥ ॐ ह्रीं
 ह्रीं महानृत्त्यध्वमहाकुरुवा
 लु॥ यज्जमकव्याखनमानामः
 वायनागायकूरुट्॥ ॐ ह्रीं
 कांददयापनमः॥ ॐ ह्रीं
 उन्नयुजा॥
 निवसजयल
 यमनु॥ ॐ ह्रीं सदयवाहवदि
 द्मह॥ गणुवायधीमह॥ तन्ना
 नृत्त्यध्ववाद्ययात॥ ध्वमनुल
 जयलथधावजियेकी॥
 मालयतिद्याधवज्जमुलविस्

र्जन॥
 लाहातसस्वस्तिकवा
 यावसमूदायज्ञाय॥ दक्षिणा
 सहितव्याखनमाद्याधवज्ञाय
 ॥
 चतकवृज्जा॥ चतसिधव
 मगानविय॥ स्नानविय॥ आणी
 बौदविय॥
 ततामाहनीवि
 स्रुत॥ माहनीयवीक्षा॥ ध्वज
 कुरुणादि॥
 ध्वतगुरुगुरु
 मायावमाहनीनदवसकं त
 वकं॥ आवायधमतय॥ पालि
 दमातवकं॥ व्याखनमातवकं
 सकलद॥ माहनीयापयलिद
 मालवज्ञाय॥ माहनीनतवका
 ककायतिंदामकाय॥ मरुल
 य॥ पतिष्ठा॥ आवति॥
 खाजसमयदवसकं आगन
 तथावव्याखनमासकलदखा
 जसमयवियावचयनथिय
 कमाल॥ वयनमथिलसानाः
 रुदावतं लिथेवयनथिय
 माल॥
 ततादवज्ञायव

बालपाठमात्र ॥ यू १०० धून ॥
 ता १२ ताखान ॥ ता ११ धूपासा ॥
 जिलखानमात्र ॥ ता २३ युयुव ॥
 ता २ संतज्ञास ॥ आवृति १ ॥
 य १ गा ० ॥ रगा १ धूयदह ॥
 मिजलखवास ॥ अजलखल ॥
 यसाहका ॥ ० नरुका ॥
 रं २ मताक ॥ आ २ मताक माह ॥
 प्र १ मासदिववि ॥ प्र १ दडाजा ॥
 प्र १ यावकजा ॥ प्र १ यववाजा ॥
 प्र १ कीवजा ॥ प्र १ माथवडवा ॥
 ता १ वाकथाकायलमाह ॥
 या १० बालकयूत्र ॥ क १ चकन ॥
 य २ वालालकुाकागाय ॥
 या १ क्रसकनवा ॥ रगा १०० सले ॥
 रोजाकादखान ॥ माहनीसाजा ॥
 रोजाकादखान ॥ ससाहका ॥
 रोजातायखान ॥ धविवा ३० ॥
 रोजाकासखान ॥ रं ३ दूय ॥
 रोजावादखान ॥ रं १ मगा ॥
 य ३ मीरुववाजदू ० ॥

दं ३ दक्षिणा ॥ य १३ यय ॥
 सवनमालक समयविद्ययाता ॥
 कुयाला ॥ रं ३ वाखाजयाता ॥
 कासुकला ॥ यतामाह ॥
 विचकन ॥ दं ३ दक्षिणा ॥
 धतक्षिनसयातायिवनया ॥
 ककलपूजा १ ॥
 सामायीमालका ॥
 वाक्रसमतायक ॥
 सुजआदिनगलकासकलसं
 जोगवनीयाय ॥ सातिकूक्याता ॥
 आ १ पूजा ॥ यत ॥ मिधव ॥ ताजा ॥
 या २ वलि ॥ अ २ वतिश ॥ व २ वतिश ॥
 मताह ॥ तालवा ॥ रं २ सगाना ॥
 दक्षिणा ॥ सहा ॥ खाजसमय ॥
 ययूका ॥ हका ॥ यासुलका ॥
 दवनयामतापूजाकारिंसाह
 माल ॥ अखालदावसलासाय ॥
 मतापूजा ॥ वाहानरं १ ॥
 समयआलन ॥ न्यान ॥
 अखावसंमतापूजानरंमाल ॥

बहुधीविद्वानयाता॥ मतायूजा
क्री॥ वाहाना॥ समयजालना॥
न्याना॥ सगाना॥ मतायूजा॥
तालया॥ संख्या॥ आत्रत॥
वत्रयत॥ नयूका॥ यलका॥
खटजायिते॥
आखनमादकसंमाल॥

मूलसिद्धिअधिवासनयावसय॥
पुनरुगाययमानथा॥
सासखिनवाथलकैता॥
द्वनयातामतायूजाशुजा॥
उद्धावयाता॥ ताया॥ यतवास॥
यूजाशु॥ दन्दुशु॥ धूपवास॥
धून॥ ऊऊमका॥ शरदद्वितव॥
शरदद्विदधुऊ॥ लाकखाना॥
कर्णुयठाकाशरतवऊ॥
कर्णुयठाकाशरदधुऊ॥
यश्रयठाकाश॥
अदुवालपाज॥ सिंधुतंगल॥
क्री॥ कापाल॥ तनुलसंकवा

ताठवकन॥ वहुवसमा॥
कमुव॥ कयूव॥ ककुम॥
गानावन॥ धीखणु॥ वकवन्दा॥
याट॥ थाल॥ पू॥ माव॥
पू॥ ताहाकेमाव॥ या॥ मूलनदा॥
व॥ दधुऊकलगा॥ या॥ माधनदा॥
व॥ वगभठकलगा॥ डाहायला॥
याट॥ वलितवधद॥ लंयल॥
वहु॥ यगुलका॥ लंयादुका॥
शरपश्रवन्त॥ डाहायादुका॥
तालपति॥ रुऊवग॥ धियंता॥
गानावन॥ नकायलका॥
मालयथाक॥ रुयखान॥
अकत॥ ना॥ कसुविकोथाल॥
युगुलि॥ अगुलि॥ कयूव॥
कमुवि॥ अकत॥ नवमीसा॥
अकयाटदुद॥ नवमदा॥ वा॥
श॥ समय॥ कोसुकला॥
व॥ न्यानक्षमा॥ तायूवयालू॥
कादुन्यानमालका॥ व॥ क्षमा॥
श॥ वलक्रियतामतायूजा॥

श्रीवाहन॥दासवनमालका॥
 धनदधुकुक्रयाता॥
 मूलसिद्धियातावसवविधि॥
 शुभमतापूजाद्वनयाता॥
 तायसलाव॥पू१००धन॥
 यठवाससलाव॥कावायाश
 ००ताठ०कनमालका॥
 धूपवासगुर्तलि॥सिंधुमूढ॥
 पू३०जजमका॥क्रमकनपा॥
 ०१०मलवकन॥
 पूजाश॥अखालयाताश॥
 व१कलगतहाव॥पू१माव॥
 अर्घ्यव१२॥मावपू२॥
 अर्घ्यपा१२॥मावपू२॥
 वाथलयाता॥कथूव॥
 कृष्णमा॥गोवावन॥
 धनयूलावतय॥
 ज३मा०नीया॥पू१कृतिमा॥
 यातवलि॥या१८घाल॥
 दद३०॥श१४वरुमा०॥
 न०त०॥पूजमलान०त॥

वज्रकुजावन॥श१दृष्टिदधु०॥
 श१कर्तृयताकादधु०॥
 श१यवठाका॥या२अद्वान॥
 मताकमालका॥श२मा०॥
 या१लासायल॥व११धवा॥
 दासकलासमयश१॥
 वतामा०॥व१द्यतिवा॥
 सवनसामयीमालका॥
 क२क०गा०॥पू२अद्वान॥
 खाना॥सिंधव॥यसा॥
 तवस॥वाल॥श्री१दु०॥
 धनयूलक्यावसवविधि॥

तताद्यर्धवीवन्धविधिर्लिख्यता॥
 नकसञ्ज्यावसमतायूजाया
 य॥स्नानकाकायमतंवा॥
 नाध्वनसयूजाद्याय॥वलिआ
 दिनसंयदायद्याध्वनमालः
 कावाय॥यूजासकली॥यूष्य
 राजनसूजन॥नाध्वलधनु
 लियाय॥संयदाययूजा॥द्या
 धलजयवयमूलमन्त्रनक्षत्र
 २॥धूपादिशागर्त॥
 मृगआदिनलायालावस्वस्मि
 कसतय॥नृवक्त्रनादिदीप
 लाहवक्त्रा॥मूर्तिपूजा॥लास
 स्वस्मिकवाक॥मूलवर्गगन
 पूजा॥संयदायविमर्जनया
 दावक्त्रायदक्षिणासहितन
 ॥वन्दनादिप्रतिष्ठाती॥मू
 र्तिपूजायावलिविमर्जनया
 दावद्वयस्कृतय॥
 ताल
 कमुनंयपुनर्वर्णदवस्कृत
 ॥द्वयकाय॥आखनद्वय

षवणशकावालकमाल॥खा
 जसमयकाय॥सकलस्मृति
 य॥दक्षिणा॥
 धवश्थाय
 मरुकुवर्कतयाव॥सूनादि
 ननृवक्त्रनादिदीपलाहवक्त्रा
 ॥नकानक॥कलमारिचक॥
 वन्दनादिसमुल्लासीवोद॥क
 रुकाय॥मरुंआवतिप्रतिष्ठा
 ॥पुष्पवन्द॥वलिविमर्जन॥
 साक्षोथाय॥
 दवक्त्रायाव
 नमस्त्रयादावर्लंआखन
 द्वयकाववय॥तलमंघ्रस
 मूलवृकसद्वक्त्रायमाला
 अखालयादावसलंमायाव
 द्वाय॥द्वयकाय॥नकान
 क॥स्नानकायावसकलस्मृ
 तिय॥शुद्धाय॥द्याध्वनताः
 ययातासर्गनिकायविप
 नधियमाल॥
 ॥तिद्याध्वनसिद्धिविधि॥

र्य ॥ ॐ को नि ॥ ॐ ग पु ॥
 ॐ स व र्यु न म ॥ ॐ स क स म
 द र्या न म ॥ सं दू र्ण क ल गाय
 पा दू कां ॥ ॥ ॥ ॥ स र्व स मू ड
 ॥ स वि त स्त्री र्थो नि ज ल दान द
 ॥ आ या नु म म या ग स्य द वि त
 ॥ द य का व का ॥ ॥ ॥ ॥ क ल वृ
 द म हा स न र्म मा रु लु न स क
 ल ती र्थ म नु द व ता क र ला तः
 व त त्वा धि य त य व क्त वि वृ न
 दा त्म न आ त्म वि आ गि व त त्वा
 ये दू र्ण ॥ सं दू र्ण क ल ग मू र्ण
 य लु लु पा दू कां ॥ आ वा रु
 ना दू र्ण दि ॥ ॥ ध नू मू डी ॥

अथ द व स्ना नं ॥ ॐ अ या दि ॥
 वा क्क ॥ ॐ का र्वा य वी ज मि
 र्या दि ॥ दू दू या ॥ य य सा य य
 रू र्या दि ॥ ध वि या ॥ द धि वा मा
 पा ति र्या दि ॥ य ल या ॥ दू त दू
 त र्या दि ॥ क र्मि या ॥ ॥ ग मू र्वी

ग कि ना र्या दि ॥ सा ख ल या ॥ ख
 पु म त त्म हा र्या दि ॥ र्वा मृ त
 या ॥ त था र्वा दि र्या दि ॥ ज ल
 स्ना न ॥ पी स मू र्ण ॥ अ लि स्ना ना
 मू ॥ ॥ ॥ लं ग र्क या द व द र्या
 ॥ ॥ ॥ ॥ क त न नि द व वा ख न त
 य ॥ ॥ ॥ ॥ व त या ॥ पी र्व पु
 ध न्द न र्या दि ॥ सि ध व या ॥ वी
 व ध वी म हा ॥ अ द्वा त ॥ अ द्वा त
 अ द्वा र्या दि ॥ द रि ॥ स र्व म
 र्थे क पा ताल व रु द ग य द रि
 कां दि य व रु द ग ला र्थ ॥ द
 रि कं पा ति रु क्तां ॥ ऊ ऊ म का
 ॥ य र्ण प वी तं य व र्म र्या दि ॥ अ
 द वा व ॥ ना ना व म वि वि र्ण र्ण
 द्वा म का र्या मि मि र्ण र्ण व र्ण
 रू व र्ण ॥ य र्ण रू व र्ण न व र्म म य
 व र्ण ॥ व रु ली मा रु ॥ व रु वि ना
 म र्ण दि र्ण रू व रु नि र्ण मि
 र्ण र्ण न द र्ण न द र्ण नि र्ण दि
 म वि नि र्ण रू ल ॥ स्ना न ॥ ना ना

वृष्यत्यादि ॥ यंत्रयथाका ॥ व
 टाकाय ३३ वर्णां कर्णुथा ४ य
 तिलमिनी ॥ य ३३ रूतात्मिकायंत्र
 दल्यंत्रोमनिर्मिता ॥ कर्णुयः
 टाका ॥ उद्धर्षिंदूत्रवर्णां य
 टाकां कर्णुयं कर्णुकारि टहानयत्र
 मणानि वहुकाणां सुणा रूनी
 ॥ ७७ ॥ धर्तृयलय ॥ ७७ ॥
 यतवासनवाय ॥ जायुजावा
 यमालक ॥ ७७ ॥ दधूस ॥ वा
 जनादिर्मयदायवाय ॥ ७७ ॥
 दधूस ॥ ताल ॥ द्यादल ॥ आनू
 लगा ॥ गच्छ ॥ दानिसारूल ॥
 तालयति ॥ मूत्रज ॥ काठा ॥ का
 हाव ॥ रुवि ॥ विना ॥ लंखा ॥ य
 ३३ रंगशहा ॥ सलाकिनिआदि
 नवाहन ॥ डववानु ॥ ससु ॥
 अमुदक दधूसंवाय ॥ डववा
 नुवाय दक ॥ ७७ ॥ जवसवाया
 खि ॥ वदूल ॥ कल्लि ॥ वदूल
 ॥ कास ॥ धागामा ॥ रुमत्र ॥ ख

इवाण॥  ॥ ख व स वा य ॥ खिं
 ॥ व दू ल ॥ ध्या व ल ॥ वा ज न रा
 नि दू ल ॥ व गा वा ॥ वि दू ल ॥
 ग या ठ ॥ ध नू ॥  ॥ य त वा स
 न वा य ॥ ताल खिं क खिं ध्या
 व ल का ठा मू नू ज ध्व तं य ता स
 स्त्रि क वा या व त य ॥ ग दू ताल
 य ति द्र णि सा दू ल वं ग था हा
 द्या द ल आ वू ल ग धू तं या ता
 अ म्बु प न वा य ॥ य ल स क न स
 म र्म म लु ल वा य ॥ स क ल र्म व
 लि क्क पा त क्क पा त क्ष वं त या
 स म दा य स क ल र्म वं त सिः
 दू व ऊ ऊ म का स्त्रा न त य ॥ 

 अथ द वा र्च नं ॥ गि त त्व ना व श्य
 ॥ सूर्या द्य ॥ अश्या दि ॥ वा क्क ॥ व
 लु कि द्या दि ॥ गु वू न म स्का वा
 अख गु म गु ला द्या दि ॥ ऊँ काः
 वं न्या स ॥ ऊ ल पा न दू जा ॥ ग
 य गी ॥ स रु स वा रु व द्या दि ॥
 ह का व न वा रु व न २

ॐ तिष्ठति तिष्ठति सिद्धि लक्ष्मी मते च
काण्ड जय द्रुथ विद्यायी ० धर्य
गीर्थाक्ष गावलिथी ० रुवसमाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

पंचवल्लिखाद्यावविय ॥ आवा
हनयासापत्रायत्रान ॥ तिष्ठ
व ॥ थागिनी ॥ ॐ ॥ धनामाल
माकलणयुजा ॥ ॐ ॥ धनायधि
मडलुत्रयामालकायाया ॥ ॐ ॥
जवस ॥ नद्विपूजा ॥ खवस ॥ म
हाकालयुजा ॥ मध्या ॥ क्षणयाल
युजा ॥ ॐ ॥ रुनुमान ॥ सुमुखी
वकुला ॥ ॐ ॥ आम्नायमालका
याय ॥ ॐ ॥ निवपूजा ॥ आम्ना
वणकथयादि ॥ ॐ ॥ सिंहस्त ॥
यतास्त ॥ ॐ ॥ महानृथयवया
दि ॥ आवाहन ॥ ध्यान ॥ ॐ नमो
वकुंठिनर्थादि ॥ मूलमनुन
दियाअलिश ॥ ३ ॥ वलिश ॥ वरुण
॥ गायत्री ॥ मरुप्रवाहवयादि
॥ वलिश ॥ ॐ ॥ निवपूजा ॥ विष्णु

क्षणादि सिद्धिप्रदानकर्तायु
जा ॥ नकिपूजा ॥ वामादिचक्र
धीणकर्तायुजा ॥ धर्मनवल्लि
॥ ॐ ॥ डरुयपूजा ॥ नवात्मा ॥ न
वात्मागकि ॥ अद्याव ॥ वज्र ॥ व
तिनीय ॥ अष्टविंशतिगित
गकि ॥ मूलसुनकडिका ॥ रुका
वसकावनवाक्षत्र ॥ कालि ॥ ति
पूत्र ॥ लिखा ३ ॥ महाकाल ॥ स
र्वसौभाग्यध्वनी ॥ यश्चमी ॥ ध
तडरुयपूजा ॥ ॐ ॥ नववस
पूजा ॥ गृंगार ॥ वीर ॥ कवण
॥ अरुण ॥ हास्य ॥ रुयानका
वीरुस ॥ वीर ॥ गान्ध ॥ ॐ ॥
मूलमनुनदियाअलिश ॥ वलि

अथवल्लिविय ॥ दासुकलाका
याव ॥ पूर्वस ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
लायवल्लिष्टकश्वाहा ॥ दक्षिः
णस ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
लिष्टकश्वाहा ॥ यथिमस ॥ ॐ

ह्रीं गंगाय नमः वलिं गृह्णन् ॥
 हा ॥ उरु ॥ उं ह्रीं यां सर्वथाः
 गिनीया वलिं गृह्णन् ॥
 नद्विधाया लस ॥ उं ह्रीं न नद्वि
 न वलिं गृह्णन् ॥ महा
 कालयाया लस ॥ उं ह्रीं मं महा
 कालाय वलिं गृह्णन् ॥
 मूलयाया लस ॥ उं ह्रीं सर्वविघ्न
 हर्त्राया वलिं गृह्णन् ॥
 स्वाहा ॥ मूलयाया वलिं गृह्णन् ॥
 उं ह्रीं ह्रीं श्री नृत्त्यं प्रमहारे
 ववा ॥ श्री नृत्त्यं प्रमहारे
 गकि ॥ सहि ॥ गायत्री मा
 ह्रीं गृह्णन् ॥ उं ह्रीं नृत्त्यं
 प्रमहारे ववाय सर्वविघ्न
 हर्त्रा वलिं गृह्णन् ॥ सर्वसिद्धिका
 वलाय ह्रीं वलिं गृह्णन् ॥
 हि ॥ ह्रीं रुद्र स्वाहा ॥ उं ह्रीं नृ
 त्यं प्रमहारे ववाय त्रीदश
 दाति त्रीदश पदीकाय युगा
 का वकस्य पुराय तथथा रुद्र

दह ॥ यव ॥ मथ ॥ कन ॥ स्त्री ॥
 रिंद ॥ यन ॥ कृतं ॥ यन ॥ का ॥ यति
 यन ॥ यति ॥ दह ॥ दह ॥ निवी ॥ स
 र्वतत्त्व मू ॥ ३ ॥ स्वाहि ॥ यव ॥ मव
 ना ॥ य ॥ २ ॥ अग्नि ॥ का ॥ य ॥ २ ॥ य
 व ॥ १ ॥ सु ॥ सु ॥ य ॥ १ ॥ क ॥ क ॥ न ॥ नि ॥ य
 ग ॥ य ॥ सु ॥ सु ॥ य ॥ १ ॥ व ॥ स ॥ वा ॥ भ ॥ व ॥ ना ॥
 य ॥ २ ॥ ह्रीं रुद्र रुद्र रुद्र स्वाहा ॥
 ॥ तिना ॥ रुद्र वलि ॥



ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं रुद्र यद्वा द
 सह गा ॥ वगा ला ॥ ४ ॥ रुद्र पालः
 का ॥ गकि ॥ यथ ॥ तथा ॥ माला ॥ दृष्ट
 ना ॥ कट ॥ दू ॥ तना ॥ १ ॥ यी ॥ ० ॥ जा ॥ ४ ॥
 रुद्रा ॥ शिव ॥ गर्ज ॥ जा ॥ ४ ॥ सह ॥ जा ॥ तथा
 त्या ॥ ग ॥ जा ॥ म ॥ नृ ॥ जा ॥ शिव ॥ कूल ॥ जा ॥
 वि ॥ ल ॥ य ॥ ४ ॥ २ ॥ नाना ॥ दू ॥ य ॥ ध ॥ वा
 आ ॥ न्या ॥ था ॥ गि ॥ न्या ॥ व ॥ ल ॥ व ॥ क ॥ वा ॥ शा
 ना ॥ ना ॥ द ॥ ग ॥ ति ॥ वा ॥ सि ॥ न्या ॥ अ ॥ मि ॥ न
 व ॥ क ॥ स ॥ मा ॥ ग ॥ ता ॥ ३ ॥ स ॥ म ॥ या ॥
 न ॥ य ॥ वा ॥ य ॥ तथा ॥ व ॥ व ॥ लि ॥ का ॥ दि ॥

गृध्रानुतागवेदित्रोर्गधयथा
दिरुमुषे॥४॥गृकाददनुम
कामान्वास्तिगार्थददाकुम
॥कूं कूं कूं रुट् वलिं टक्र २ स्वा
हा॥ॐ तिदुर्गो वलि॥
धनवलि विय॥मूलम
नुनरियाऊलिशा वलिशा वरु
गनदूजा॥आवाहनादि॥१५
न॥यानि॥खड्ग॥उमव॥जिपू
ल॥नृस्यमूर्धादगयत्॥
निर्वाणश्चाय॥वलि॥ताक
महावलि नधनक॥आवाहना
दि॥जिपूल॥यानि॥नृस्यम
र्धा॥संयदाय॥बहु४ स
क्ता॥गाल॥ॐ कूं नं वतीग
मूर्कथतालाय नमः॥जवखिं
॥ॐ कूं नं नद्विमलुलाय नमः॥
खवखिं॥ॐ कूं मं महाकालम
लुलाय नमः॥काठा॥ॐ कूं कूं
सनावायलाय नमः॥जवकट
खिं॥ॐ कूं जं कूं कूं कूं गिखं

सकृदमहारुववाय नमः॥ख
वश्चावल॥ॐ कूं मं महाकाला
यसर्वगकृषमर्दनाय महारु
ववाय नमः॥१६मास॥ॐ कूं
कूं कूं स्वकृदमूर्कथे नमः॥
जवसकाग॥ॐ कूं कां स न
थे नमः॥वकुल॥ॐ कूं कां सध
वाये नमः॥खवसवाजन॥ॐ
कूं कां सदर्माय पत्रये च विरु
तासनाय नमः॥जिक्काल॥ॐ
कूं जं कूं वमूर्कथकां स्याये नम
॥जववकुल॥ॐ कूं कं कोण
स्याय नमः॥खववकुल॥ॐ
कूं जं कूं मूर्कथे नमः॥खगा॥
ॐ कूं कूं कूं किं किं रुनादायः
नमः॥गाकृ॥ॐ कूं कं कालमू
र्कथनिब्रज नपदाय नमः॥
नगादा॥ॐ कूं वीवनादाये नम
॥धननं वलि॥आवाहनादि
॥मूडा॥ॐ ति संयदाय दूजा॥
मालसाधनायाय ममालसाम

याय ॥ उद्यवा नुवाय दको ॥

मूलादि नवग्रह नमो नित्याञ्ज
 लि॥ वलि॥ निर्वर्ण शुभ ॥
 स्वाकमहावलि नवूनक ॥ आ
 वाहनादि॥ मूला॥  ॥ ध्रुव
 ॥ दीप ॥ नेवश ॥ जाय ॥ छिद
 व ॥ थाप्ति ॥ हकावसकाव ॥ न
 वाक्षव ॥ निर्वर्णया ॥ 
 साग ॥ अखण्डमण्डला ॥ श्री स
 वर्णा ॥ वन्द्य सदा ॥ श्री सासन ॥
 सिद्धवसा ॥  ॥ दु
 कावा ॥ वृक्षाणी ॥ श्यामावका
 ॥ उल्हा ॥ नमो मुहुर ॥ उवि
 ष्टपूर्वगा ॥ उंकावासन ॥ श्व
 तपद्मासन ॥ कर्लिकापालि
 ॥ काकास ॥ उँदुगा ॥ मेहाकाः
 ल ॥ नृत्त्यव्रया ॥ पुद्गलार्क
 दि ॥ यथावान ॥ अङ्गुली ॥
 नमस्काव ॥ दक्षिणा ॥ तर्जणा
 पीतयता ॥  ॥ वृष्यवृजा ॥

यजुजाग॥ हवतसाव॥ 
 समयहाय॥ तथ्येण॥ श्रीतथ्यता
 ॥ नयमतव॥  ॥ दवकाया॥ ऊ
 वयाजवखवयाखवदधूया
 दधूमदावकंआवायनआका
 ववय॥  ॥ दक्षिणा॥ नकान
 क॥ स्वानकाकाय॥ दतसाकल
 गविसर्जन॥ कृष्णतयावजु
 विश्वक॥ मदतसाचन्द्रनादि॥
 सुगुआदिनसकलस्वानवि
 य॥ वलिविसर्जन॥ साक्षिथा
 य॥ ध्वतंभूदावमुखालवया॥

 मुखालयाआदसमूर्द्धचन्द्रवा
 य॥ ३॥ जवयाजवखवयाखव
 दधूयादधूमदावकंदवसाना॥
 सुगुपूषराजनशकायाचका
 वमुखालपिवनंतय॥ 
 पटवासनवायाववलिआदि
 नजापूजावाय॥ संपदायवा
 य॥ ताल॥ जवखी॥ खवखि॥ क

स्त्रि॥ ध्यावल॥ धमास॥ नगावा
 ॥ कास वृककुल॥ वाञ्छनगिक
 कुल॥ जववकुल॥ खववकु
 ल॥ मगा॥ गाकु॥ धाक॥ म्बहा
 लि॥ ध्वतवाय॥ ॥ कलगा॥ मि
 धमूठ॥ क्रकनवाय॥ ॥ दू
 र्वततजवाञ्चनकावथत॥ ना
 सावसेयाकैवालकैयायो॥ गार्ग
 लनीयाय॥ ध्वतधूठाव॥ मूठ
 अखालसलासालावठय॥ स्व
 स्त्रिकसमान॥ नृवकुनमम्या
 लकवततय॥ लकायकानगा
 ल॥ ॥ १॥ अम्यायठठ॥ ३॥ रूत
 वलेश॥ रूतायविविधायादि॥
 मनाविय॥ सुप्रकाश्यादि॥ म
 म्यालवलिवायक॥ ॥ मताख
 नत्वाय॥ यक्षात्यगिखायेस्वारा
 ॥ तालवानत्वाय॥ आत्मतत्वाय
 वक्राणनम॥ नारी॥ विशात
 त्वायविक्रवनम॥ द्वाद्वि॥ नि
 वतत्वायवृद्धायनम॥ सत्रु

लंत्वाय॥ ॥ मूठवठु११संकावा॥
 मूलननिनीकली॥ अमुलायाक
 ला॥ तनताठनी॥ कवचनावयु०
 नी॥ धनमूडाअमृतीकथ॥ ॥
 गायनादिया॥ हस्तसस्त्रि कः
 वाय॥ मूर्तिमूजा॥ तावधवा॥ ॐ
 कूं विष्णुवतावधवमूर्त्यनम
 ॥ ॥ जवखिंथाक॥ ॐ कूं ननद्विम
 लुलमूर्त्यनम॥ खवखिंथा
 क॥ ॐ कूं वं वक्राणमहावायात्म
 महाकालमूर्त्यनम॥ कस्त्रिं
 थाक॥ ॐ कूं गिखास्त्रिं मूर्त्य
 नम॥ ध्यावलथाक॥ ॐ कूं मं
 महाकालायमूर्त्यनम॥ ॥ ध
 मास॥ थाक॥ ॐ कूं जांजीं कूं स्व
 कृदमूर्त्यनम॥ नागावा॥
 ॐ कूं वीवनाममूर्त्यनम॥
 जववकुलथाक॥ ॐ कूं कं की
 गत्यामूर्त्यनम॥ खववकु
 लथाक॥ ॐ कूं र्जर्मममूर्त्य
 नम॥ कासथाक॥ ॐ कूं कसि

दूर्गा मूर्त्यनमः॥ वक्रचालथा
 क॥ ॐ ह्रीं कां गधनमूर्त्यनमः
 ॥ वाजनथाक॥ ॐ ह्रीं कां सदूर्गा
 मूर्त्यनमः॥ गिकचालथाक॥
 ॐ ह्रीं ऊर्ज नमूर्त्यकां स्यायेन
 मः॥ द्रवगा॥ ॐ ह्रीं जी जी किं सिंह
 नादमूर्त्यनमः॥ ऊर्जवखवगा
 च्छकालपूजा॥ ॐ ह्रीं कालात्मनं
 निवर्ज नयदधवात्मकमूर्त्य
 नमः॥ ॐ ह्रीं मृत्युञ्जय नयदध
 वात्मकमूर्त्यनमः॥ धाक म्व
 हालि॥ ॐ ह्रीं सर्ववायववात्मः
 कमूर्त्यनमः॥ ॐ ति मूर्ति पूजा॥
 ॥ सैषदायविसर्जनयादा
 वदन्दितासरितन पूजायादा
 क॥ ॐ नैथवथवलवक्त्राय॥
 वन्दनादि॥ सगान॥ आणी चो
 द॥ मरुता आवाते यतिष्ठ॥ यति
 ष्ठितागित्यादि॥ ॥ ॥ दवक्त्राय
 क॥ गभक्तयाव॥ नान्दिशोक
 यययुवन॥ सून्यमहालक॥

धनलिमिजनपाश्यामिजनथा
 नकायक॥ मिमापाश्यामिमा
 धानकायक॥ ॥ धनलिधवक्त्र
 वक॥ दवक्त्रसमयकाय॥ सक
 लस्त्रीविय॥ ययनथियथनाग
 दन्दिता॥ नकानक॥ स्वानकाका
 य॥ दतसाकलणविसर्जन॥ द्वा
 सकनतयाव॥ कलणविधका
 वन्दनादि॥ स्वानसकलस्त्रीविय
 ॥ वलिविसर्जन॥ साक्षीथाया
 ॥ तिथीनवमाहृकादिनाटक
 स्यनृत्यावमुविधिः समाक॥
 नृत्यावमुयावसथविधिः॥
 कृण॥ होमल॥ श१ पूजा॥
 शजद्वनयतामतापूजा॥
 ताया॥ यतवास॥ तं हावय॥
 पंवामृत॥ द्वा१ अर्कत॥
 सिंधव॥ द्वा२ अर्कत॥
 ऊजामका॥ पा३ अर्कवाव॥
 या४ धवि॥ लूकाट३॥ दृष्टिश३॥

कर्तुपटाकाश३॥ पृ२० धून॥
यश्चपटाकाश३॥ वलियाट॥
धूपवास॥ गुगुलि॥ जायूजा॥
बूतालवकन॥ यीवदूमाठ॥
दन्द॥ नवत॥
मलानंदतपू२॥ यश्चलजा॥
दासकलायतामाठ॥
सवूनयवा॥ न्यानक्षवाव॥
न्यानघलियाव॥ क्री॥ वाहन॥
समयविययतासवूनमालका॥
अर्घ्यव॥ मावपू॥
अर्घ्यवाव॥ मावपू॥
कलगतहावव॥
कलगमावपू॥ कसकनया॥
सिंधमूठव॥ दवाल्यावपू॥
धूपदह॥ सलिसमालका॥
सखानसिखवदक॥
धतनाधवस॥ तयविधि॥
तययाअखालसवसय॥
पूजाश॥ तहावव॥
ताय॥ यतवास॥ सिंधव॥

जजमकापृ२०॥ अद्वानद्व॥
अद्वानवाश॥ कर्तुपताका३॥
यश्चयताका४॥ धूपसगुगुलि॥
धून२०॥ दहि३॥ जायूजा॥
यकनमालका॥ यितालमालका॥
वलिया॥ दन्द॥ नंदत॥
मलानंदतपू॥ गालजाव॥
आवति॥ यवयति॥
वदूमाठ३॥ दासकला॥
सवूनयवाव॥ न्यानक्षव॥
अर्घ्यव॥ मावपू॥ सगाना॥
कलगतहावव॥ पू॥ माव॥
नका॥ दका॥ सकाठ॥ मतं॥
तालवा॥ कसकन॥ सिंधमूठ॥
दवाल्याव॥ धूपदह॥
संघदाय॥ ताल॥ जवखि॥
खवखि॥ कखि॥ धावलखि॥
धमाय॥ नगावा॥ कास॥
वककुल॥ वाजन॥ निककुल॥
जववकुल॥ खववकुल॥ यगा॥
गावु॥ धतअखालसवसय॥

दण्डकथानसायिदादाथाय
सं नृत्त्यध्वनादिपूजापिदादाया
थंश्चाखनकूयकविधिथं।
धनं दण्डकथानविधि।



अखाललितातयश्चाखनधून
क॥विधिलिखितं।
नृत्त्यध्वनायनमः॥राजकुलि
समतापूजा॥याय॥अखालस
मतापूजायाय॥चन्द्रनादि॥पू
ष्यान्त॥गुर्वस्मत्रली॥नंनद्विन
नमः॥मंमहाकालायनमः॥ह
कावसकावनवाहव॥मूलम
नु॥अरु॥गायत्री॥सरुपवा
हनायत्यादि॥आवाहनादि॥
थानिमूर्त्ती॥धूपदीपनेवय॥
जय॥सोम॥अखलुमलुला॥थ
समूर्त्ती॥वक्राती॥आमावक्रा
उत्कृष्टा॥डुकावा॥काकास॥
आनन्द॥यथावान॥अरुगंक्ष
दि॥॥समयद्युय॥तर्पण॥थ

तिथितात्यादि॥नकानजम्भ॥य
वअवात्रासर्वविसर्जन॥कास्यं
नयादवजवखवदधूमदाव
कंआवायनआदाव॥नाम्न
सपूजाद्वाहवनं॥गुर्वस्मत्रली
लिङ्गाआदिनमकल्य॥माह
नीकाल॥अखलुमादि॥



आदाववदादवजवखवदधू
मदावकं॥पूजासंकल्य॥अं
यादि॥वाक्क॥यजमानस्यमान
वसंगणनीनीसमतिजयजि
तामिहमन्त्रदववर्मणाणीनी
नीस्वहदवतासीतिकामकृत
नवमातृकादिनाटकस्यत्रि
गुर्गुर्वस्मत्रलीनीनीकृद्विकसि
द्विलक्ष्मीमूर्त्तिनृत्त्यध्वनमहा
ववसिद्धध्वनाधनस्यसौगाया
नर्पवायवावपूजाकावयिष्य
॥यजमानादिसुगुर्वस्मत्र
जन॥अयादि॥वाक्क॥नीसम

रु॥ वक्राणा॥ ग्रामावका॥ डव
श्री॥ दुकावा॥ काकाय॥ अन
द्वगकि॥ सिद्धिबसु॥ यथावान
॥ पृथराजनं समर्थयामि॥ अ
वार्थलवकाय॥  शिवावम
॥ गुनमसुव॥ अखण्डमण्ड
जांकारं न्यासः॥ जलपात्र॥ ह
कावनवाकव॥ गायत्री॥ अर्थ
पात्र॥ सकावनवाकव॥ हतपु
द्धिजांकारं॥ आत्मपूजा मूल
ना॥  आवाहनयासायवाय
वान॥  गंगादिआवाहन॥ त
हावदपूजा॥  दवस्नान॥
अथादि॥ दुकारं॥ यंत्रामृता
तथापञ्चदि॥ जल॥ पीसमूर्त
॥ सकावनअलिस्नान॥ लंगर
याकावदध्याकृतनवाखनस
त॥ वन्दनादिपूषाक॥ दक्षिः
कर्तुपताकाआदिनक्कायलय
ता॥ यतवासनत्राय॥ आपूजा
वायमालका॥ धनंभूदावा॥ 


अथदवाचनं॥ शिवालावम॥
गुनमसुव॥ अखण्डमण्डला
जांकारं न्यासः॥ जलपात्र॥ हका
वनवाकव॥ गायत्री॥ अर्थपा
त्र॥ सकावनवाकव॥ जांकार
नहतपुद्धि॥ मूलनआत्मपूजा
॥  दक्षवलि॥ शिलाग्रथन
मस्तुत्यादि॥ यंत्रवलिखाकाव
विश॥ आवाहनयासायवायवा
न॥ मौलसाकलगपूजा॥ शिद
वा॥  यष्टिमयामालका॥ ड
रुवयामालका॥  अवसनदि
॥ खवसमहाकाल॥ दधुसद्वेण
पाल॥ हनमान॥ सुमुखी॥ वक्र
ला॥  वाजकुलिसमालका॥
 मूल॥ आक्षवगकथयादि
॥ च॥ वृष॥ सिंह॥ यत॥ ध्यान॥
उकवकुंठिनर्तयादि॥ मूलम
नु॥ अक्ष॥ गायत्री॥  गिव
पूजा॥ विष्णुद्वेणपालादिसिद्ध

चवानं पूजा ॥ गकि पूजा ॥ वाम
 दिवदुष्टीण नं पूजा ॥  ॥ उ
 रुय पूजा ॥ नवात्मा ॥ नवात्मा ग
 कि ॥ अष्टाविंशति ॥ अष्टाविंश
 ति ग कि ॥ अष्टाव ॥ वज्र ॥ वती ॥
 निजय ॥ मूलस्तन ॥ कुडुका ॥
 रुकावसकावनवाकन ॥ कालि
 ॥ जियुव ॥ निखा ॥ ३ ॥ महाकाला
 सर्वसोरायस्वरी ॥ यंत्रकूटा
 ॥ नववस पूजा ॥ नयुर्ली ॥ मू
 लमनु ॥  ॥ वलिविया ॥ नृ
 यधनवल्लिशा ॥ नृयधनमहा
 रेववायत्यादि ॥ वलिशा  ॥


 कामकलाकायाववलिविया ॥
 नंजोलीं कुंको ॥ १ ॥ ३ ॥ कवर्णु कः
 कामवृषं वनविद्वलगतजाल
 यी ॥ ० ॥ जयन्ता वद्धा ॥ ० ॥ मध्यायी ॥ ०
 जियधगति युतादविर्गंगाद
 काना ॥ आवाय्या सिद्धिसं अतदनु
 कूलयूगवधुयामिद्यवृद्धय

काहं य ३ का अ ठ व ल क म ह
 याद व द वि न मा मि ॥  ॥ ३
 तिनिर्वानया वलि ॥  ॥


 जयारुदिव्या नवीक्षदगदिनि
 रुवनसकपातालमूलक्षयः
 यी ॥ ० ॥ ययी ॥ ० ॥ विषमवदुप ॥ ०
 मलक वासगानरसि ॥ ० ॥ सी ॥ ०
 कवृक्षददविपुरुतदधूमका
 वावताव कालय्या पूषुगीर्याम
 यवपूवववडाहिया नयधाना
 ॥ जालाश्रयागमुख कलपति
 नगवकामवृषसवृष उर्ज्या
 महहायपदयठदवललाठ
 द ॥ ० ॥ यद ॥ ० ॥ १ ॥ ० ॥ लयालि
 जातयधुपति निलयहमवि
 न्यावलसूणीमाका म्वाद ॥ ० ॥ मवृ
 तप ॥ ० ॥ गिवोजकिनीसाकिनीनी ॥
 शाका ॥ ० ॥ मीववावृद ॥ ० ॥ ३ ॥ विठम
 लयकवृक्षवाहकलूत ॥ सी ॥ ०
 अरुकाठार्क ॥ ० ॥ वसिविवजकसि

द्विद्वन्द्वगुहावन् नृणां पात्रिप
उहिमगिनिगिखवकाश्चिदः
लपय्यागसोवाभुमध्यादलरु
युधुवनगवकागलकम्बुकावा
आकलुठकाकागवामगधपूव
ववकर्तुकुङ्कुकरिगवकुभरु
सवाहहिमवजपटलपातल
आमवाखाः अमोहमादुवक
मृनिगलनियतादाहलवानुद
लवामावपूष्यवाख्यागिनिगहि
वगुरुवाकुवसिंहनाद॥४॥
वक्षस्वरीमनादगिवधुवन
गवरुडकूलजयाख्यापीविद्या
श्लोककुण्डववगिनिगितठयक
कम्बुवलकाववागस्याविना
लुगिय० मृनिग० पुष्टकूलव
मालमसुकाकसुकुमालमलय
गिनिगुहावकादलपयवा॥
आरुडाः मूलसुनयकृतिपू
वलथसिंहकाकुसुमाकृतिगि
उद्याममाधुसूवववसयनग

कलाख्याललसूयागिनामलु
आश्चर्यविविधवधनतामातवः
मुधसर्वाधुक्षासिद्धाससिद्धा
विविधवधनतादिद्यसिद्धिदद
नु॥५॥ खड्गमामनुसिद्धिपवव
वविगनखगतिंलावनमगल
कम्बुविदूलवलिलालितजयं
कूनसर्वविद्यादीर्घायुष्यकवि
खनिधिवसगुटिकायादूकाका
मसिद्धिसर्वाख्याताददनुअलि
पिगितवतारुववत्यानूवका
॥६॥ दृष्टव्योविमात्रियहगल
गलवजपाठवलावावाजद्वान
जलोद्यविद्यठयदुरुयध्यायि
तधर्ममूठारवौकुंकावयनी
हहहहहसितेध्वयनीपिव
नीनृत्यनीमनुमाताकिलिकि
लिवरुसकोलरायासिवनी॥
७॥ साधुकाकामनूयायवलवः
यटहाहाहकूकावनादा उच्चि
हानीलकाः अमवसूददया

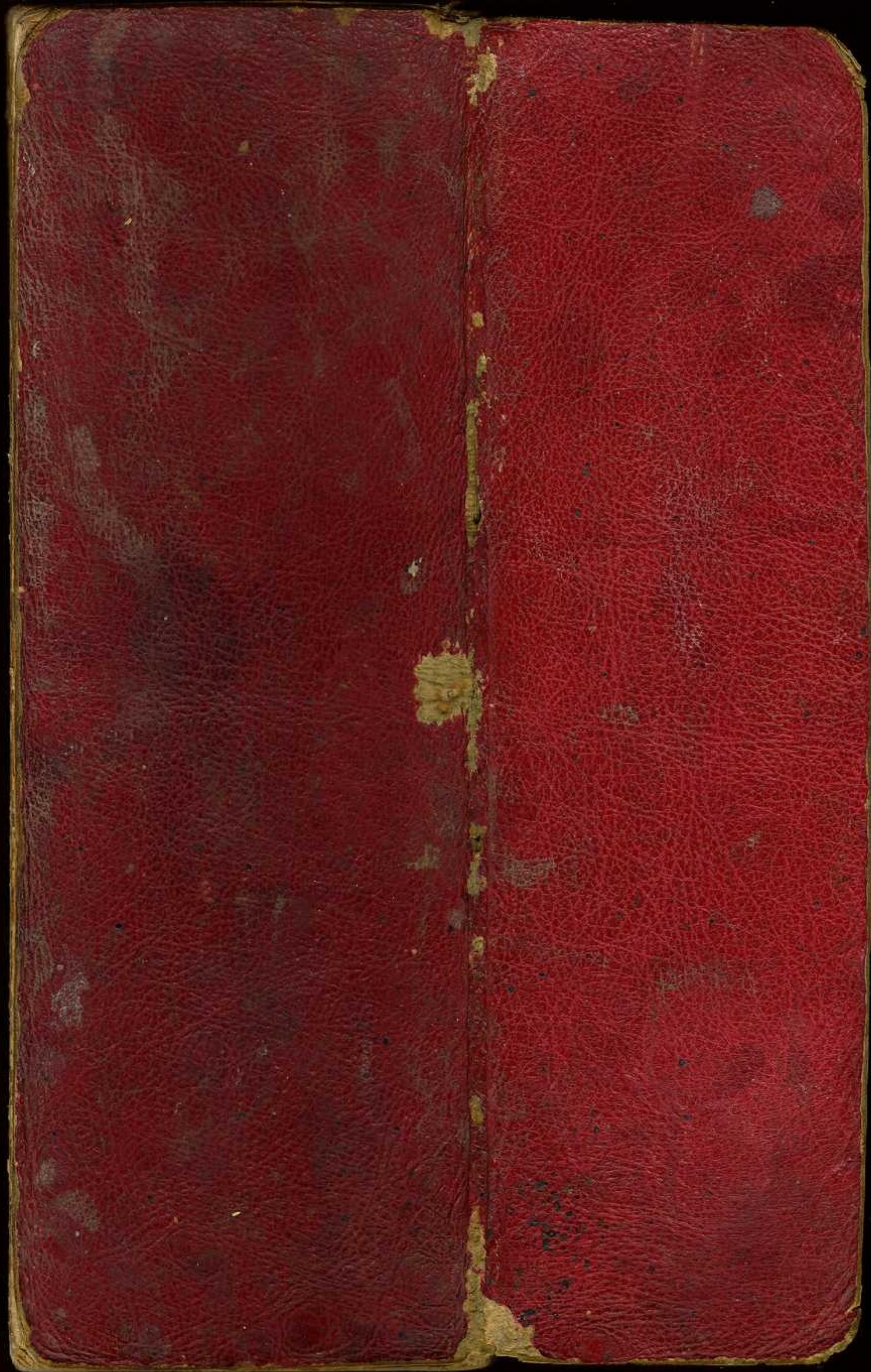
विन्दुमूर्ध्निषण्माखंडंखंडंकात्र
 यन्निवृत्तवृद्धिवसदाख्यमाः
 नासवाभाजिद्वार्यलालयनी
 ललललललताडावयनीधि
 वनी॥९॥कृष्णकामाख्यदूती
 अमवयुगानूताविन्दुनादान
 लीनागङ्गानसिद्धिदामायवम
 यवगतावर्द्धितावक्षमक्ष।वा
 गलालाकपालीगसयवनयू
 तापार्थिवनानूकायवृष्णवि
 द्यूकाकूलकमलवताताव
 लीकृष्णलाख्या॥१०॥विख्याता
 वृद्धाकिंसेवदिगुगिर्वरी
 वलीरुद्रयनीकांकांकां काम
 नूपाअकूलकूलगताद्विदिगा
 रुद्रयनीसामंभीकृद्विकाखा
 वितवृद्धयवमंवासादेवत्वमा
 र्यवामुष्ठाकोलमार्यकूलक
 मसमयकोलिनीकाद्विदिगा॥
 १॥आख्यातावाममार्यकटि
 तनिलथमालिनीविन्दुदहाडं

कात्रमणुलवाअकूलकूलमया
 थागिवकयतिशाखीनाथासं
 गसामावववमृतिगलेध्विना
 रीममूर्ध्निषादवीलाकमाताः
 गिवसकलमुखामादृणीनाथव
 क॥१२॥लीकृष्णवृत्तमानावृ
 र्गसहितामध्यालि(क्षमिकाखा
 पी०कृष्णवृत्तयनीवकवकितक
 लाकोलमात्रादितारा।नामाणी
 कृद्विकाखागिप०गतियूताग्रा
 दनागिषकावाताद्वीतोमिरु
 द्वायकटितनिलयायवृकाथ
 करिना॥१३॥कालीकंकालनूपा
 कलिततवववालीवनीरुद्रय
 नीसामंभीकृद्विकामावकटयनु
 महाकानदिद्योद्यमाद्यं॥जीहू
 जीहूजीहूजीहूजीहूजीहू
 जीहूजीहू॥मदिन्दुहि॥सिद्धिन्दुहि
 ॥रुनंदहि॥आर्यन्दहि॥धनंद
 हि॥धनंदहि॥लक्ष्मींदहि॥
 मांमहावर्तिटका२अमृतावश

ब्राह्म॥ इति महावलि॥ 


यजमानरिया अलिमूलमनुः
न॥ कठंगा॥ वलि॥ आवाहना
दि॥ मूर्धादणयत्॥ ॥ निर्वो
लक्या॥ वलि॥ ॥ वाकमहा
वलिनधूनक॥ आवाहनादि॥
मूर्धादणयत्॥ ॥ धूप॥ दी
प॥ नैवेद्य॥ जप॥ छिद्रव॥ मू
लथा॥ निर्वोल्या॥ ॥ स्मृता
अखण्डमण्डला॥ लीसम्वर्त्ता॥ छि
द्रव॥ यागिनी॥ ग्रामावका॥
उद्धृत्ता॥ हनुरेववया॥ समू
खीया॥ वद्धन्त्याया॥ नन्दिना॥
महाकालथा॥ मूलथामालका॥
यथावान॥ अङ्गगंधादि॥ ॥
दक्षिणा॥ नमस्काव॥ ॥ तर्प
ण॥ पीत॥ यथायादि॥ ॥ य
लिङ्गमात्रमाहनीतान॥ सकः
लङ्गनयक॥ तालपतियाडाव
धीपिकाय॥ खणिसङ्काय॥ 

माहनीकाल॥ तालपति ससु
अमुदकआनक॥ वाक्का॥ क
माप्नुति॥ त्वंगति॥ सर्वरुताना
संस्तिर्नवववाचनं॥ अकथाव
लङ्गताना॥ दक्ष॥ त्वंपत्रमध्वरी
॥ कर्मणा मनसावाचातुतान्या
यादिकर्मसु॥ अकृतं वाक्काही
ननु तत्तुष्टुत्रं महध्वरी॥ मनु
हीनं क्रियाहीनं रुक्हीनकः
थेवत्र॥ जपहा मावर्त्तनहीनं क
मतांपत्रमध्वरी॥ दक्षिणा स
हितन आचार्यलवलाय॥ आ
चार्यनदूत॥ नमस्काव॥ ताव
क॥ ॥ वृषयूजा॥ पशुजाग
॥ समयक्याय॥ तर्पण॥ पीत
ता॥ नकानअम्ब॥ कलसदत
सा॥ कलणरिषक॥ वद्धनादि
॥ मदतसास्त्रानविय॥ वलिवि
सर्जन॥ साक्षिथाय॥ ॥ इति
तिनवमाहृकादिव्याखनया
लितातयविधिसमाप्त॥ 



28/11

१६० नमः श्री महागणेशाय नमः
श्रीगुरुवाक्यकथानमः ॥ श्रीग्री
श्रीकृष्णसिद्धिलक्ष्मीमूर्ति नृ
स्यध्वनमहारुद्रवसिद्धध्वनाथ
नमः ॥ ॥ नववसादिसिद्धिपू
जाविधिलिखित ॥ ॥ ॥ गृह्णा
दिनवत्रयसिद्धिविधिः ॥ ॥
द्वयकृद्गवैनक ॥ नकरकथा
वक ॥ नृस्यध्वनसकमतापूजा
यादावनक ॥ ॥ गतिकृद्ग
ज्ञानयात्रक ॥ जिलसाठपवास
यात्रक ॥ मजिलसापूजायादा
वनक ॥ मजिलसातव ॥ ॥
वाहीसपूजावन ॥ यजमानसं
कल्प ॥ अथादि ॥ वाक् ॥ मानव
गुरुयजमानस्य श्री श्रीसूक्ति
जयजितामिगुमन्त्रदववर्मणा
कृत श्री श्री श्रीस्वदवतापीति
कामकृतनवमागृकादिनाम
नाटकस्य सर्वविश्वरुद्रनमः
गयासिद्धार्थ श्री श्री श्री कृष्ण

लदद्यावृथलावक्ररावंगुक्षल
विष्णुरावंपवलावृक्षरावंपवि
कल्पयन् ॥ ॐ ह्यात्मनामूर्तिं न
त्याय न स्यां यवमानन्दमात्मानं
ध्रुवकनानीयकमुकनददिनि
याञ्ज्याहास्यासंकुश्यात् ॥ ॐ ॥
तथाहो ॥ जौं पी पी व व द नाथवा
द वक्र वं ॥ ॐ ॥ जौं पी महालञ्जी
म्बापाद ॥ विन्दुद ॥ ॐ ॥ जौं पी द्या
मवामपुत्री जूम्बापाद ॥ वामन
॥ ॐ ॥ जौं पी स्ववत्री जूम्बापाद ॥ वा
मनासायुट ॥ ॐ ॥ जौं पी दिक्कत्री जूम्बा
पाद ॥ वक्र ॥ ॐ ॥ जौं पी गवत्री जूम्बा
पी ॥ दक्षना ॥ ॐ ॥ जौं पी रूवत्री जू
म्बापी ॥ दक्षन ॥ ॐ ॥ तिस्रथमाः
वामकम ॥ २ ॥ ॐ ॥ अथसूत्र
न्यास ॥ जौं पी स्वंददि ॥ जौं पी रुं
कं ॥ ॐ ॥ जौं पी वंताल ॥ जौं पी नं ऊ
वो ॥ जौं पी मं ह क ॥ ॐ ॥ तिद्या
मयं वकी ॥ २ ॥ ॐ ॥ शुं नमः सर्वसिद्धियागिनी ॥ ४

॥ क ॥ ॐ ॥ नमः सर्वसिद्धिमागुश्याः
॥ ददय ॥ नमानिश्वादिता नन्दन
द्विताये ॥ नारी ॥ सकलकूलवक्र
नायिकाये ॥ ॐ ॥ रुगवत्येवमु
कापालिन्ये ॥ ॐ ॥ तं नारी ॥ शं
दादि ॥ थां द्वादशान् ॥ यथममा
गुश्या ॥ ॐ ॥ वक्रमान ॥ जौं वाम
न ॥ ॐ ॥ दक्षन ॥ ॐ ॥ वाम ॥ ॐ ॥
ॐ ॥ दक्ष ॥ ॐ ॥ वामनासायु
ट ॥ ॐ ॥ दक्षनासायुट ॥ नं वक्र ॥
मं लिखाया ॥ अर्गथादितीयस्व
॥ ॐ ॥ शुं यवमहं सिनि ॥ वक्रव
॥ ॐ ॥ निर्वाणमार्गद ॥ नागा ॥ ॐ ॥
विषमायस्ववयसमनि ॥ नारी ॥
सकलद्विनाविष्कणदलनि
॥ हतो ॥ सर्वायदाभुषितवलि ॥
क ॥ ॐ ॥ सकलगुरुसमनि ॥ व
क्षसि ॥ दवी आगच्छ ॥ ददय ॥
हस ॥ नारी ॥ वल्ल ॥ ददय ॥
नववृषिबानुवसारुदलि ॥ क
॥ ॐ ॥ ममस्वगुरुमर्दमर्द ॥ ॐ

यथ॥ खादिखादि॥ र॥ ग॥ गिगु
 लनरिद्रिद्रिद्रि॥ अंयथा॥ शि
 धिद्रिद्रि॥ अं॥ स्व॥ अ॥ ता॥ अ॥ य
 ता॥ अ॥ य॥ पा॥ द॥ या॥ श॥ अ॥ द॥ य॥ अ॥ द॥ य॥
 ॥ पा॥ द॥ अ॥ द॥ य॥ श॥ ॥ अ॥ द॥ य॥ अ॥ द॥ य॥
 ल॥ क॥ ता॥ व॥ या॥ व॥ न॥ म॥ स॥ क॥ ल॥ म॥ न॥
 व॥ थान॥ सा॥ ध॥ य॥ सा॥ ध॥ य॥ ॥ पा॥ द॥ या॥ श॥
 य॥ व॥ म॥ का॥ व॥ लिक॥ ॥ आ॥ न्वा॥ श॥ र॥ ग॥
 व॥ ति॥ म॥ हा॥ र॥ व॥ व॥ व॥ य॥ धा॥ वि॥ लि॥
 दु॥ र्वा॥ श॥ वि॥ द॥ ग॥ व॥ व॥ ग॥ मि॥ त॥
 ॥ अ॥ य॥ अ॥ स॥ क॥ ल॥ म॥ नु॥ मा॥ त॥ श॥ ना॥ र॥
 ॥ य॥ ल॥ त॥ अ॥ न॥ व॥ स॥ ल॥ ॥ द॥ दि॥ ॥ द॥
 वि॥ म॥ हा॥ का॥ लि॥ ॥ क॥ ॥ अ॥ क॥ य॥ ॥ का॥ ल॥
 ना॥ गि॥ नि॥ ॥ व॥ क॥ ॥ दू॥ दू॥ दू॥ य॥ सी॥ द॥
 म॥ द॥ ना॥ रु॥ वी॥ ॥ अ॥ य॥ अ॥ ॥ क॥ व॥ क॥ व॥
 न॥ व॥ ॥ सू॥ वा॥ सू॥ व॥ क॥ न॥ य॥ का॥ ॥ गि॥ व॥
 ॥ ति॥ य॥ नि॥ द्वा॥ द॥ ग॥ क॥ ॥ ॥ अ॥ जी॥
 व॥ क॥ व॥ ॥ अ॥ य॥ ॥ वि॥ न्द्रो॥ ॥ दू॥ व॥ क॥
 रु॥ द॥ दि॥ ॥ रु॥ द॥ य॥ अ॥ धा॥ व॥ ॥ रु॥ द॥
 ना॥ र॥ ॥ स॥ वा॥ लि॥ ग॥ ॥ हा॥ य॥ अ॥ ॥ ॥ ति॥
 द॥ य॥ क॥ म॥ न॥ वा॥ क॥ व॥ न्या॥ स॥ ॥ ३ ॥

अं॥ न॥ म॥ ॥ सर्व॥ सि॥ द्वि॥ या॥ गि॥ नी॥ श्या॥ दु॥ र्द
 व॥ कु॥ ना॥ थ॥ पा॥ द॥ का॥ ॥ अं॥ न॥ म॥ ॥ सर्व॥ सि॥
 द्वि॥ मा॥ नृ॥ श्या॥ पूर्व॥ व॥ कु॥ ना॥ थ॥ पा॥ द॥ का॥
 ॥ अं॥ न॥ मा॥ नि॥ श्या॥ दि॥ ता॥ न॥ नृ॥ न॥ द्वि॥ ता॥
 ये॥ द॥ द्वि॥ ता॥ व॥ कु॥ ना॥ थ॥ पा॥ द॥ का॥ ॥ अं॥
 स॥ क॥ ल॥ क॥ ल॥ व॥ कु॥ ना॥ यि॥ का॥ ये॥ द॥ ल॥
 व॥ व॥ कु॥ ना॥ थ॥ पा॥ द॥ का॥ ॥ अं॥ र॥ ग॥ व॥ र्थे
 व॥ य॥ का॥ या॥ लि॥ न्ये॥ य॥ धि॥ म॥ व॥ कु॥ ना॥ थ॥
 पा॥ द॥ का॥ ॥ ॥ ति॥ य॥ अ॥ व॥ कु॥ न्या॥ स॥ ॥
 ॥ अं॥ य॥ व॥ म॥ हं॥ सि॥ नी॥ सर्व॥ र्हा॥ ता॥
 ल॥ कि॥ द॥ द॥ य॥ ना॥ थ॥ यी॥ ॥ अं॥ नि॥ र्वा॥ ल॥
 मा॥ र्ज॥ द॥ नि॥ र्वा॥ नृ॥ दि॥ ता॥ ल॥ कि॥ नि॥ व॥
 ना॥ थ॥ यी॥ ॥ अं॥ वि॥ व॥ मा॥ य॥ व॥ य॥ य॥ म॥
 नि॥ अ॥ ना॥ दि॥ वा॥ धि॥ ता॥ ल॥ कि॥ नि॥ र्वा॥ ना॥
 थ॥ यी॥ ॥ अं॥ स॥ क॥ ल॥ दू॥ रि॥ ता॥ वि॥ दू॥ क॥
 ल॥ द॥ ल॥ नि॥ र्वा॥ नृ॥ क॥ व॥ वा॥ य॥ ना॥ थ॥
 यी॥ ॥ अं॥ स॥ र्वा॥ य॥ दा॥ धा॥ धि॥ त॥ व॥ नि॥ अ॥
 ल॥ य॥ ता॥ ल॥ कि॥ न॥ नृ॥ ना॥ थ॥ यी॥ ॥ अं॥ स॥
 क॥ ल॥ ग॥ क॥ य॥ स॥ म॥ नि॥ अ॥ न॥ न॥ ता॥ ल॥
 कि॥ अ॥ नृ॥ ना॥ थ॥ यी॥ ॥ ॥ ति॥ य॥ अ॥ न्या॥ स॥
 ॥ ॥ द॥ वी॥ आ॥ ग॥ क॥ ॥ व॥ व॥ द॥ ना॥

थणी॥ ह म श्रु रु य ना थ धी॥ मलि
 वं धा॥ वल्ल २॥ कल ग ना थ पा द॥
 वाम मन्त्रो॥ न व नू धि वा नु व साः
 रु द्वा णि॥ क या ल ना थ पा द॥ वाम
 वा हो॥ म म स्त्र ण रु न्म र्द म र्द॥ ख
 द्वा ण ना थ पा द स्मृ त॥ खा हि खा हि
 मू लु ना थ पा द॥ द द स्क्वं धा॥ शि गृ
 ल न शि नि दि शि नि दि॥ शि गृ ल ना थ पा
 द॥ शि नि दि २॥ अं कू ण ना थ पा द॥ द
 द स्क्वं धा॥ ख द्वा न ना थ य २॥ ख द्वा
 ना थ पा द॥ द द म नि वं धा॥ कृ द
 य द्वा द य॥ पा ण ना थ पा द॥ द द
 क व त ल॥ उ वं स्कु लं न्या म ४ दि ती
 यं॥ **ॐ** ल ला टा दि वा म क म न
 ॥ शुं ल ला ट॥ क्री न रु॥ कूं ग लु॥
 हां णा रु॥ कूं स्क्वं धा॥ क्वां वा हो॥ क्वां
 क वा नु लि षू॥ न म ४ पा र्थ॥ य र्थ
 गि व ड रु व॥ म हा वा व जं द्या यं
 ॥ म हा सं ख पा दो॥ वि वि या न या
 दा नु लो॥ ह रु म रु द द्वा पा दा मु
 ल॥ म वा लि नी पा द या ४॥ म हा का

लिङ्गं धार्या ॥ कामवाजिह्वो ॥ वि
विश्रुविषाध्वञ्चिकृद्विकृताहु
लिम् ॥ यत्रमहन्विकृतो ॥ शायं ह
निकृवाहो ॥ थोहिरेविकं ध ॥ मना
वकर्मलिकं ॥ ताहिप्रत्यंगित्रा
मुखगा ॥ निवजसर्जनं ॥ शुं
पृष्ठवं ॥ ज्ञीकद्या ॥ दूँ आक्षत्र
॥ हाँ स्वाधिसुभ ॥ कुं मलिपूरक ॥
काँ अनाहतं ॥ काँ विष्टुद्धो ॥ नञ्
कास्तुभ ॥ मः नाणा ॥ त्रितृती
यश्चन्द्रन्यासः ॥ अक्तकर्य
यत्ररुदन्यासः ॥ शुं आधात्र ॥ सु
दूँ अनाहतं ॥ मं तावृणि ॥ हाँ वि
न्दो ॥ वं अर्द्धवन्दु ॥ ठं नाद ॥ थां नि
वाधिकाया ॥ गं व्यापिन्या ॥ ध्वंसम
नाया ॥ त्रिकूलकुल ॥ सुट् मना
न्नया ॥ मुँ डन्नया ॥ सुट् णामु
वान्न ॥ श्रीजीवाडणान्न ॥ सुट् पृ
ष्मान्न ॥ श्रीपवान्न ॥ रुट् कुल ॥
तृत्तिकमणयर्वन्यासः ॥ शुं वक्त्रवंध ॥ सुट् लवक ॥ म

नासाय ॥ हां विन्दो ॥ वं नासो ॥ उं
 वामकर्ण ॥ यां दक्षकर्ण ॥ गं वा
 मनेत्र ॥ श्वदक्षनेत्र ॥ त्रिवामना
 सायुट ॥ सुट् दक्षनासायुट ॥
 श्रीवामगण ॥ सुट् दक्षगण ॥
 श्रीवक्त्र ॥ सुट् जिह्वायां ॥ श्रीदक्ष
 ॥ सुट् लिखायां ॥ त्रिकममनु
 लयवंत्यासवरुथ ॥ ॐ ॥ शुं जी
 णीगुम्बवनाथवक्त्राणीशुम्बायाः
 दुर्का ॥ त्वकण्ठ ॥ शुं जी णी कम
 लारुवनाथमारुम्बवीशुम्बायादु
 र्का ॥ वक्त्र ॥ शुं जी णी गगनाथका
 मारीशुम्बायादुर्का ॥ मीम ॥ शुं जी
 णी लं रुनाथवेङ्कवीशुम्बायादु
 र्का ॥ मन्दसि ॥ शुं जी णी नीलाम्ब
 वनाथवावाहीशुम्बायादुर्का ॥ अ
 स्तिनि ॥ शुं जी णी सुवनाथवेङ्कीः
 शुम्बायादुर्का ॥ म्नाथो ॥ शुं जी णी श्व
 वनाथवामगुशुम्बायादुर्का ॥
 मज्जायां ॥ शुं जी णी संधायुगुम्बवी
 नाथमहालक्ष्मीशुम्बायादुर्का ॥

वसायां ॥ त्रित्वगश्रुत्यास ॥
 ॐ ॥ ॐ शं स ॥ अजिननाथपादा
 मयपाद ॥ ॐ शं स ॥ अनन्दाभा
 पाद ॥ वामपाद ॥ ॐ शं स ॥ आ
 नाथपाद ॥ दक्षजंघ ॥ ॐ शं स ॥
 ॐ श्ववीशुम्बापाद ॥ वामजंघायां ॥
 ॐ शं स ॥ उदयनाथपाद ॥ दक्ष
 वी ॥ ॐ शं स ॥ उद्वगामिनीशुम्बा
 पाद ॥ वामावी ॥ ॐ शं स ॥ मद्दिना
 थपाद ॥ दक्षिणपार्श्व ॥ ॐ शं स ॥
 मद्दिशुम्बापाद ॥ वामपार्श्व ॥ ॐ
 शं स ॥ लूफदवनाथपाद ॥ द
 क्षकव ॥ ॐ शं स ॥ लूनाशुम्बाया
 द ॥ वामकव ॥ ॐ शं स ॥ एकाम
 नाथपाद ॥ दक्षवाही ॥ ॐ शं स ॥
 उवावतीशुम्बापाद ॥ वामवाही ॥
 ॐ शं स ॥ डावनानन्दनाथपाद ॥
 दक्षकंधा ॥ ॐ शं स ॥ डोकनालीशु
 म्बापाद ॥ वामकंधा ॥ ॐ शं स ॥ अं
 मन्नाथपाद ॥ ककुठि ॥ ॐ शं स
 ॥ अं कृगानुशुम्बापाद ॥ कदि ॥

॥१०८॥ ॐ हूं वास्वाधिय तथ वक्र
 रण पादकी ॥१०८॥ ॐ हूं अं अरु
 त वृषमहारु ववाय आदिग कि
 सहिताय पादकी ॥१०८॥ वरुन ॥
 गायत्री ॥ धन १०८॥ धनं न अरुत
 याजय वय ॥  ॥ हास्ययाजय
 लयमनु ॥ नृत्यध्वमूलमनु ॥
 १०८॥ ॐ हूं वं वज्रकुविनी कुं तेल
 का कर्षणी जी कामाक्षी दावणी कौ
 मुदी महाक्षारका विनी नं सौ संध्या
 पादकी ॥१०८॥ ॐ हूं हं हास्यवृ
 षमहारु ववाय उपधर्यग कि स
 हिताय पादकी ॥१०८॥ वरुन ॥
 गायत्री ॥१०८॥ धनं न हास्यया
 जय वयमनु ॥  ॥ रुयानक
 याजय वयमनु ॥ नृत्यध्वमूल
 मनु न ॥१०८॥ ॐ अद्यावद्याथद्या
 वद्याद्यावद्यावक्तव्यध्वमर्वत ॥
 सर्वसर्वस्थानमस्तु वृद्धवृष्य ॥
 लिखानाथरु ववाय नमः ॥१०८॥
 ॐ हूं रुं रुयानक वृषमहारु वव

य आरुग कि सहिताय पादकी ॥
 १०८॥ वरुन ॥ गायत्री ॥१०८॥ धनं
 न रुयानक याजय लयमनु ॥
 हीरुस्ययाजय लयमनु ॥ नृत्यध्व
 मयामूलमनु न ॥१०८॥ ॐ हूं अं
 द्यावक्तव्यावक्तव्यावक्तव्यवक्त
 वरुं हूं सर्वत ॥ सर्वसर्व हूं हूं स
 ॥ जी वृद्धवृष्य ॥ पादकी ॥१०८॥
 ॐ हूं वं वीरुस्य वृषमहारु ववा
 य अवेवायग कि सहिताय पा
 दकी ॥१०८॥ वरुन ॥ गायत्री ॥
 १०८॥ धनं न वीरुस्ययाजय ल
 य ॥  ॥ वीरुयाजय वयमनु ॥
 नृत्यध्वमूलमनु न ॥१०८॥ ॐ जी
 णाललितरु ववाय द्या पादकी
 ॥ ॐ हूं वं वीरु वृषम ॥ हारु व
 वाय अनेधर्यग कि ॥ सहिः
 ताय पादकी ॥१०८॥ वरुन ॥ गा
 यत्री ॥१०८॥ धनं न वीरुयाज
 य वय ॥  ॥ साक्याजय वय
 मनु ॥ नृत्यध्वमूलमनु ॥१०८

[illegible]

सिद्धिमन्त्रनञ्जया॥ॐॐॐ नृणां
 धियतयसकलशुवनवन्दिता
 यताशुवशिवायसर्वसिद्धियः
 दायमहादेवायकूं कूं कूं रुट्
 स्वाहा॥धमन्त्रनरुकायाय॥ॐ॥
 धनं किनसंयादतयतव॥ॐ॥

ध्वजध्वजाव॥ नववसयाणीलका
यमालकायाखनमायुवृक्षादि
नमालकावादावधूष्यराजनरा

ॐ अथादि ॥ वाक् ॥ धीमन्मूर्त्ति ॥ व
 क्कली ॥ ग्रामावका ॥ उद्गुली ॥ दुका
 ना ॥ काकास ॥ आनन्दगकि ॥ मि
 क्षितमुखादि ॥ ॥ शितव ॥ मृत्वा
 र्थ ॥ पुनूनमस्काव ॥ जीकारं ग्राम
 ॥ जलयारु ॥ अर्धवारु ॥ जीकाः
 वलरुतगुद्धि ॥ मूलनात्मपूजा ॥
 आवाहनयासायवायवात्यादि ॥
 ॥ गहलवपूजार्गगादि ॥ ॥
 दवस्त्रान ॥ यंवामृत ॥ अलि ॥ लं
 गक्यादावदद्यात्कृततया ॥ ॥
 वत ॥ सिधव ॥ अकृत ॥ दृष्टि ॥ ज
 कमका ॥ अद्वाव ॥ वदुलीमाठ
 ॥ स्त्रान ॥ यं वयताका ॥ कर्षुयता
 का ॥ पतवासनवाय ॥ जायूजा
 वाय ॥ मालसाधनार्पयदाय ॥ ॥
 धनं धूदाव ॥ अथदवाध्वनं ॥ ॥

शितलनाथस्य ॥ युव नमस्कृत ॥
 जीकारं न्यासः ॥ अक्षरं न्यासः ॥
 नवाक्षरं न्यासः ॥ वतीति न्यासः ॥

मालामनुन्यासः॥ जलपाठः॥ ह
 कावनवाक्यः॥ गायत्री॥ सहस्र
 वाहनस्यादि॥ अर्घ्यपाठः॥ सका
 वनवाक्यः॥ यत्रादवी॥ जांका
 वलरुतगुच्छि॥ मूलनग्नस्य
 जा॥  अथक्षणावलि॥ यंत्रव
 लि॥ यासायत्रा॥ शिखर॥ यागि
 नी॥ धनामालसाकलगात्रन॥ य
 धिमठरुत्रयामालकायुजा॥ अ
 म्नायमालका  नन्दिमहाका
 ल॥ क्षुद्र॥ हनुमान॥ सुमुखी॥
 वक्रला॥  मूलयुजा॥ आक्ष
 वणकि॥ ८॥ ध्यान॥ मूलमनु॥ य
 ठरु॥ गायत्री॥  विष्णुक्षणादि
 सिद्धयंत्राक्त॥ वामादिकुरुक्षी
 णक्त॥ नवात्मादियंत्रमीर्त्वं॥ नव
 वस॥ मूलमनु॥ वलिविय॥ नृ
 त्ययंत्रयावलि॥ यक्षवाक्यस॥
 धनामालसासायदाययुजा॥ मू
 लमनु॥ निर्वर्ण॥ वाकमहावलि
 ॥ धूपदीपजपमुनि॥ वीरवीर

तत्रत्यादि॥ दक्षिणा॥ तर्पण॥ श्री
 तथता॥ तत्रवाजया० यंत्रमी॥ ॥
 वृथयुजा॥ यलुजाग॥ यलुतर्प
 ण॥ द्यु॥ स्वा॥ 


 अथयथाकर्म॥ नृगवज्रादिना॥
 लीलकायमालका॥ कमर्त्तनवः
 वसर्थांलामालावस्त्रादिकसत॥
 निर्वर्त्तन॥ रूतवलि॥ मनाविय
 मताहानवाय॥ गालवा॥ सग
 न॥ वरुसंस्कार॥ तितत्वा॥ १०८॥
 लामविलामन॥ ॐ जं डं डूं डूं डूं
 डूं डूं डूं डूं डूं डूं डूं डूं डूं डूं
 नृत्ययंत्रमहादेववायडूं
 नृत्ययंत्रमहादेववायडूं
 धाव॥ १०८॥ ॐ जं डूं आनन्दगकिरे
 ववानन्दवीरानु॥ धियतय डूं
 श्रीअक्षविंश ६ तिकर्म डूं
 रुद्राविकायेपादकां॥ धाव
 १०८॥ ॐ जं डूं आनन्दगकिरे
 ववानन्द डूं श्रीमहाविश्यावा

अथवीर्याणां अष्टाविंशतिक
 मरुदा विनायकादृका ॥ १०८ ॥
 ॐ कूं लं गंगा व वृष
 महारु व वाय अक्षवग कि महि
 नाय पादुका ॥ १०८ ॥ वटू कू
 ८ ॥ १०८ ॥ गायत्री ॥ १०८ ॥ अठस
 ॥ धनं भागजय वय ॥ लामस
 सिक वाय ॥ सुकारं न्याम ॥ आ
 सन ॥ यक्ष ॥ ध्यान ॥ डमील नव
 नीलनी वज्र वय ॥ सोम्य सोमा
 दय ॥ खल लं जन लावन ॥ सुल
 लिता ॥ कन्दर्प लीला लय ॥ अथ
 ॥ अठस गायन ॥ यविल सत्यीः
 ताम्र व कृष्ण ल ॥ साक्षा विष्णु वयं
 महावल यत ॥ गंगा वना मो वः
 स ॥ तिष्ठान ॥ ॐ कूं लं गंगा व
 वृष महारु व वाय अक्षवग कि
 महि नाय पादुका ॥ ३ ॥ वलि ॥ ॐ
 कूं अं अं अं विष्णु व सर्व सिद्धि य
 दाय पादुका ॥ वलि ॥ अठस
 नवृजा ॥ जयल पावन यावान

ॐ ३ नृणां विद्यादि ॥ १०८ ॥

गंगा व मनु न ल व द्वाय ॥ ध्रुवा
 दीय ॥ जय ॥ काश ॥ यामा रुग
 गंधुत रुस संघे मरुदा कृणा सिं
 म वृष काल ॥ वल सुत विघ्न नः
 तं रु अठ गंगा व वृष किल विष्णु
 देव तं ॥ अठ गन्धादि ॥ वन ॥ पीर
 पु ॥ सिध व ॥ वीर अथ ॥ सिद्धार्थ
 दधि पावन र्यादि ॥ आणी वी द ॥
 संल नाना यक्ष ॥ आवति ॥ सुष
 कासा ॥ यति विता सिद्धादि ॥ य
 तिष्ठा ॥ धनं गृह्णा व पाठ या सि
 द्विविधान ॥

अथवीर्याणां अष्टाविंशतिक
 न न व व स यां ला सा ला व स्रिक
 सत ॥ निर्विक्र न ॥ रुत वलि ॥ म
 ता विय ॥ मता रुत वाय ॥ ताल
 वा ॥ सग्न न ॥ वरु ॥ संस्क व ॥ जि
 तत्व ॥ १०८ ॥ लाम विला म न ॥ नृत्त
 य व मूल मनु ॥ १०८ ॥ निरवाम नु
 ॥ १०८ ॥ स्वकुन्द मनु ॥ १०८ ॥ वीर म

नु॥१०८॥सिद्धिमनु॥१०८॥षट्
 कूट॥१०८॥गायत्री॥१०८॥षष्ठं
 ॥धर्मं मातृगजयलथ॥लासस्व
 सिकवाय॥वकारं न्यास॥अस
 नयद्व॥ध्यान॥एगानावविन्दु
 लदहकानि युवां वलिष्टा नृप
 ह्यलाद्य॥वाज न्यवर्ण॥पर
 व॥सूदह॥पीमासून गकलि
 त॥सवीव॥ॐ तिष्ठान॥ॐ कूं वं
 वीव नृपमहाकैववायधम्मणिः
 किसलिताय नमः॥३॥वलिष्टा ॐ
 कूं ॐ ३ ॐ नृपयवजपाय नमः
 २ कूं रुट्पादकां॥षष्ठं॥वलि
 ॥कयलयावतयास्वानवीवम
 नुर्नलवक्त्राय॥धूप दीप जय
 का॥सर्वदा वसवर्मेणा नृ
 प्यसिद्धिपदाय कक्षमहेश्वरसु
 वृथासि वीव रुष्टानमाप्नुत न
 अरुगन्मादि॥धर्मा॥पीखलु॥वी
 वध्वी॥सिध्व॥सिद्धार्थदधि॥
 आणीर्वा॥सखा॥नानाधूष्या

आवाति॥सूयकाशाद्यादि॥य
 तिष्ठितासिद्धादि॥यतिष्टा॥धर्म
 वीवपाश्यासिद्धिविधान॥॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अथकवृणपाशुजयवय॥कम
 नंनववसयांलामालावहयसु
 सिकमत॥निर्व्विन्दुन॥रुतवः
 लिष्टा॥मताविय॥मताखानवाय
 ॥तालवा॥सगमन॥वरुयंस्का
 व॥शित्त॥१०८॥लामविलाम
 न॥नृपयवमूलमनु॥१०८॥
 कवृणमनु॥१०८॥सिद्धिमनु॥
 १०८॥षट्कूट॥१०८॥गायत्री॥
 १०८॥षष्ठं॥धर्मं मालसजय
 वय॥लासस्वसिकवाय॥कका
 रं न्यास॥असनयद्व॥ध्यान॥
 एगानाकवृणसमस्तनृतां
 ग्रामाहसंपादका नित्यनी निज
 एववाकवगता निर्व्विन्दकावाः
 रुवत॥पूजाशुक्लरुणाक
 जनिता नानाविधदीनालाकन

वाद्यवतनानिर्वदमहात्मक
 शास्त्रिभ्यानां॥ॐ कूं कूं कूं वृणु
 यमहादेव वायुनागकि सहि
 ताय पादुकां॥३॥ वलिशांॐ कूं कूं
 ॐ ॐ नृत्त्याधियतय सकलकुव
 नवद्वितायतापुवधियायसर्व
 सिद्धिदायमहादेवाय कूं कूं कूं
 रुद्रस्वाहा॥ वलिशां वरुण॥ जय
 वयावतयास्वानकवृणुमन्त्रनल
 वक्ताय॥ धूप दीप जय सुति॥ य
 श्वाधिकं गितवर्षसंख्यवयः
 कयातांगवृविर्विबृक्षभूदानव
 यार्थयमदेवतघ्नवयः॥ यमिदं
 कवृणु॥ कविन्दु॥ अङ्गगन्मादि
 ॥ यत॥ श्रीखण्ड॥ सिद्धव॥ वीरध
 वी॥ सिद्धार्थदधि॥ अङ्गीर्वात
 संहानानायुष्य॥ आवति॥ सुष
 काया॥ यतिष्ठितासि॥ यतिष्ठा॥
 धनं कवृणुयामिद्धिविभन॥


 अथ अङ्गुत पादुकाय लय॥ कम

ननववस्यं लामालावस्वस्तिक
 सता॥ निर्वृद्धन॥ रुद्रवलि॥ म
 ताविद्य॥ मताहानत्वाय॥ ताल
 वा॥ सगान॥ वरुसंस्कार॥ जित
 ह॥ १०८॥ लामविलामन॥ नृत्त्यध
 वमूलमन्त्र॥ वामुमन्त्र॥ १०८॥ अ
 ङ्गुतमन्त्र॥ १०८॥ सिद्धिमन्त्र॥ १०८
 ॥ वरुकूट॥ १०८॥ गमयणी॥ १०८॥
 वरुण॥ मातृसजयवयध्वत॥ ला
 मस्वस्तिकवाय॥ अकारं न्यास॥
 आसना॥ यद्वा॥ ध्यान॥ चक्रस्त्रवं
 धूकसम॥ यत्रगुस्वप्नाङ्गुणवा
 नधनूद्ववधदेव्यदवीणाङ्गुत
 या॥ गाङ्गुवाङ्गुवाणाङ्गु॥ सादाङ्गु
 तालोषतितावयाहि॥ शास्त्रि
 भ्यानां॥ॐ कूं कूं अङ्गुतवृयमहा
 देव वायुनागकि सहिताय
 पादुकां॥३॥ वलिशांॐ कूं वं व
 क्काणवायुपूवृवायसर्वलाक
 पितामहायनाद्याधियतयपा
 दूकां॥ वलिशां वरुण॥ जयवया

[illegible]

॥सूयकाथा॥प्रतिष्ठितासिखा
दि॥प्रतिष्ठा॥॥ध्वतंरुस्य
यासिद्धिविधान॥


अथरुयानकपाण्डयवय॥
कमनंनववययांलासालावः
स्वस्विकसत॥निर्व्वक्तुन॥रुतव
लि॥मताविद्य॥मतारुनवाय
॥तालवा॥सलग्नन॥वरु॥संका
व॥उतव॥१०८॥लामविलाम
न॥नृथयवमूलमनु॥१०८॥व
क्तु॥१०८॥रुयानकमनु॥१०८
॥सिद्धिमनु॥१०८॥वक्तु॥१०८
॥गायत्री॥१०८॥वरु॥ध्वतंन
मारुसजयवय॥लामस्वस्विक
वाय॥रुकारंन्यास॥आसन॥
यक्ष॥ध्यान॥पञ्चगव्यद्वय
वातिदम्नीपूजावयरीषणवृ
षध्वरीकालाधिदेवत॥कथित
॥यवीरुयानकामोरुयलव
जन्मा॥००तिध्यान॥ॐॐॐॐरुया

नकवृयमहारुववायअरुनग
किमहितायपादुकी॥आवलि
॥ॐॐॐॐनमारुतयतयथत
यविद्युतायरुतदयायकाल
वृषि॥सालावापादुकी॥वलि॥
वरु॥अथवपावतयास्वान
रुयानकमनुनलवक्ताय॥धूप
दीपजयमुति॥अनुविपूलं
मनुंकपालं॥कणधियंमंदधतं
रुजं॥रुयानकं॥तंयमदवदे
वतं॥यामारुदहंगिनिजावलाकिती॥
अरुगन्मादि॥वत॥धीरुवृ॥सि
ध्व॥वीरुवृ॥सिद्धिर्थदधि॥
आणीवृद॥सरुनानावृषा॥आ
वति॥सूयकाथा॥प्रतिष्ठिता
सिखादि॥प्रतिष्ठा॥॥ध्वतं
रुयानकयासिद्धिविधान॥


अथवीरुयानकपाण्डयवय॥क
मनंनववययांलासालावस्वस्विक
सत॥निर्व्वक्तुन॥रुतवलि॥

मताविय॥ मताखानवाय॥ ताल
 वा॥ सगान॥ वरु४ संस्कार॥ रि
 तत्व॥ १०८॥ लामविलामन॥ नृत्त
 धनमूलमनु॥ १०८॥ अद्याव
 मनु॥ १०८॥ वीरस्यमनु॥ १०८॥
 सिद्धिमनु॥ १०८॥ बटुकूट॥ १०८
 ॥ गायत्री॥ १०८॥ वरु४॥ धतन
 माउसजयवय॥ लामसस्त्रिक
 वाय॥ वकारं न्यास॥ आसन॥ य
 द्वा॥ ध्यान॥ रितांजनाविदिता
 विलकु४ पंवाणददादधिवय
 स्करवीरसनामावृषलान्वया
 र्यप्रसामहाकालहित४यसिद्ध
 ४॥ ॐ तिष्ठान॥ ॐ हूं वं वीरस्य
 नृपमहादेववाय अवेवाकूण
 क्रिमलिताय पादुकां॥ ३॥ वलि
 ४॥ ॐ हूं हूं सर्वविघ्नविनाशाय
 वरुनृपाय सर्वकामप्रदाय हूं
 अद्यावाय मूलं यमहाकालाय
 पादुकां॥ वलि४॥ वरु४॥ जयव
 यावतयाश्चानवीरस्यमनुनल

वक्राय॥ धूप दीप जप मुक्ति॥
 वस४ वीणावीरस्य४ सर्वदा
 दवर्वदिता४॥ त्वामहं सततं व
 न्न नित्यं गच्छेन्नृपधृक्॥ अरु
 गंक्षदि॥ वत॥ धीखलु॥ सिध
 व॥ वीरं वी॥ सिद्धार्थं दधि॥
 आणीर्वाद॥ सखानानायक्य॥
 आरति॥ सूर्यकाश॥ यतिशि
 तासित्यादि॥ यति४॥ ॐ ॥ ध
 तवीरस्ययासिद्धिविमाना॥

अथबोदपाठजयवय॥ कम
 ननववसयांलासालावस्त्रिक
 कसत॥ निर्वृक्तन॥ हृतवलि४॥
 मताविय॥ मताखानवाय॥ ता
 लवा॥ सगान॥ वरु४ संस्कार॥
 रितत्व॥ १०८॥ नृत्तधनमूलम
 नु॥ १०८॥ ललितमनु॥ १०८॥ वीर
 मनु॥ १०८॥ सिद्धिमनु॥ १०८॥ व
 टुकूट॥ १०८॥ गायत्री॥ १०८॥ व
 रु४॥ धतनमाउसजयलयमनु॥

लासस्वस्तिकवाय॥वकारं न्या
 मशाआसन॥यक्ष॥ध्यान॥का
 कनकविबधीवलाचना सुन्द
 राहियवनाधिदेवतक्षयश्चवि
 गतिकहायनस्मृता वैश्ववर्णः
 ॐ ह्रीं वीं वीं वीं जित॥ॐ तिष्ठानक्ष
 ॐ ह्रीं वीं वीं वीं वीं महादेव वाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 कां॥३॥वलि॥ॐ ह्रीं वीं नमो
 भगवते वासुदेवाय॥वलि॥
 अति॥यतंगायसिद्धिबुद्धायः
 ॥वलि॥ॐ ह्रीं वीं नमो
 भगवते वासुदेवाय॥वलि॥
 धूप दीप जप मुनि॥वक्तृ
 रूतगणावृत्तं तं वृत्तांतिकादु
 गवानकनाड्येक्षवलकुआयेकिल
 बुद्धदेवतं वीं वीं वीं वीं वीं वीं
 महायं॥अरुगंकादि॥वत॥
 खणु॥सिद्धवृत्तीवृत्ती॥सिद्ध
 र्थदधि॥आणीर्वादा॥संस्तुताना

यूष्य॥ आवृत्ति॥ सूयकासा॥ य
तिष्ठीतासिद्धादि॥ यतिष्ठा॥
ध्वनोदयासिद्धिविष्मना॥
अथ गान्ध्यानुजयलय॥ कमन
नववसर्गालासालावस्रिकय
न॥ निर्वीक्षन॥ हतवलि॥ मता
विद्य॥ मतास्मान्वाय॥ ताववा॥
संगान॥ वहुसंस्कार॥ नित्तत्वा॥
१०८॥ लामविलामन॥ नृत्त्यध्वन
मूलमनुन॥ १०८॥ नवात्मा मनु॥
१०८॥ नवात्मागकिमनु॥ १०८॥
अध्यानायु॥ १०८॥ यवमीमनु॥ १
०८॥ गान्ध्यानु॥ १०८॥ सिद्धिमनु
॥ १०८॥ अट्कूट॥ १०८॥ गायत्री॥
१०८॥ अट्कूट॥ ध्वननमादयज
यवय॥ लासस्त्रिकवाय॥ स
कावत्यास॥ आयन॥ यद्य॥ ध्या
न॥ नकवकुनिनृत्त्यनागक
गुलमणिर्ग॥ अट्कूटसमायु
क॥ गान्ध्यानु॥ अट्कूटसमायु
क॥ गान्ध्यानु॥ अट्कूटसमायु

ध्याना॥ॐ हूं सं सोम्यवृषमहारे
 नवायमधर्मगकियदितायपा
 दुकां॥३॥वलि॥ॐ हूंॐ यमाय
 दण्डरुसायसर्वसमायहूं हूं हूं
 यं यं यं पादुकां॥वलि॥ॐ हूं॥
 ऊपनवावतयास्वानगानुमनु
 नलवहाय॥धूपदीपजपमु
 ति॥गंगात्रिलोवाकगलेनिर्वहं
 खदासपाणाकृणवदिर्णवरमहा
 वृषिं सोम्यवर्मरुज हं वसवमू
 र्खं रुवरीतिनागं॥अरुगन्ध
 दि॥वत॥लीखतु॥सिधव॥वी
 वध्वरी॥सिद्धार्थदधिपावनं॥आ
 लीवोद॥संस्तानानाधूषा॥आव
 ति॥सूयकाशामहातंजल्यादि॥
 प्रतिष्ठितासिखादि॥प्रतिष्ठा॥
 धतंमानुयासिद्धिविधन॥॥

समयद्वाय॥समयमालकासवि
 य॥वयनधियमतंवा॥दक्षिणा॥
 उक्तानं॥स्वानकाकाय॥स्वानवि

यमालकासा॥वलिविसर्जन॥
 साक्षीथाय॥॥॥॥पाणयनिमो
 द्यनवृयकावअखावसहयका॥
 अखावसदतायनमतंवा॥अख
 मतया॥॥॥॥धतंभूदाव॥अख
 वसजियक॥पतवासनवाय॥
 दादल॥आवृल॥द्वि॥गन्ध॥
 द्यगा॥कस्त्रि॥ध्रावल॥रधमाय
 ॥नगावा॥रविं॥वदूल॥वाज
 न॥सिकन्धालवृद्धाल॥कतामू
 ज॥ताल॥क्षक॥उपवाकदक
 वाय॥धतंयातंअष्टपण॥ताल
 विं॥कस्त्रि॥ध्रावनमूजधतंअ
 दिनस्रस्तिक॥वलिपा॥क्षवतं॥
 नववयमगुलवाय॥अष्टपण॥
 अष्टपण॥यद्वरे॥गुगुलिवाक्ष
 न्यडगुलिमध्यसलावक॥धृवा
 दिकमनं॥वन्दनादियाय॥व
 लितं॥या॥वलितं॥जलपाण॥
 अर्धपाण॥मालसाकलण॥धतं
 जीयक॥॥॥॥धवस्त्राना॥डुकारं

वायुवीजं ह्यादि ॥ वत ॥ धीखण्ड ॥
सिधवा ॥ वीरवरी ॥ अकृत ॥ अकृत
तं अकृत ॥ दृष्टि ॥ अकृत ॥ यकृत ॥
पवीतं ॥ अकृत ॥ वरुलीमठ
॥ स्वान ॥ नानापुष्प ॥ यं वयं ताक
॥ कर्तुं पठाक ॥ धनं कृत यलथ ॥
जायुजा वायमालका ॥ ३२५ ॥

अथ धवाचनं ॥ शिखरं नाचम्या ॥
सूर्यार्ध ॥ अं अयादि ॥ वाक् ॥ व
शुक्तिवीज ह्यादि ॥ पुनूनमस्कर
॥ न्यासकीकावण ॥ अल पाण ॥ अ
र्धपाण ॥ अं कावण हृत पुष्टि ॥
आत्मपूजा ॥ ३२६ ॥ आवाहन ॥
यासायनोपनायादि ॥ यं व वलि
॥ पुनूनवावाहन ॥ शिखर ॥ था
गिती ॥ थनामालसाकलणपूजा
॥ ३२७ ॥ पश्चिम उरुवयामालका ॥
॥ ३२८ ॥ नन्दि ॥ महाकाल ॥ मध्या ॥
क्षुण्डपाल ॥ वाजकलयामालका
॥ हनुमान ॥ सुमुखी ॥ वकुला ॥

॥ मूलपूजा ॥ आध्वर्यगकथय
दि ॥ ३२९ ॥ ध्यान ॥ नकवकुं ह्यादि ॥
जियाअलि ॥ वलि ॥ वरुण ॥ गा
यत्री ॥ वलि ॥ ३३० ॥ निवपूजा ॥
जां विष्णुं दण्डपालादि सिद्धधना
नं ॥ गकिपूजा ॥ जीवामादि वरु
धीणनं ॥ उरुयपूजा ॥ शुं नवात्म
धवादि यं वमीतां ॥ मूलमनु ॥ आ
वाहन ॥ मूढा ॥ धन ॥ आनि ॥

अथ नववसमपुलपूजा ॥ न्यास
॥ सुकावन ॥ अलार्धपाण हृत
पुष्टि आत्मानं पूजा ॥ गंगावत
यमहारं व वायं गकि सहिताय
बुद्धमावाहिष आवाहयामि ॥
शिखर ॥ यन्मासन ॥ ध्यान ॥ उन्मी
लनवनीलनीलवयुः सोम्य
मावाहय ॥ खलह्वं जनलावन ॥
मूललित ॥ कन्दर्पलीलालय ॥
रुय ॥ आठगहायन ॥ यवित्रस
यीताम्वर ॥ कुण्डल ॥ साक्षाविष्णु

जलार्घ्यागृह्णतु द्विआत्मपूजा
 न॥ आवाहन॥ ॐ क नू नू य म ह
 रं व वा य न कि स हि ता य ॐ दं आः
 वा हि ष आ वा ह या मि ॥ ति द व ॥ घ
 द्वा स ना य ॥ ध्या न ॥ ए का त्मा क नू
 ए स म स नू ह तां व्य मा हं सं याः
 द का नि ह्य गी ॥ ति ज (गा व वा न्त
 व ग ता नि र्व द का वा रु व त् नू य
 नू क नू ग (गा क ज नि ता ना ना वि न
 ४ दी ना ला क न वा द य व न ता नि र्व
 द म हा त्म क ॥ ॐ ति ध्या न ॥ ति याः
 ज लि ॥ ॐ कं कं क नू नू य म ह रं
 व वा य न कि स हि ता य वा द
 कां ॥ ३ ॥ व लि ॥ ॐ कं ॐ कं ॐ कं नू
 धि य त य स क ल रु व न व दि ता य
 ता नू व धि या य स र्व सि धि य दा य
 म हा द वा य कं कं कं रु द्वा हा ॥ व
 लि ॥ मूल म नु ॥ व लि ॥ ष ण्म ॥ गा
 य त्री ॥ व लि ॥ नि र्वा ण ॥ त्वा क म हा
 व लि ॥ धू य ॥ दी य ॥ ज य ॥ म्हा ॥
 क या त क ४ य रु वि न व नू या न ४

मूलं कुजगं महासिं कवेर्दक्षनं ज
 लनाथदेवतं मनाहवतं कनू
 लं रुजं ॥ म्हा गं भदि ॥ वि नू
 जिय ॥ ३ ॥ ॐ ति क नू नू य म स म गु ल ॥



अथ म्हा गं म्हा गं म्हा गं म्हा गं म्हा गं
 म ॥ जलार्घ्यागृह्णतु द्विआत्म
 पूजानं ॥ आवाहन॥ ॐ म्हा गं नू
 य म ह रं व वा य न कि स हि ता यः
 ॐ द मा वा हि ष आ वा ह या मि ॥ ति
 द व ॥ घ द्वा स ना य ॥ ध्या न ॥ य रु नू
 वं धू क स म ४ य व नू य म्हा कं (गा वान
 ध नू द व न्ध दे र्थं द वं (गा रु व याः
 (गा रु वा नू य न ४ सा दा दू ता नि
 प्र ति ता व सा हि ॥ ॐ ति ध्या न ॥ ति
 या ४ लि ॥ ॐ कं म्हा गं नू नू य म
 ह रं व वा य न कि स हि ता य
 वा द कां ॥ ३ ॥ व लि ॥ ॐ कं ॐ कं व क
 (गा वा नू य नू य य स र्व ला क यि ता
 म हा य ना द्वा धि य त य वा द कां ॥
 व लि ॥ मूल म नु ॥ व लि ॥ ष ण्म

रुयानकोसोरुयलबुजमा॥ॐ
 तिश्चान॥ श्रियाञ्जलि॥ ॐ हूं रुं
 यानकवृषमहाकुरुवायञ्जु
 नगकिमहितायपादुकां॥३॥
 वलि॥ ॐ हूं ॐ नमो हृतपतय
 यतयविवृताय हृतदयाय
 कालवृषिणसाहापादुकां॥ व
 लि॥ मूलमनु॥ वलि॥ वरु
 ॥ गायत्री॥ वलि॥ निर्वोण॥ त्वा
 कमहावलि॥ धूप॥ दीप॥ जप
 ॥ स्कार॥ अर्चुनिगुलंठमवंकपालं
 दण्डियं संधतं रुजं रुया
 नकं तं यमदवदेवतं आमारुदं
 हंगिबिजावलाकिं ॥ अर्चुगं
 धादि॥ विन्दुश्रिया॥ ३॥ 
 ॐ तिरुयानकवसमगुलदूजा॥


 अथवीरुत्यावसमगुजा॥ वकारं
 न्यास॥ जलाद्यपागुरुतगुद्वि
 आत्मदूजार्क॥ आवाहन॥ शुंवी
 रुत्यावृषमहाकुरुवायनकिम

हिताय ॐ दमावाहिषजावाह
 यामि॥ श्रिय॥ यद्वासनाय॥ श्रि
 न॥ श्रिनीजगाविदिताविलर्ज॥
 यश्चाणदद्यादधिवयस्कवीरु
 त्यानामावृषलान्वथार्यं वसामहा
 कालहित॥ यमिदं॥ ॐ तिश्चानः
 न॥ श्रियाञ्जलि॥ ॐ हूं वीरुत्या
 वृषमहाकुरुवायञ्जुवेवाङ्ग
 किमहितायपादुकां॥३॥ वलि॥
 ॐ हूं हूं सर्वविद्यविनागायवउ
 वृषाय सर्वकामप्रदाय हूं अथा
 नायमूलं यमहाकालायपादुकां
 ॥ वलि॥ मूलमनु॥ वलि॥ वरु
 ॥ गायत्री॥ वलि॥ निर्वोण॥ त्वा
 कमहावलि॥ धूपदीप॥ जप॥
 स्कार॥ नीलश्रुतिं हस्तयेदं ध
 नं वज्रञ्जकिं यवर्णगदाञ्जु
 तं महाकालसुदेवतं रुजं वीरु
 त्समं रुंसकलामृतयियं॥ अर्चुगं धा
 दि॥ विन्दुश्रिया॥ ३॥ 
 वीरुत्यावसमगुलदूजा॥ 

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अथ बोधवसपूजा॥ वकारं न्या
म॥ जलार्घ्यपाठरुतपुष्टिआ
सपूजा॥ आवाहन॥ ॐ नमो भगवते
वसुदेवाय नमः ॥ किमहिताय
ॐ दमावाहिष आवाहयामि ॥
जिहव॥ पद्मासनाय॥ ध्यान॥ का
ञ्चनकुविबधीबलावना सुन्द
वाहिषवनाधिदेवतभयं ववि
गतिकहायनस्मृता वेण्यवंग
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ तिष्ठाना
जियाञ्जलि॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
महादेव वासुदेवाय नमः ॥ किमहि
ताय पादुकां ॥ ३॥ वलि॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय काध
धवाय नमो आति॥ धनं गायसि
द्विबुदाय नमो ययसि द्विदहिस्वा
हा पादुकां ॥ वलि॥ मूलमनु ॥
वलि॥ षष्ठं ॥ गायत्री ॥ वलि॥
निर्वाण॥ वाकमहावलि॥ धूप
॥ दीप॥ अघ॥ स्नान॥ वक्रयुग्मं

तगलावृत्तं तं वमोपिकादपुण
वानकवाङ्मेशवलकुजोर्ध्वकिलन
ददेवतं नमो भगवते वासुदेवाय
य ॥ अङ्गमादि॥ विदुषिय ॥ ३॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अथ गानवसपूजा॥ सकारं न्याम
॥ जलार्घ्यपाठपूजा रुतपुष्टिआ
सपूजा॥ आवाहनादि॥ ॐ गान
वसपूजा ॥ महादेव वासुदेवाय नमः ॥ किमहि
ताय ॐ दमावाहिष आवाहयामि ॥
जिहव॥ पद्मासनाय॥ अथ ध्यान
॥ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ककु
मपुत॥ जटाशूटसमायुक्तं ॥
कपेत्तपुताकल॥ ॐ तिष्ठाना
जियाञ्जलि॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
महादेव वासुदेवाय नमः ॥ किमहि
ताय पादुकां ॥ ३॥ वलि॥ ॐ
यमाय दपुष्टकाय सर्वसमाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वलि॥
मूलमनु ॥ वलि॥ षष्ठं ॥ गाय

जी॥ वलि॥ निर्वो॥ वाकमहा
 वलि॥ धूप॥ दीप॥ जप॥ मुक्ति॥
 गृगात्रिणी वाङ्माले निर्वदं स्वदा
 मयाणाक्षीणपट्टिणी वामहात्रि
 सोम्यवर्णीरुज्ज्वलं वधमूर्खीरु
 वरीतिनाली॥ अङ्गगंधादि॥ विन्दु
 क्रिय॥ ३॥ हूतिनामवसमगुला
 हूतिनववसमगुलदूजा॥


 अथसंयदायदूजा॥ वरु॥ सीसाव
 ॥ मूलननित्रीकला॥ अमुलथाकली
 ॥ तनेवताउनी॥ कवयनावगु॥
 नी॥ धनमूढामृतीकृत्य॥ ॥ द
 थताल॥ ॐ हूं तं वतीणमूर्ख्यता
 लायनमशाजवखि॥ ॐ हूं नं नदि
 मगुलायनमशा॥ खवखि॥ ॐ हूं मं ५
 महाकालायनमशा॥ दधकाटा॥ ॐ
 हूं जी संनायायनायनमशा॥ दध
 मूकज॥ ॐ हूं नं नदिमहाकाल
 मगुलायनमशा॥ जवकखि॥ ॐ हूं
 वंजहुं हुं हुं गिखासुक्तमहा

रुववायनमशा॥ खवधावल॥ ॐ
 हूं मं महाकालायनमशा॥ कृपम
 र्दनायमहारुववायपादकी॥ ॥
 मासा॥ ॐ हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं
 यनमशा॥ नगमवा॥ ॐ हूं वीवना
 यनमशा॥ जववदल॥ ॐ हूं कं को
 गल्लोथेनमशा॥ खववदल॥ ॐ हूं
 जर्मवमूर्ख्यनमशा॥ वाककुल
 जवा॥ ॐ हूं कां सधवाथेनमशा॥ नि
 ककुलखव॥ ॐ हूं जज्वमूर्ख
 थकीसायपादकी॥ जवकासा॥
 ॐ हूं जं जं जी कासिदन्नायपवसे
 यविरुणामनायनमशा॥ खववा
 जम॥ ॐ हूं जं जं जी कासिदन्नाय
 नमशा॥ धकआदिनडपवाकवा
 यदक॥ ॐ हूं सर्ववायधवात्मकमू
 र्ख्यपादकी॥ धतनीवलि॥ धवध
 वम॥ धावल॥ ॐ हूं हूं हूं हूं हूं
 वमहारुववायकी ॥ ॐ हूं हूं हूं
 लक्ष्मीगकिमहिताय ॥ ॐ हूं हूं हूं
 की॥ आवृल॥ ॐ हूं हूं हूं हूं हूं

लक्ष्मीदेवीसुखायादुका॥द्यष्टि॥
ॐ हूं हूं हूं हूं ॥ गात्र ॥ ॐ हूं कं कं
लमूर्त्यनिबन्धनयदायनमः॥
अगामा॥ ॐ हूं हूं हूं हूं सिंहादाय
नमः॥ अगात्रा॥ ॐ हूं हूं हूं हूं वासन
नमः॥ अगननं वलि॥ अथ अथ अथ
॥ तिस्रं यदायपूजाविधि॥ ॥
ॐ ॐ ॐ नृत्त्याधियतयसकलकु
वनवन्दितायतापुवधियायस
र्वसिद्धिप्रदायमहादेवाय हूं हूं
हूं हूं हूं हूं ॥ ॥ मूलमनुनगि
याञ्जलि॥ ३॥ वलि॥ ॥ ॥ वलि
विय॥ ॐ हूं नृत्त्यधियमहादेववा
यत्यादि॥ ॥ मूलमनुनगिया
ञ्जलि॥ ३॥ वलि॥ अथ अथ अथ
॥ आवाहनादि॥ नृत्त्यमूर्ती॥ ॥
निर्वाणकथ॥ वलि॥ ॥ ॥ लाक
महावलिनधूनक॥ आवाहना
दि॥ मूडामालका॥ ॥ ॥ धूप॥ दि
अगन्धसमाद्यादि॥ दीप॥ सुख
कासाद्यादि॥ नैवेद्य॥ अन्नमहा

वर्मत्यादि॥ रुलपूष्यतामूलधूप
पदीपनैवेद्यादिसंकल्पसिद्धि
मुद्रां नैवेद्यं नमः॥ ॥ ॥ अथ॥
शिखर॥ धात्र॥ हकावसकावन
वाक्का॥ १०॥ निर्वाणया॥ ॥ ॥
मणुलदयक॥ कवाजयं व पण
वनतय॥ ॥ ॥ अथ॥ अथ अथ अथ
॥ ॥ ममूर्ती॥ शिखर॥ ॥ ॥ आमात्र
का॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
काकास॥ वीरवीरतववससर
गवान्गुप्तमूर्तिस्तथागुप्तम
यवमाहुतश्चुततवसंजायत
तद्गुणात्कावृत्त्यं कवृत्त्यं हस
नपुरुषं सर्वान्मन्त्रान्नाम
यन्नुर्वसर्वत्रसाधयसमेतव
क्षेत्रेववर्णकवर्णधनानववः
याद्वाका॥ आनन्दगकि॥ नमस्तु
नृत्त्य॥ यथावान॥ नमस्तु॥ ॥



वृत्तकावहयायागलासालावद
तायनस्वस्तिकसत॥ निवकुन॥

[illegible]

थनमः॥काठामृज॥ॐ हूं नावा
 यलमूर्त्यनमः॥नद्विमूर्त्य
 नमः॥नगावा॥ॐ हूं वीरनादमृ
 र्त्यनमः॥निकञ्जाल॥ॐ हूं ज
 र्वमूर्त्यनमः॥वृकञ्जाल॥
 ॐ हूं कासधरमूर्त्यनमः॥ध
 क॥ॐ हूं सर्ववायधवात्मकमृ
 र्त्यनमः॥धगामा॥ॐ हूं सिंह
 नादमूर्त्यनमः॥धगावा॥ॐ
 हूं तंतवात्मनसिंहनादमूर्त्य
 नमः॥धटि॥ॐ हूं नीरसवस्व
 तीमूर्त्यनमः॥जवगाञ्ज॥ॐ
 हूं कालात्मननिर्वञ्जनपदधवा
 त्मकमूर्त्यनमः॥खवगाञ्ज॥
 ॐ हूं मृत्पञ्चजनपदधवात्मक
 मूर्त्यनमः॥वाजन॥ॐ हूं का
 लधरमूर्त्यनमः॥कास॥ॐ हूं
 कांसद्वामूर्त्यनमः॥धनसं
 यदायमृज॥ॐ हूं॥संयदायविय
 र्जन॥लवक्लायमृजायादकम
 न॥दक्षिणसहित॥आखनमा

ध्याय ॥ वृत्तलवक्षाय ॥ दक्षि
 णार्धे तन ॥ वन्दनादि ॥ मणा
 न ॥ आणीर्वादि ॥ मन्त्रा आरति य
 ति ॥ ॥ ॥ ध्यायनमावृत्तक
 अन्वयनपिवनत ॥ ध्यायन
 द्वायक ॥ आवृत्तगनदयक ॥
 तानुनयाय ॥ नाद्विष्टाक ॥ नाद्वि
 म ॥ पुपुत्वाकमालादुलित्वाक
 ध्यायनद्वयक ॥ ध्यायनमागादु
 लावदत ॥ पुपुत्वाकावणकान ॥
 आवायनपुष्पाश्लियायक ॥
 धवधवमस्तन ॥ कपालमस्तय
 ॥ कमर्नर्गुगावादिनल्लुवि
 लषयादावध्यायनद्वयक ॥ ध
 तर्धकाव ॥ अनन्दकाव ॥ दवक्ष
 य ॥ ॥ ॥ धवतर्धकाव ॥ दवस
 कसमयद्युय ॥ तर्धला ॥ धीतय
 ता ॥ समयविय ॥ अथष्टकाय ॥
 कर्लकपूजा ॥ आवाय्याशका ॥
 कर्लकध्याय ॥ दक्षिणा ॥ नकाना ॥
 अम्ब ॥ अविणय ॥ आणीर्वादि ॥ स्त्र

नविय ॥ वलिवि सङ्गन ॥ वनस
 र्यांकवासूहा ॥ साक्षिथाय ॥
 कवा वलिसकर्णनदीसञ्चय ॥
 आवाय्यमान ॥ ॥ ॥ तिनववसाः
 दिसिद्धिविधि ॥ नवमादृकादि
 ध्यायनयाणीणीसूमातिजयजि
 तामिहमस्तदवसनदयका ॥
 जी ३ ॥ ॥ ॥ दवतापीतिन ॥ ॥ ॥

ध्यायनलीतातययावसय ॥ ॥ ॥
 रुजमतापूजाद्वनयाता ॥ ॥ ॥
 रु १ मतापूजाअखालयता ॥ ॥ ॥
 कृण ॥ हामल ॥ रु १ पूजा ॥ ॥ ॥
 व १ तहालद्य ॥ अर्धा १ मावय ॥ ॥ ॥
 व १ अर्धया ॥ ॥ १ माव ॥ ॥ ॥
 व १ कलगतहावद्य ॥ ॥ १ अर्धया ॥ ॥ ॥
 व १ कलगा ॥ मावय ॥ ॥ १ अर्धया ॥ ॥ ॥
 या १ क्रमकन ॥ ॥ १ सिद्धमूहा ॥ ॥ ॥
 य १ दवालाय ॥ या ४ धवि ॥ ॥ ॥
 काट ३ लं ॥ रु ३ दक्षि ॥ ॥ ॥
 रुजमकाय २० ॥ या ३ अर्धया ॥ ॥ ॥

श३कर्तुयटाका॥धूनधूयास॥
 श४पंचयटाका॥उतुलि॥
 षूतालमालका॥चकनमालका॥
 जायूजा॥पा१वलि॥द्वद्व१३॥
 नंडत१३॥मलानंडतयू॥
 व१चकजा॥यि३वदूमा३॥
 दामकला॥व१सवूनयवा॥
 न्यानधवाय॥न्यानधठिवाय॥
 वाहान॥समयविययता॥
 सवूनमालका॥वतामा३॥
 माहनीका३॥तालपति॥अयु॥
 नयु॥धज्जदिलितातयमालका॥
 धनंअखाललितययाविधान॥



नववसादिसिद्धियावसय॥
 श५मतायूजावाजकुलियाता॥
 श१मतायूजा॥समयआलन॥
 व१धवा॥श१यूजाअखालयाता॥
 धनंअधियासनकू॥
 सिद्धिकूयाता॥
 श५मतायूजावाजकुलियाता॥

श१यूजा॥कृण॥हामल॥
 दारुलखान१०८ कायति॥अ
 द्वाहिका॥ताय॥पतवास॥
 धून॥अजमका॥षूतालचक्र॥
 पंचामृत॥न्यानधवाय॥
 व१न्यानधठिवा॥सवून॥
 दामकला॥लंका३॥दक्षि३॥
 आदत॥धवि॥वत॥यिधव॥
 क॥गा३॥आदत॥अद्वान४॥
 श३कर्तुयटाका॥श४पंचयटाका॥
 यीजवदूमा३॥वतामा३॥
 सिधव॥सखान॥पाट१वलि॥
 मलानंडतय२॥व२मलजा॥
 द्वद्व२०॥नंडत२०॥स॥गान१०॥
 आवतिवलपति१०॥एकायका॥
 सकाट॥मताख॥तालवा॥
 धूयास॥धविवा३॥दुयुर्क१०॥
 खार्क१०॥दक्षिणा॥मया॥
 समयआलनकयमद्वि॥
 कर्वात॥धनंनधवयाता॥
 अखालयातायूजाआवणडथी॥

कवायातं संययायातं वलि। 
संययाय ॥ द्यादाल ॥ आचूल ॥
लासायआल नंडर्थ ॥ 
समयविययातं ॥ दासकला ॥
क्याला ॥ सवून ॥ खऊ ॥ यंला ॥
खूडाला ॥  ॥ ध्वनन
वत्रसादिमिद्वियावमय ॥ 


गंगाव ॥ डमील नवनीलनीवज
वयस्योदयसावादय ॥ खलख
अनलावन ॥ मूललित ॥ कद्वय
लीलालय ॥ रुय ॥ बाठगहायन
॥ अविप्रसन्नीगान्वर ॥ कुलीसा
काविष्णुवर्यमहाहवलय ॥ गृ
गवनामावम ॥  ॥ वीर ॥ लाला
वविन्दानृणदहकानि र्ववावः
लिखानृयरुषणाद्य ॥ राजन्यव
ग ॥ सूनवाजदेव ॥ पीमात्महासा
रुयत ॥ सवीर ॥  ॥ कवृण ॥ यं
वाधिकं विंतिवर्षसंख्याया क
यातवर्णनविचित्रक ॥ गूडा

नवार्थमदेवतश्च वम ॥ यमि
द ॥ कवृण ॥ कवीन्द्रे ॥  ॥ अरु
ग ॥ का ॥ ननुविनधीवलावन ॥
सुन्दरप्रयवमहिदेवत ॥ यं
वविंतिवर्षसंख्याया ॥ वे
यवर्णज ॥ हाहुतावम ॥ 
हासा ॥ सित ॥ यवाविस्वकुलारु
वायोवायल्ययकावदुतावजा
त ॥ विविहवासा ॥ यवलदिनका
हासा ॥ लिखन ॥ निवतावम ॥ सा
त ॥  ॥ रुयानक ॥ पा ॥ गदद्व
यरुवा ॥ अनारु ॥ गूडावयरीष
लवृषधवीरकालाधिदव ॥ कथि
त ॥ कवीन्द्रे ॥ रुयानका ॥ यील
वजमा ॥  ॥ वीरस्य ॥ रिनाऊ
नाशाविद्युलोविलक ॥ य ॥ अग
दवावयकद्वयसू ॥ वीरस्यना
मावृषलान्वार्थवसामहाकाल
हित ॥ यमिद्व ॥  ॥ वीर ॥ य ॥ अ
गदद्वयरुवातिकृष्णजात ॥ कुल
गूडरुवकवाल ॥ बोडाधिदेव ॥

[illegible]

ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 कां नमः ॥ मशः ॥ वलिः ॥ आवा
 रुनादि ॥ ॥ यानि मूढी ॥ जय
 ॥ श्रुति ॥ काशं विशालि ल्यादि ॥
 अथ अं उ ज दू ज न ॥ दक्ष लृंगाथे
 नमः ॥ सा वि की द वी नमः ॥ ध्यान
 ॥ वदु का टि महा तं जं वदु वी दू नि
 लावनी ॥ पूरु पा र म्भि ता द वी व
 वदा क म ला य व ॥ वमालं का व द
 वा न् सो रा य मि द्वि दाय का र तां
 काम सा त की द वी वृक्ष ग कि न मा
 मु त ॥ ॐ क्रिया ग कथ न मः ॥ ३ ॥
 धनं वलिः ॥ आवा रुनादि ॥ मूढा
 धव वी ॥ जय ॥ स्फा रु ॥ अं उ जं का
 मणी द वी सर्व रु ज म का वि णी ॥
 वा ग णा का नि सा या लि सर्व पा य
 य ना ग न ॥ अं उ ग न्धा दि ॥
 वाम अर्द्ध पा क दू ज ॥ वाम लृंगा
 ये नमः ॥ ताम सी द वी नमः ॥ ध्या
 न ॥ सूर्य का टि य ती का र्ण य ग रु
 स्फा रु ला व नी ॥ वि दू पा र म्भ ता दू

ॐ उ त्प ला व व दा रु या ॥ ना ना लं
 काल रु धा नी ॥ ॐ का म म्भ सि द्वि
 दा र मां वा ज सा त की द वी वि दू ग
 कि न मा मु त ॥ ॐ रु ना ग कथ न
 मः ॥ ३ ॥ धनं वलिः ॥ आवा रुनादि
 ॥ वदु मूढी ॥ जय ॥ श्रुति ॥ अथ तं
 वा ज सी द वी ॥ ॐ का म म्भ सि द्विः
 दा र सर्व गान्ति क र्वा नि र्थं सर्व सो
 रा य दाय कं ॥ अं उ ग न्धा दि ॥
 कं व दू ज न ॥ लृंगा य नमः ॥ वा ज
 सी द वी नमः ॥ ध्यान ॥ काला त्रिं व
 स म य दं रियं व दू रु जा द र्ग ॥
 का श वि शालि पू र्ण नि पा वि जा ता
 व वा रु या ॥ सर्व लृं स व सा रा द्या
 सर्व संप र्ति दाय कं ॥ या मा तां ता
 मणी द वी वृक्ष ग कि न मा मु त ॥
 ॐ ॐ रु ना ग कथ न मः ॥ ३ ॥ धनं व
 लिः ॥ आवा रुनादि ॥ महा की र्ण म्
 डी ॥ जय ॥ श्रुति ॥ वा दू जं ताम सी
 द वी सर्व संप र्ति दाय कं ॥ सर्व गान्ति
 क र्वा नि र्थं लक्ष्मी स य द दाय

कं॥ अंगुगभादि॥ ३१॥ पाठ॥ खुं
 ललाटयकलीपुत्रीकोमावीणा
 नन्ददवपादका॥ मूलमनु॥ आ
 वाहनादि॥ थानिमूर्धा॥ ३२॥ द
 टपूजा॥ यद्वासनायनम॥ खुं
 वावलीकृद्विकासिद्धिलक्ष्मीन
 म॥ ध्यान॥ विकसितकवयधर्म
 क्तितासिन्धुपाठुअनूपाविववा
 सिकायविशालिपूजु॥ यत्रममृ
 तमस्यंदिशमानन्दवृषि सव
 लवृषिवृन्दतावितादवदवी
 ॥ सूर्यकाटियतीकाणं वीर्यदुह
 सितानना॥ विकामणिकुसाध्याम
 ददोमाताकृअवरी॥ ३३॥ तिथ्याना॥
 क्रियाअलि॥ खुं आंकांरुं महासि
 द्विसमयखुं रुवरीधानादीवल
 यदस्त्राहा॥ ३४॥ रुकावसकाव न
 वादवी॥ वलि॥ आवाहनादि॥
 श्ववरीमूर्धा॥ जय॥ स्फा॥ यद्वा
 थतादिपूजायादि॥ अंगुगभादि
 ॥ ३५॥ दवपूजा॥ यश्चिम उरुव

मालका॥ थवथवमनुनआकृति
 ॥ आवाहनादि॥ थानिमूर्धा॥ धूप
 ॥ दीप॥ दण्डाआवाहिकपूजा॥
 नीवाअन॥ मूलमनु॥ समस्तव
 कवकलि॥ जय॥ स्फा॥ अंगुग
 भादि॥ दक्षिणा॥ कोमावी॥ ३६॥ आदि
 दिसर्वविष्टय॥ अलिखकादि॥
 स्नानविषय॥ विष्णुनविष्टमन॥
 जयनिका॥ वीरशाय॥ कलंक
 पूजा॥ वाहुवातय॥ वन्दनादि
 ॥ युवनमस्काव॥ न्यास॥ ३७॥ अमु
 यथादिकवाहनास॥ जलाद्य
 पाठरुतपुद्धि॥ आत्मपूजा॥ ३८॥
 आवाहन॥ विदव॥ गवासनाय
 नम॥ ध्यान॥ गवायविसमासी
 नं वकास्ववयविष्टुदां॥ वकाव
 कावसंयुक्तांरुजाहावविवाजिः
 तां॥ सवकांवाहणादीवृषीना
 न्नतययाधवां॥ कपालकर्तृकां
 हास्ती॥ यत्रमअतिवृषिणी॥ वा
 मदक्षिणया॥ गनतीध्यायमनु

[illegible][illegible]

यनमः पादुकां ॥ वं नारी पादुकां
 ॥ वं गुह्य पादुकां ॥ यं जानी पादु
 कां ॥ दुं पादुकां ॥ अं ॥
 सर्वाः पादुकां ॥ ॐ ति न वात्माः
 न्यासः ॥ ॐ गंगाये नमः ॥ ॐ
 यमुनाये नमः ॥ ॐ गंगा वर्ये न
 मः ॥ ॐ स वसुधे नमः ॥ ॐ नर्म
 दाये नमः ॥ ॐ गंगुके नमः ॥ ॐ
 को गि के नमः ॥ ॐ का वर्ये नमः ॥
 ॐ स क स मूढा नमः ॥ ॐ शं स
 मृत्वाये नमः ॥ ॐ व वृः
 ल मूर्त्ये नमः ॥ धृ प दी य ज य
 शुभ ॥ व वृणाये नमः ॥ या ता
 लं व ज ला धि र्यं ॥ डा ल म क स मा
 य कां व र्यं ति ज ल धा व कं ॥ अ
 गं धा दि ॥ ॐ ति र्गं ख दू जा ॥
 अ म म न न क ल ग स ल ॥ म उ न
 ॥ न वात्मा म न न (ग) ध न या य ॥ व
 रु व स म न न ल ॥ धृ प वा स यु उ
 ल कं रु य ॥ ॐ ॥ ती र्थ म (श्र) ॥ वं अ
 म्ना य रु ॥ ४ ॥ क व (ग) ध न ॥ वां

अं गुहाय नमः ॥ वी न र्क न्याय न
 मः ॥ वं म ध्या माय नमः ॥ वं अनाः
 मि काय नमः ॥ वी क नि षा य नमः
 ॥ वं अ म्ना य रु ॥ ॐ ॥ वां द द
 याय नमः ॥ वी नि व स स्वा रु ॥ वं
 नि स्वा ये वो ष रु ॥ वं क व वा य रु
 ॥ वी न न रु या य व रु ॥ वं अ म्ना
 य रु ॥ ॐ ति क वा न न्या सः ॥ मृ
 ल न्या सः ॥ रु त गु द्वि ॥ ॐ ॥ अ
 ध अ र्य ॥ नृ त्वं व मूल म नु न द
 रु ल अ रु त त य ॥ वा क स रु ॥
 द रु ल स्वा न व य का व ॥ क ल ग
 दा न कं रु या व का य रु वृ ल ॥ अ
 वा र्य र्यं गं ग व य म न ल्या दि ग
 ॐ ॥ न दी ती व र्म स रु ॥ पं व व
 त न ॥ स वि म ला न वृ य ॥ ॐ ॥
 व द न्ना दि या य ॥ नि व र्ण कि नू ध
 ल नृ त्वं व म वा रु य रु ॥ ॐ ॥
 क व व क्ता न न्या सः ॥ ज ल पा रु ॥
 गाय ती था रु ल ॥ अ र्य पा रु ॥ रु
 त गु द्वि ॥ आ स दू जा मूल न ॥ ॐ ॥

अथ २० ॥ ॐ ति जीव न्या म ॥  ॥
 धत ड य ल ॥ य ल य व स म स ड
 ति ॥  ॥ माल सा ताल द्य णि आ
 दिन पूजा ॥  ॥ मूल मनु ॥ निष्ठा
 ण ॥ वाक म हा वलि ॥ धृ प ॥ दी
 प ॥ जय ॥ स्तुति ॥ य गु त र्य ण ॥ थ
 ना माल सा ताल द्य णि आ दिन ॥
 वि स र्ज न या दा व ल व क्ता य ॥ द
 क्षि णा म रु ॥  ॥ य त्रि वा व पूजा
 क्ता य ॥ स म य क्ता य ॥ द क्षि णा ॥
 स्नान का का य ॥ व लि वि स र्ज न ॥
 द व स क दारु ल स्नान का य आ ॥
 वारु न म नु न पू र्व व त् ॥ दारु ल
 स्नान का या व क ल ग ण दू धा न ॥
 स्नान लं का स क ल स्त्री वि य ॥  ॥
 क ल ग पूजा ॥ न दि ॥ म हा काल
 ॥ ग ण ॥ व दू क ॥ मूल मनु ॥ ३ ॥
 य ठ म ॥ जय ॥ स्तुति ॥  ॥
 वि श्रा व क ॥ उ क्ता म म ल य ण
 या दा व ॥ स्व मि वा व न य ठ या
 व ॥ नृ त्य सा ला म रु य क ॥  ॥

दा व ल द ता य न ॥ लं ग या व ॥  ॥
 था य स था य ल य ॥ क ल ग नृ त्य य
 व पूजा ॥ पू र्व व त् क म न दूजा ॥
 ॥ य त्रि वा व ॥ द ग दि ग र्प दि य
 ल पूजा ॥  ॥ ता ठ न या व क ॥ आ
 ख न मा था न का य क ॥ स म य वि
 य व य न थि य ॥  ॥ उ का न अ म्भ
 ॥ स्नान का का य ॥ माल का स वि य ॥
 व लि वि स र्ज न ॥ या य ॥  ॥ सा क्षि
 था य ॥  ॥ ॐ ति द व का य नृ त्या
 व रु वि धि ४ स मा ष ॥  ॥


 १० न म ४ णि य व स दू थो ॥ व का
 मृ ता मृ नि धि म श्र ल स त्य वा ल दी
 य स्र व त्य व म न दू न का न ता क ४
 णि क ल वृ द्धा त ल य थि म व क्ता
 त्र ण हा न वा रु त ल स म लि धी ॥
 ठि का यी ॥ १ ॥ वि नु णि का ण व रि न
 दू क का ण वा क्ता दि का ण यू क य
 व व रु द्ध ण का ण यू क ॥ व रु द्ध
 वा ठ ग द लान ल वृ ल ला क रु पू

अरुमूर्खमहं प्रणमामि वरु ॥ २ ॥
 ॥ पाणाक्षिणामृतकपालसूतलः
 हस्ताहस्ताननीविविधरुषणनी
 लदहं निखासर्वनिखिलविघ्न
 विनाशहं प्रीमन्नालप्रमहं
 प्रणमामि नित्यं ॥ ३ ॥ धीयुषरागु
 मसिद्धकपालखण्डवृत्तिव
 गुणुजदगुमतिप्रवर्णुप्रीकृणु
 लक्षयविमणितगुमीठनील
 वद्वदकनाथमहीद्वहावी ॥ ४ ॥
 ॥ वञ्चकपालसूकपालविगुल
 दगुमयगुमयुमन्मणितयाणि
 दगुनीलाञ्जनययययञ्जमती
 यमन्त्रीक्ष्णनायकमहंसततं
 रुजामि ॥ ५ ॥ वृत्तातिवक्रयवि
 दावितद्वेयवक्रवृत्ताक्षिकाय
 पवित्रुम्बिकलाकुमावीरद्वर्गानि
 मर्म्ममनिवन्दितद्वर्म्मसिंह सिं
 हासनायविगतं सततं नमामि
 ॥ ६ ॥ यद्वद्वयारुयवरायतया
 लियद्वीयद्वामन्मन्ममलंकृत

पादयद्वीयद्वामन्मन्ममलंकृत
 खलपद्वनारुद्वयद्वमन्मवस
 तिसततं प्रयय ॥ ७ ॥ ७ यत्सूक्ष्म
 निधिसहस्रमवीविगोवगोवी
 धवीसकलवाद्ययसागवाणां
 कण्ठसदालकृमस्तुटिकाक्षः
 मालापीक्ष्णनयस्ककववारयण
 रुहस्ता ॥ ८ ॥ वञ्चकपद्वयवद्वर्म्म
 मद्वर्म्ममानं प्रवृत्तवायकस
 मञ्चकर्व्ववांयावत्यासूवक्त
 नककानिसमानकान्यास्वालिनि
 तं वतियति सततं प्रयामि ॥ ९ ॥
 धीयावर्णकुविवसक्तमहं रुव
 क्मत्यक्तसक्तमहात्सवद्वर्म्म
 सक्तं वद्वसूनद्वनवननवदि
 द्वकार्क्तिसक्तानसक्तिलतां सु
 विकालयक्तं ॥ १० ॥ रुक्माक्षितारुय
 ववायतया लियद्वीयद्वीयमान
 ववितं सनसन्निवर्णो ववाय
 वयवमद्ववतद्ववतायाध्वीर्ण
 खर्पंकजनिधिविद्वधमिमुद्धि

॥११॥ त्रिकामलिषययदक्षिणया
 अलीतिदानात्रसक्तमलकाम
 लवामयालीशवकासुदृक्कणनि
 धवाऽपकठालिमायाभुलाकुमा
 हनगताऽयत्रियूजयामि ॥१२॥
 वकात्यलासृतकपालधवाकवा
 र्थावंगीतमालदलकामलनील
 दहाऽवाद्यादिकानूत्रिवरुषण
 वकवन्नामादृष्टितीयवरुवस
 गतांरुजामि ॥१३॥ याणाक्षणाकि
 तयथायथवध्ववद्वमूडाविमूः
 दितकवंतवृणानृणारुंभीमरु
 तीयवरुवसगसर्वपूर्वसंका
 रुपूर्वदणदेवतमच्चयामि ॥
 १४॥ लोणाऽसपागष्टुणियूगारि
 वामाऽकामाशकषणमुखाऽस्व
 वगमश्चनित्याऽउकाऽकलानि
 धिकलाऽखलसर्ववांस्तुसंपूर्ण
 आठगदलदात्रियूजयामि ॥१५॥
 ॥जीदद्याविन्नामहिमश्रुतिदीप
 मानावकाऽसुगुफतवृणामधूना

दयार्जुणकीवननकुसमादिक
 यास्तुसर्वसंकारुकदलकय
 त्रियूजयामि ॥१६॥ लोणाऽसपा
 गधनूषऽखलसर्वपूर्वसंकारु
 नादिकवरुदणदेवताकाऽस
 त्संपदायविधिनायत्रियूजयामि
 मोरायदायकवरुदणकाणव
 क ॥१७॥ पुजाववारुयकवाऽख
 लसर्वपूर्वसिद्धियदादिदणका
 यतणकिणकीभसर्वार्थसाधकः
 वहिदणकाणवकसंपूजयामि
 कुलकोलिनित्यागिनीकाऽ॥१८॥
 कर्णवपुववृविनावृविवाक्षमा
 लाणीक्षानपृष्टकहतातिनिगर्
 दवीऽसर्वार्थवदणकवदणका
 णवकसर्वक्षिकायमुखिकादण
 पूजयामि ॥१९॥ वाधषूषक
 लसत्पुटिकाक्षमालवालधवा
 लवृविर्वगिनीधधानंऽसर्वदि
 वागदववकववृकाणवा
 दवतास्तुसर्ववदहस्यमीउ

॥२०॥ वक्रावधारयकवा४गिबः
 सादधना४ पाणाक्रीणसूधनूवा
 यूरुषलानि। श्रीमल्लिकाणव
 हिवायूरुधदवतासावक्रनुसक
 तमनकयुगाधतसु४॥२१॥ श्री
 मल्लिकाणवहिवायूरुधदवतासा
 दवीषरुहयूवती४यविष्णुजया
 मि४कृद्वृककुलकवाठपिमं
 गरुवावाहविषारुयववायत
 वालियद्मा४॥२२॥ श्रीमल्लिकाण
 यवमाहुतसर्वपूर्वसिद्धिषदः
 तियवमतिवहस्यद्वय४काम
 ध्वरीममददाहुसमस्तकामान्व
 ऊध्वरीरुगवतिरुगमालिनीव
 ॥२३॥ श्रीमल्लिकाणयवत४सुनि
 तलिनर्गवालातपावृणतनूत
 वृणदूमोलि४ श्रीयूरुषराजनव
 वांकृणपाणहर्माकामध्वरीरुग
 वतीयविष्णुजयामि॥२४॥ पाणा
 कृणामृतकपालकमाहुलूहवा
 यूरुसस्तकवामवृणांतिनर्ग

श्रीमल्लिकाणयवदेवतदक्षिण
 ह्वं वक्रध्वरीरुगवतीयविष्णुज
 यामि॥२५॥ वन्दाननीतिनयनां
 तवृणदूमर्मापाणांकृणद्वयु
 लयूरुककणसुहर्मा४ श्रीमल्लिका
 णयवदेवतवामराणयूरुजंरु
 ऊरुगवतीरुगमालिनीव॥२६॥
 ॥वक्रतियुक्तयवमाहुतसर्वपूर्
 वानन्दामिकतियवमनवमस
 व४रु४रु४यववायवतवातिव
 हस्यदवीसंवयवायवमयीय
 वमध्वरीतां॥२७॥ सिद्धवसुद
 वगवीवविवाजमानावाजीवदा
 तिमजवानववध्वजीवा४ श्रीमः
 महामूकटकाटिमहाद्यवतः
 सङ्कुणवायूरुयवमामृतवन्दलः
 र्वा॥२८॥ वल्लयजायदवृणाम्बु
 ऊवकुविम्बवृमालिकालकठि
 लालकपल्लवानां४आनन्दसानु
 कवृणामयसूपसन्नलीलाविला
 लललितात्यललावनाली॥२९॥

सुखलगाविजितवावृषिणाकप
लिवाणामनाद्यनिवर्तितवा
गलीलां॥तद्विषयकर्मपरिसृष्टि
ननासिकायां पद्मासनांतिनय
नांतवृणन्दुमर्का॥३०॥ॐब्रह्म
लासितमनाहवहासदन्तवा
गप्रियाजितनवादिनवन्दुवि
र्वा॥सौन्दर्यदेवतमहामृगना
रिविषयकर्ममीन्दुकमनीयल
लाठपट्टी॥३१॥लावण्यरागुण
रुगणुयगमरिवासा नीपम्यकाः
निविष्टकारि विवाजमानांणीक
गुलद्वयविमलितगणुणाः
वापुष्यखण्डितगुणानिधिमणु
लार्का॥३२॥कर्णवधूवयविष्ट
वितवावृणाग वलीवसादखः
यूवावृणितध्वनींयेवयूव
म्वितमलिश्रुतिदीयमान सुख
ययाद्विगुणाराजितकम्बुकणी
॥३३॥लाक्षावसस्त्रि तवालमृ
णालनाललीलालयामलसूका

मलवाकवलीं॥वकायलाकलद
लामलकामलारिवालथवालल
लितानुलिपालिलीलां॥३४॥तद्वि
षयकर्मपरियत्नविनिर्मितणीव
लाहुलीयकनकश्रुतिदीयमानां
कलापिकावरावयनगृहीतत
द्वत्याणांकाणमूधनवायूधरुष
णालीं॥३५॥तेलाकदन्तरुमहा
मलिनायकणी संसकमौकिकरु
लाकलहाववलीं॥लावण्यवाविष
विष्टुष्टुसवर्षुकमृणाविवावि
कवमणुलपुष्टुकमृ॥३६॥लाक
कथश्रुतिसदन्तरुसास्यसोम्यः
णाराविवावकवलितयणारि
मध्यां॥लावण्यनारिष्टरुनारिष्ट
रुषविष्टुणीमन्महाश्रुतिमयीन
वलामवाजीं॥३७॥वञ्चनवीवि
निवयाजितकाञ्चनाञ्चलाञ्चनी
वकासिन्विवकविष्टुष्टुवञ्चनी
णीकामकाननसमृद्धवामवञ्चनी
सुश्रुतिराविसूकमावतवावः

मृमां॥३८॥ वृत्तानुपूर्वविधिद्वय
 ठसन्निवर्णजं वायुगारिवमनी
 यविद्वृत्तयुक्तं वायुस्यतवपिव
 लाववनाविनागि सो नृश्यागाव
 वमनाहवपादयुमां॥३९॥ जी
 वकविष्णुगितमोलिलसद्विनाल
 मालिकुमानकसमावृणयन्नखा
 यां श्रीसाधकायकवृणामयसूय
 सन्नदृष्टादिकुववदानमनः
 वसन्त॥४०॥ जेलाकुमाहनमयी
 यवमध्वरीतां जेलाकुकावणमयी
 मयवमध्वरीतां जेलाकुविस्मय
 करीयवमध्वरीतां वकध्वरींशु
 रुकरीयवविपूजयामि॥४१॥ जेला
 कुमाहनमूखाष्टकवक्रमतत्सू
 नश्लिमायकठिकादिकसिद्धद
 वीक्षणीमलुवक्रमसमसमसमनु
 मूजायुष्टोऽपयुष्टयवमध्वरीतत्र
 यामि॥४२॥ यक्षादिरुतमपिय
 उदणीश्चयावद्विधातिथिकमम
 ग्रीखलकपिधया॥ कामध्वरीयष्ट

तियश्चदणादिनित्या मन्त्रेऽपवाय
 वमयीयविपूजयामि॥४३॥ त्वंगी
 यमप्रथमतस्मिपूवतिमातः य
 धाद्वितीयवसतीतिपूवध्वरीति
 तालयिकं त्रिपूवसूक्तविकतिरु
 र्यमातः पवातिपूववाससिकात्
 भव॥४४॥ त्वं यश्चमरुगवतीतिपू
 वायवाणीः यश्चयवातिपूवमालि
 तिकात्भव॥ त्वं यश्चमरुगवती
 त्रिपूवातिसिद्धात्तश्चमरुगव
 तीतिपूवामिकति॥४५॥ यूर्ध्वय
 वायवमथयवमतिपुष्पणीमन्म
 हातिपूवसूक्तविकत्वात्भव॥ श्रीम
 न्नवात्मकमहाशुतवकुवाञ्ज त्वं
 गीयश्चसूक्ततिरिः खलकैश्चदव
 ॥४६॥ आदीदगाष्टदगधाठगवा
 द्वापि यथाष्टदगदगामित
 तादगाष्टो यथाष्टदगदगामिति
 तयश्चष्टदं सकारुवागतमयीः
 त्वमसित्वमका॥४७॥ कामध्वरी
 तिरुगमालिनिकतिनित्यविधयः

ध्वनीतिवतथागिवदूतिकति॥
 ४८॥ मात४यवात्ववितिकाकल
 सन्द्वीतिनिव्यतिनीलयदपु
 र्वपताकिनीति॥ त्वंसर्वलोकवि
 जयाखिलमक्षलति॥ कालामयी
 तिनिगदन्तिविविधिकति॥ ४९॥
 ॥ मातसुवाक्कवमनक्कववृयि
 काया४संसाधुद्वमतथागल
 यन्तिनेव॥ ५०॥ वक्कविष्णुगिवका
 अरवीन्दुवन्दुयक्कन्दुदप्यकग
 लध्वववक्किमुख्यान॥ ५१॥ संपु
 अकपिसकलेद्ववलोयवावेय
 न्दिविस्त्रिययवमष्टिनमूद्वहर्न
 ॥ वीजान्मिकांमदनक्षमलिदीय
 दूयांजिक्कायत४सकृत्तिन४यवि
 विक्कयन्ति॥ ५२॥ आध्वववाविव
 हमध्वलसल्लिकालवामागिखा
 यजयवांयवमाक्कवारुं॥ ५३॥
 कियद्वमयिसृष्टिनिवासनाल
 णवक्कविष्णुगिववृयधवात्वम
 व॥ ५४॥ सृष्टिसिक्तियलयकोन

लकल्लुहर्तं वदानकवशमजम
 अयमयमयम॥ अन्धान्यरुदक
 लहाकलमानसासुजानन्तिकि
 जगधियसुववृयमम॥ ५५॥ सा
 र्वमवयवमध्वविगीयसवत्
 सातात्वमवयवमध्वविगीयस
 वत्॥ ५६॥ पूर्वत्वमवयवमध्वविगी
 यसवत्किंसूयसखलतदायव
 मध्ववित्वं॥ ५७॥ य४कामकल्यत
 नूमतमनयवृद्धि४मीमत्कमसुव
 नृयंय०तीहनिव्यम॥ मुक्ति४यव
 वसतिसिद्धिरिवहृरिर्वाकिन्
 स्यमातवलिमादिरिवल्यिकाः
 रि॥ ५८॥ त्वीष्टजयत्कमकूलांस
 कलार्थसिद्धिं सात्तंयतिश्चातिज
 नम्वयिजातरुकि४तस्मान्मयापि
 तवरुकिवाणनदविरुक्कार्थसि
 द्धिकववत्तमिदंअध्वयि॥ ५९॥
 ष्णुतिगीर्णकवावायवित्रवित४णी
 जियवसन्दृष्टा४कमसुव४समाय



ॐ नमः श्रीसिद्धिलक्ष्मीशाय नमः
 मुतमहामाथ दहातीत निवृत्त
 नः पश्यति वज्रगदापी वायलः
 श्रीनमामुत ॥ १ ॥ वर्षुदहो गो
 वी साधकं कृपवर्तिका यदद
 हामहासुल महासिद्धि समुक्ति
 ता ॥ २ ॥ तत्त्वदहासुता दवी सा
 धकानुयदासुता महककुलि
 नीरित्वा सरुप्रदल रुदिनी ॥ ३ ॥
 ॐ शायिलमध्यासु वायुसुताय
 गामिनी मृणाल तनुवृषिण्या सु
 धूमामध्यावाविणी ॥ ४ ॥ नादानकः
 नादयं सुना नादातीता निवृत्त
 नाः सुद्धसुलति संसुद्ध अवि
 द्याविद्यावियह ॥ ५ ॥ यवायवय
 यगा नं वक्रलीनयवगि वरज
 विद्यावृषयवित अविद्यार्थरुल
 यद ॥ ६ ॥ नकाकिनी विधमाता
 कनवीवनिवासिनी महसुल
 यदानित्या महामलायकाविणी
 ॥ ७ ॥ विदुमध्यासुता दवी कृटि

लार्द्धतिवद्विका दहादगासुलया
 दवी धागुणाधायवासिनी ॥ ८ ॥
 कार्यकावलयं रितावेत नाना
 डिमध्यागागकिमूल महावक्र
 नवधायं ववसुता ॥ ९ ॥ अगनी
 वयनादवीगनी वयागवृषिणी
 सुद्धदवसमाकावाडं कावयव
 वियह ॥ १० ॥ विद्युल्लता निशाली
 वीरावोरावविवर्जिता स्वाक्य
 द्यासुतानित्या यवणी गनकविय
 ह ॥ ११ ॥ सत्त्ववृषा वजावृषा तमा
 वृषा रुयासिका त्वमवदवीस
 चर्षी रुतानायागदायिनी ॥ १२ ॥
 ॥ त्वयेव सुद्धत विध्वलीलयाव
 रुद्धसुता मालिनी यवमादवी
 मगनयववन्दिनी ॥ १३ ॥ दहा
 लरुदिनी वक्रविवक्रवक्रसुद्ध
 वी विदुद्धावनिवाधन दिद्यः
 द्याकनमामुत ॥ १४ ॥ सूर्यकाटि
 यठीकाय वदुकायति निर्मल
 कन्दर्पकोटिलावय काटिव

काष्ठविद्युत् ॥ ७॥ निवाका
 (ग) निवाका (ग) निर्धय निव वि
 यद ॥ सकलाश्च महामाथ ववद
 लाकपूजितं ॥ १५॥ स्वकावरुका
 ववक्रिस्तु ॥ कावानवसुन्दरि
 सकावानववर्षेष्टयं वयिष्ठा
 लकगिव ॥ १६॥ सव्यवकुटिला
 कावनादगकि यवमतरविन्द
 वकस्मिता निर्याजालध्ववसु
 यिणी ॥ १७॥ दुर्गवैदुर्गपी० सु
 दूर्गपी० ववसुतं ॥ कामस्तुयक
 लातीतं कामाश्चवरु (ग) रुव ॥ १८॥
 ॥ वक्रयत्कि कलाठाय मध्याथात
 यवाहिणी ॥ गिव सर्वगतसुन्दर
 निर्यानन्दमहात्मव ॥ २०॥ मनुना
 यकि मनुकु विथकाणानवासि
 नि ॥ यष्टपी० कमध्यास्तु मवनाद
 यिकिसर्ववि ॥ २१॥ स्ववनीरुवनी
 वेवणाकेष्टययवाहिनी ॥ काला
 कात्रिसमस्तुतं कालकालानका
 लिनी ॥ २२॥ कालिकाकमसवधि

कालिदादगमपुल ॥ गेलाकद
 हनीदवी सावमूर्तिमुयादगी ॥
 २३॥ सुष्टिसिद्धि वसंहा वज्रमाश्वा
 श्वमहाकम ॥ सासाश्वापुष्टकाली
 वनिर्वाणेणीयवध्वनी ॥ २४॥ म
 कात्रिणीरुवनीवस्वर्षुकाटध्वनी
 गिवा ॥ वाजवाजध्वनीवपु ॥ अश्वा
 वणीनिगध्वनी ॥ २५॥ सुन्दरीति
 यूवायद्यातावापुष्टध्वनीजया
 कममपुलमध्यास्तु कमणी कृद्धि
 कामिका ॥ २६॥ अष्टवालविशद
 नकुडुश्वाद्यवपुकारवक्राणी
 वोडीकोमावीवेष्टुवीदीर्घनागि
 का ॥ २७॥ वजिणीवर्चिकालसद्वी
 ४पूजयद्विद्युमातव ४अमिताभ
 वनृष्टपु ४काधी (ग) मरुसंरुको
 ॥ २८॥ कपालीरीवलाश्वाध्वसंहा
 वप्राष्टमस्तथा ॥ रुकानासाधकाना
 ३लक्ष्मीसिद्धिपययुति ॥ २९॥ सि
 द्धिलक्ष्मीमहाविद्यारुववणानुकी
 र्तिता ॥ साधकदष्टकाना ३ सर्व

कर्मविरुद्धनी ॥३०॥ विषयीत
करीदवी प्रत्यक्षिवा नमा मुत
कालादिय सत सर्व यद्गुतादि
जाकिनी ॥३१॥ साधकं वक्तुं तद
विकालं कर्षणीं नमः शक्तिर्वय
यक्तुं तदवी वक्तुं लीलया जग
त ॥३२॥ वाञ्छलारुपदा नृवीं व
क्तुं रक्तवत्सलां प्रत्यक्षिवा न
मस्यामि अत्रिनिता र्थसिद्धय ॥३३॥
३॥ सर्वगुरुमर्दनं कौटिलिक
गनागिनीं प्रत्यक्षिवा नमस्यामि
अत्रिनिता र्थसिद्धय ॥३४॥ आय
दाभूषितवर्णि पर्वनिर्वाणदायि
नीं प्रत्यक्षिवा नमस्यामि सिद्धिल
क्ष्मी जयपदा ॥३५॥ वाञ्छदां धन
दां लक्ष्मी माददां दुःखनागिनीं
प्रत्यक्षिवा नमस्यामि सिद्धिलक्ष्मी
जयपदा ॥३६॥ दुष्टगुरुपणम
नीं महाबाधिविनागिनीं प्रत्यक्षि
वा नमस्यामि सिद्धिलक्ष्मी जयप
दा ॥३७॥ कलिदुःखप्रणमनीं म

हात्या त विनागिनीं प्रत्यक्षिवा न
मस्यामि सिद्धिलक्ष्मी जयपदा ॥३८॥
८॥ अत्रिनिता र्थसिद्धिदान्दवीं विनिः
तार्थरुलपदां प्रत्यक्षिवा नमस्या
मि सिद्धिलक्ष्मी जयपदा ॥३९॥ वा
आपसर्गणमनीं मत्पदवनासि
नीं प्रत्यक्षिवा नमस्यामि सिद्धिल
क्ष्मी जयपदा ॥४०॥ वाजमातां वा
जलक्ष्मीं वाजगुरुलदायिनीं प्र
त्यक्षिवा नमस्यामि वाजलक्ष्मी न
माम्बु ॥४१॥ सिद्धिलक्ष्मी महावि
द्या महासिद्धिपदायिका ॥ य ० द
या ० यदायि सगुं प्रत्यक्षिवां रिधं
॥४२॥ य ० नादुःखेन्यादि सुक
थरुं जयतु कलात अत्रिनिताः
नि सिद्धिनि य ० ना सिद्धिमाप्नुया
त ॥४३॥ महादाय प्रणमनीं महा
बाधिविनागिनीं सिंहशाययुग
रुथ वाजापदवनागिनीं ॥४४॥ य
दवीं वाजलागिनीं नागनीं दविना
किदं प्रजाकालं महासार्गं यय

दविमर्वायदाभ्याधितवलीविज
 गङ्गातिं त्वामिहामुनसर्वतु गङ्गा
 वृणमनीनुमः॥८॥आगङ्गागङ्गाव
 वदं हसदविपुनःपुनःवत्तव
 लजगत्मातःसर्वीरीष्टयदायिनी
 ॥९॥त्वमवयूष्मिणिगितवृषिवा
 नुवसाहुवाभूकर्वहिःसर्वगपू
 न्कालिकवसिकाश्री॥१०॥त
 त्वगपुनमानन्दमहाहंकावग
 वितान्मदमदमहादविस्वा
 दिखादिमदध्वनी॥११॥ॐकुयावि
 निगुलनरिन्दिरिन्दियनःपुनः
 विमलान्नामखरुनताउयकुद
 यद्विधा॥१२॥तावत्कुलिनीवृः
 यविश्वमत्कावरासुवयतस्वया
 वतसाधयममसर्वमनावधान॥
 १३॥त्वांदिक्कालिकदविमहाहं
 वववृषिणिममसुमनुमातामि
 सर्वःसुवववःसुता॥१४॥श्रुवला
 कयमामाउदविपुलतवसल
 महाकालिनमस्तु कालनागिः

नितनमः॥१५॥उच्चाटयापुमण
 पुन्यसीदयवमध्विःमदनाहु
 वतांयातियःसुवासुवकन्यकां॥
 १६॥मायमहालक्ष्मिवहुःकलाश्रु
 माहान्धकारंत्वावितानिवायःवि
 द्बहुकस्यापिददंयवमसकाग
 यान्किजगत्सुहाव॥१७॥आन
 नष्टरुलंयदांरुगवतींश्चात्वाय
 थष्टनयत्त्वांरुकिषणियातयू
 तमनसासिद्धावितामस्यथतःस
 र्वसंयदमावहृहृहृवहृःसंयू
 र्ध्वयुर्वादयात्तत्त्वांनोमिसदाः
 दिताविशुवलोपाश्रीसिनीयाश
 तां॥१८॥यःदंय०तंमार्गंजीज
 यदधनिर्मितंसर्वांसलरुतसि
 द्विरुगवत्याःपसादतः॥१९॥
 गृणात्यर्धुर्ध्वयावाणात्कंदात्कू
 श्राकुलात्कुलात्॥२०॥उद्गङ्गागङ्गमण
 लंविशुक्कननतसिद्धिः॥२१॥ॐति
 णजयदधनिर्मितःपीसिद्धिल
 क्षीमालामन्नाद्यावमन्तानुवृः

धिसुवःसमाकः॥७७७॥

ॐ नमः प्रणम्य कायालिनीं ॥ सहस्र
बाहुगान्धर्वीं चन्द्रिकायप्रिसंस्मितां
विषयभूतयुक्तां दणवाकर्म
हावलीं ॥ १ ॥ यवाननां महादर्वीं
महाकयूत्रमणितां दिशामृतपि
वर्नीतां सिद्धिपूर्वा प्रियं नमः ॥ २ ॥
॥ आदर्युवतावर्नीयवर्निर्वाण
दायिनीं विषययहर्नीतिर्यां सि
द्धिलक्ष्मीं नमाम्यहं ॥ ३ ॥ विषदास
विनिश्चर्नीताय यविनागिनीं
हंसिनीं यवमान्दर्वीं सिद्धिलक्ष्मीं
नमाम्यहं ॥ ४ ॥ जगत्सर्वकणपत्रां
रुवर्नीं रुवरासनां मातावीराव
लीलक्ष्मीं कालिका कमवन्धनीं ॥ ५ ॥
॥ गऊकालकया द्विकृतिरदन
यटाठापसंयद्वरुणैः श्रीकोविंश्च
तयनीं सकलविवेककाटवाः
लीनलीनं साध्यासर्वविधकृप
कृतमपि यः काव्यकालीकवाला

यायाद्यावत्समानाकलकमलवना
हासकीसिद्धिकाली ॥ ६ ॥ सग्रीहं
कावराजनिवासिगणिकलावक
लावकमूर्त्तिः काधद्वयुदन्दा
दिगिदिगिविविधाः संविधायापि
यस्याः सनासं रूविधलं विजगद
विपतिर्यस्य सादनवृद्धसासृणा
दूयणकं सिद्धगवत्रनृतावकुका
यालिनीवः ॥ ७ ॥ यादवीसिद्धिल
क्ष्मीं रुवगिर्वसिलयाज्ञानगकिः
यवगी ॥ ८ ॥ गकिः सुवृन्नानिल
यगतियुताकृणुलीमार्गसंसार
आद्यागकिः कदहापवमणिवय
तागकिः सलीनगक्रयस्याः कीडा
र्थभतत्सृजितलयमितायाविधल
सूवगी ॥ ९ ॥ यत्सुन्दरीवर्षुभकंपव
मपवगतंतत्सुवृन्नाकवसुं ह
तेऽयत्सुर्विनिर्गवदमृतमय
यागिनामद्यगम्यं सुलंतद्वगता
स्थानवद्यधिकमयं साधकेधिक्
नीयं पादुपीवककालीकृतिमत

मातर्न मासिक सलेकम लायती
 श्रीविष्णु दुक्तम लवाविनि विश्वमातः
 क्षीरोद जोकम लकोमल शुभगौरी
 लक्ष्मीः सीदस तर्तनम तांसरणे



पतशसन सोय मोरान फयउ मता तयदुस



दोड
 गल
 बलि
 अर्थपात्र
 जलपात्र



पञ्चमवलि शक्तिवीज अष्टकावलि

पञ्चमवलि शक्तिवीज अष्टकावलि

पञ्चमवलि शक्तिवीज अष्टकावलि

पञ्चमवलि शक्तिवीज अष्टकावलि

पञ्चमवलि शक्तिवीज अष्टकावलि

पञ्चमवलि शक्तिवीज अष्टकावलि

पञ्चमवलि शक्तिवीज अष्टकावलि

पञ्चमवलि शक्तिवीज अष्टकावलि

पञ्चमवलि शक्तिवीज अष्टकावलि

